

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ- विरासत, लोक संस्कृति और लोक साहित्य

- भारतीय संदर्भ में, जनजातियों की जनसंख्या लगभग 9% है, "अनुसूचित जनजाति" शब्द का औपचारिक परिचय "भारत सरकार अधिनियम, 1935" से हुआ, 'आदिवासी' शब्द का प्रयोग इस क्षेत्र के मूल निवासियों को दर्शाने के लिए किया जाता है, यह नाम सबसे पहले अमृतलाल विठ्ठलदास ठक्कर द्वारा दिया गया था, जिन्हें ठक्कर बापा के नाम से भी जाना जाता है।

अनुसूचित जनजाति की परिभाषा:

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 366 के अनुसार, ऐसी जनजातियाँ या जनजातीय समुदाय अथवा ऐसी जनजातियों या जनजातीय समुदायों के भाग या समूह जिन्हें अनुच्छेद 342 के अंतर्गत इस संविधान के प्रयोजनों के लिए अनुसूचित जनजातियाँ माना गया है।

जनजातीय जनसंख्या:

- भारत में 705 जनजातियाँ हैं, जिनमें 75 विशेष पिछड़ी जनजातियाँ शामिल हैं।
- 2011 की जनगणना के अनुसार, जनजातीय लिंगानुपात 990 है, जो 2001 के 978 से अधिक है।
- सर्वाधिक जनजातीय जनसंख्या वाले राज्य मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा और राजस्थान हैं।

भौगोलिक वितरण:

- दिल्ली, पंजाब, हरियाणा और चंडीगढ़ में अनुसूचित जनजातियाँ नहीं हैं।
- लक्षद्वीप और मिजोरम में जनजातियों का प्रतिशत सबसे अधिक है (क्रमशः 94.8% और 94.4%)।
- उत्तर प्रदेश में यह प्रतिशत सबसे कम (0.57%) है, तथा दमन द्वीप में यह 6.32% है।

प्रमुख जनजातियाँ:

- मध्य प्रदेश में 46 अनुसूचित जनजातियों में से भील सबसे अधिक जनसंख्या वाली जनजाति है, जो कुल अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का 37.7 प्रतिशत है।
- गोंड दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है, जिसकी जनसंख्या 35.6 प्रतिशत है। अवरोही क्रम में चार अन्य अनुसूचित जनजातियाँ हैं: कोल, कोरकू, सहरिया और बैगा।
- भील और गोंड के साथ, ये छह जनजातियाँ राज्य की कुल अनुसूचित जनजाति आबादी का 92.2 प्रतिशत हिस्सा हैं। परधान, सौर और भारिया भूमिया की आबादी 105, 692 से 152, 472 के बीच है; कुल मिलाकर ये 3.2 प्रतिशत हैं।
- 1, 000 से कम जनसंख्या वाली जनजातियों की संख्या 12 है। इनमें से पांच जनजातियाँ, अर्थात् मीना, आंध, बिरहुल, परजा और नागेशिया, प्रत्येक की जनसंख्या 500 से कम है।

आर्थिक सर्वेक्षण में उल्लिखित अनुसूचित जनजातियों के लिए हालिया नीतिगत पहल

- राज्य ने 15 नवंबर, 2022 को पंचायत (अनुसूचित क्षेत्र तक विस्तार) अधिनियम के कार्यान्वयन दिशानिर्देशों की घोषणा की। 2020 में, 15 नवंबर को भगवान बिरसा मुंडा के जन्म के सम्मान में 'जनजातीय गौरव दिवस' के रूप में घोषित किया गया।
- अनुसूचित जनजाति के नेताओं के योगदान को मान्यता देने के लिए, टंट्या मामा के बलिदान की याद में 4 दिसंबर को 'बलिदान दिवस' के रूप में भी घोषित किया गया है।

स्वास्थ्य:

आहार अनुदान योजना:

- विशेष पिछड़ी जनजाति समुदाय (PVTG) में कुपोषण को दूर करने के लक्ष्य के साथ 2017 से लागू की गई आहार अनुदान योजना की देखरेख वर्तमान में जनजातीय मामलों के विभाग द्वारा विशेष पिछड़ी जनजातियों वाले 15 जिलों में की जा रही है। इस योजना पर 285 करोड़ रुपये का खर्च आएगा।

क्षय रोग की रोकथाम और उपचार:

- क्षय रोग (TB) से निपटने के लिए, सीसीडी योजना के अंतर्गत शिवपुरी, अशोक नगर और गुना जिलों में परिचालन गतिविधियों के लिए 1636.00 लाख रुपये आवंटित किए गए हैं।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

• सिकल सेल विकार के लिए होम्योपैथी:

- 358.74 लाख रुपये की स्वीकृत कार्ययोजना सिकल सेल विकार से पीड़ित पीवीटीजी के लिए सहायक चिकित्सा के रूप में होम्योपैथी की प्रभावकारिता का मूल्यांकन करने पर केंद्रित है। आयुष विभाग वर्तमान में छिंदवाड़ा, डिंडोरी, मंडला और शहडोल जिलों में इस योजना के कार्यान्वयन की देखरेख करता है।

आजीविका:

भगवान बिरसा मुंडा स्वरोजगार योजना:

- राज्य आदिवासी वित्तीय एवं विकास निगम द्वारा संचालित।
- नए उद्यमों की स्थापना में सहायता करता है।
- वित्तीय सहायता की पात्रता 1 लाख से 50 लाख रुपये तक है।

टंट्या मामा आर्थिक कल्याण योजना:

- अनुसूचित जनजाति के बीपीएल श्रेणी के लाभार्थियों को कम लागत वाले उपकरण और कार्यशील पूंजी प्रदान करता है।
- 2021-22 में 270.00 करोड़ रुपये खर्च किए गए, जिससे 2, 30, 242 महिलाओं को लाभ हुआ।

सामुदायिक केंद्र विकास:

- विशेष पिछड़ी जनजातियों के लिए 24 सामुदायिक केन्द्रों के निर्माण हेतु संभाग स्तरीय कार्ययोजना।
- 10 विकासखण्डों में प्रति इकाई 50.00 लाख रुपये का ब्लॉक स्तरीय आवंटन।

आधार पंजीकरण और अद्यतन केंद्र:

- राज्य इलेक्ट्रॉनिक्स विकास निगम लिमिटेड और सीएससी के साथ सहयोग।
- 1, 010 स्वीकृत आधार केंद्रों में से 757 किट खरीदे गए, जिनमें से 344 केंद्र संचालित हैं।

बैगा महिलाओं के लिए आजीविका कार्यक्रम:

- मंडला जिले में कार्यक्रम के लिए 47.10 लाख रुपये स्वीकृत।
- 05 कम्प्यूटर प्रशिक्षण कौशल विकास केन्द्रों के लिए 246.00 लाख रुपये स्वीकृत।

FRA कार्रवाई कार्यान्वयन:

- छिंदवाड़ा, श्योपुर, शहडोल, डिंडोरी और मंडला जिलों में वन अधिकार अधिनियम के क्रियान्वयन के लिए 491.60 लाख रुपये जारी किए गए।

पीवीटीजी के लिए सांस्कृतिक गतिविधि केंद्र:

- बैगा, भारिया और सहरिया समुदायों के लिए भोपाल में सांस्कृतिक सह-प्रशिक्षण केन्द्रों का निर्माण।
- संयुक्त परियोजना लागत 1850.00 लाख रुपये।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

मध्य प्रदेश में जनजातीय जनसंख्या:

- विविध सांस्कृतिक परिदृश्य का प्रतिनिधित्व करने वाला मध्य प्रदेश **43 मान्यता प्राप्त अनुसूचित जनजातियों** का प्रतिनिधित्व करता है, जिनमें से **तीन को विशेष रूप से** कमजोर जनजातीय समूहों (पहले विशेष आदिम जनजातीय समूहों के रूप में जाना जाता था) के रूप में पहचाना जाता है। 2011 की जनगणना के अनुसार, **राज्य की जनसंख्या का 21.1% हिस्सा** अनुसूचित जनजातियों का है, जो **72.62 मिलियन में से 15.31 मिलियन** है।
- 2011 की जनगणना के अनुसार, अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या के मामले में मध्य प्रदेश शीर्ष स्थान पर है।
- इनमें भील जनजाति सबसे अधिक जनसंख्या वाली है, तथा गोंड जनजाति दूसरे स्थान पर है।
- अगली चार बड़ी जनजातियाँ, अर्थात् कोल, कोरकू, सहरिया और बैगा, सामूहिक रूप से राज्य की कुल अनुसूचित जनजाति आबादी का 92.2% हिस्सा हैं। परधान, सौर और भारिया भूमिया, जिनकी संयुक्त आबादी 105, 692 से 152, 472 के मध्य है, आदिवासी जनसांख्यिकी में 3.2% का योगदान देते हैं।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

- इसके अतिरिक्त, चार जनजातियाँ - मांझी, खैरवार, मवासी और पनिका - जिनकी जनसंख्या 47, 806 से 81, 335 के मध्य है, एसटी आबादी का 2.2% हिस्सा बनाती हैं।
- शेष 33 जनजातियाँ, सामान्य जनजातियों के साथ, कुल अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का शेष 2.5% हिस्सा हैं।
- तुलनात्मक रूप से, भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार राष्ट्रीय आदिवासी जनसंख्या 8.6% है, जिसमें मध्य प्रदेश के अनुसूचित जनजाति का 21.1% का प्रतिनिधित्व है, जो राज्य की कुल जनसंख्या के पांचवें हिस्से के बराबर है।
- लगभग 43 जनजातियों, जिनमें 24 प्रमुख जनजातियाँ और अनेक उप-जनजातियाँ शामिल हैं, के साथ मध्य प्रदेश को भारत में सर्वाधिक जनजातीय जनसंख्या (1.53 करोड़) और जनजातीय समुदायों की सर्वाधिक विविधता का गौरव प्राप्त है।

प्रशासनिक इतिहास:

- मध्य प्रदेश आदिवासी कल्याण विभाग की स्थापना 1964 में हुई थी, जिसे बाद में 1965 में नाम बदलकर आदिवासी और हरिजन कल्याण विभाग कर दिया गया।
- मप्र राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग की स्थापना 1996 में हुई थी।

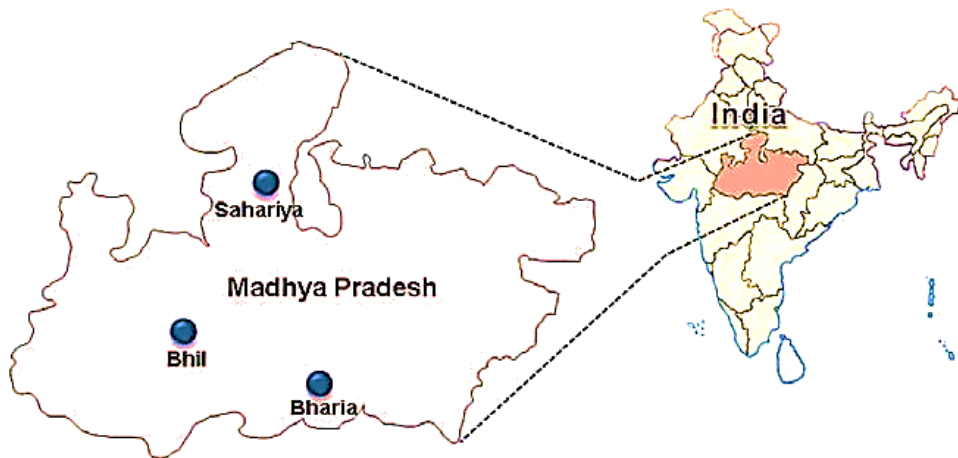
शैक्षिक और अनुसंधान संस्थान:

- इंदिरा गांधी जनजातीय विश्वविद्यालय **अमरकंटक** में स्थित है।
- जनजातीय अनुसंधान एवं संचार केंद्र **झाबुआ** में स्थित है।

विशिष्ट जनजातियाँ:

- गोदना बनाने वाले लोगों को 'गोधरिन' के नाम से जाना जाता है।
- **हलवा** जनजाति **बालाघाट** में पाई जाती है।
- राउत जनजाति गुना में रहती है।

मध्य प्रदेश में जनजातियों का भौगोलिक वितरण



जनजातीय क्षेत्र	जिला	जनजाति
उत्तर-पूर्वी क्षेत्र	शहडोल, सीधी, जबलपुर, रीवा, सतना	• कोल • माड़िया • अगरिया • पनिका • खैरवार

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

दक्षिणी क्षेत्र	मंडला, बालाघाट, सिवनी, छिंदवाड़ा, बैतूल, नर्मदापुरम	• गोंड (क्षेत्र की सबसे बड़ी जनजाति) • भरिया • बैगा • माड़िया • हलबा
पश्चिमी क्षेत्र	खंडवा, खरगोन, झाबुआ, रतलाम, धार, अलीराजपुर	• भील • भिलाला
केन्द्रीय मध्य प्रदेश	नर्मदापुरम, बैतूल, नरसिंहपुर, जबलपुर, हरदा, रायसेन	• भील • भिलाला
उत्तर और उत्तर-पश्चिम	ग्वालियर, भिंड, मुरैना, शिवपुरी, टीकमगढ़, छतरपुर, सागर	• सहरिया • सौर

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

जनजातियों से संबंधित संवैधानिक प्रावधान

अनुसूचित जनजाति

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 366 (25) में निर्धारित किया गया है कि अनुसूचित जनजातियों से तात्पर्य ऐसी जनजातियों या जनजातीय समुदायों से है जिन्हें संविधान के अनुच्छेद 342 के अंतर्गत अनुसूचित जनजाति माना गया है।

अनुसूचित जनजातियों के विकास हेतु संवैधानिक प्रावधान

शैक्षिक एवं सांस्कृतिक सुरक्षा

अनुच्छेद	प्रावधान
अनुच्छेद 15 (4)	अन्य पिछड़े वर्गों (जिसमें अनुसूचित जनजातियाँ भी शामिल हैं) की उन्नति के लिए विशेष प्रावधान;
अनुच्छेद 29	अल्पसंख्यकों (जिसमें अनुसूचित जनजातियाँ भी शामिल हैं) के हितों का संरक्षण;
अनुच्छेद 46	राज्य, विशेष देखभाल के साथ, लोगों के कमजोर वर्गों और विशेष रूप से अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के शैक्षिक और आर्थिक हितों को बढ़ावा देगा, और उन्हें सामाजिक अन्याय और सभी प्रकार के शोषण से बचाएगा।
अनुच्छेद 350	विशिष्ट भाषा, लिपि या संस्कृति के संरक्षण का अधिकार;
अनुच्छेद 350 A	प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएं

सामाजिक सुरक्षा

अनुच्छेद 23	मानव तस्करी और भिक्षावृत्ति तथा इसी प्रकार के अन्य बलात श्रम पर रोक;
अनुच्छेद 24	बाल श्रम पर प्रतिबंध

आर्थिक सुरक्षा

अनुच्छेद 244	- खंड (1) पांचवीं अनुसूची के प्रावधान - खंड (2) के तहत छठी अनुसूची के तहत आने वाले असम, मेघालय, मिजोरम और त्रिपुरा राज्यों के अलावा किसी भी राज्य में अनुसूचित क्षेत्रों और अनुसूचित जनजातियों के प्रशासन और नियंत्रण पर लागू होंगे।
अनुच्छेद 275	संविधान की पांचवीं और छठी अनुसूची के अंतर्गत शामिल निर्दिष्ट राज्यों (ST&SA) को अनुदान सहायता

राजनीतिक सुरक्षा

अनुच्छेद 164 (1)	बिहार, मध्य प्रदेश और उड़ीसा में जनजातीय मामलों के मंत्रियों का प्रावधान;
अनुच्छेद 330	लोकसभा में अनुसूचित जनजातियों के लिए सीटों का आरक्षण;
अनुच्छेद 332	राज्य विधानसभाओं में अनुसूचित जनजातियों के लिए सीटों का आरक्षण;
अनुच्छेद 371	पूर्वोत्तर राज्यों और सिक्किम के संबंध में विशेष प्रावधान

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

- संसद ने बंधुआ मजदूरी प्रणाली (उन्मूलन) अधिनियम, 1976 पारित किया।

शैक्षिक, आर्थिक और सार्वजनिक रोजगार संबंधी सुरक्षा:

अनुच्छेद 15	धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव का निषेध
अनुच्छेद 335	- सेवाओं और पदों पर अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के दावे - अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के सदस्यों के दावों को प्रशासन की दक्षता बनाए रखने के साथ-साथ, राज्य के कार्यों से संबंधित सेवाओं और पदों पर नियुक्तियां करते समय ध्यान में रखा जाएगा।

राजनीतिक सुरक्षा

अनुच्छेद 332	राज्यों की विधानसभाओं में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए सीटों का आरक्षण
अनुच्छेद 334	आरक्षण के लिए 10 वर्ष की अवधि (अवधि बढ़ाने के लिए कई बार संशोधन किया गया)
अनुच्छेद 243 D	पंचायतों में सीटों का आरक्षण
अनुच्छेद 243 T सीटों का आरक्षण	प्रत्येक नगरपालिका में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए स्थान आरक्षित किए जाएंगे और इस प्रकार आरक्षित स्थानों की संख्या, उस नगरपालिका में प्रत्यक्ष निर्वाचन द्वारा भरे जाने वाले स्थानों की कुल संख्या से यथाशक्य वही अनुपात होगी जो उस नगरपालिका क्षेत्र में अनुसूचित जातियों की या उस नगरपालिका क्षेत्र में अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या का उस क्षेत्र की कुल जनसंख्या से है और ऐसे स्थान किसी नगरपालिका में भिन्न-भिन्न निर्वाचन-क्षेत्रों को चक्रानुक्रम से आबंटित किए जा सकेंगे।
अनुच्छेद 338A	अनुसूचित जनजातियों के लिए एक आयोग होगा जिसे राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के नाम से जाना जाएगा।

- म.प्र. राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग अधिनियम, 1995

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

मध्य प्रदेश की प्रमुख जनजातियाँ

मध्य प्रदेश की अनुसूचित जनजातियाँ:

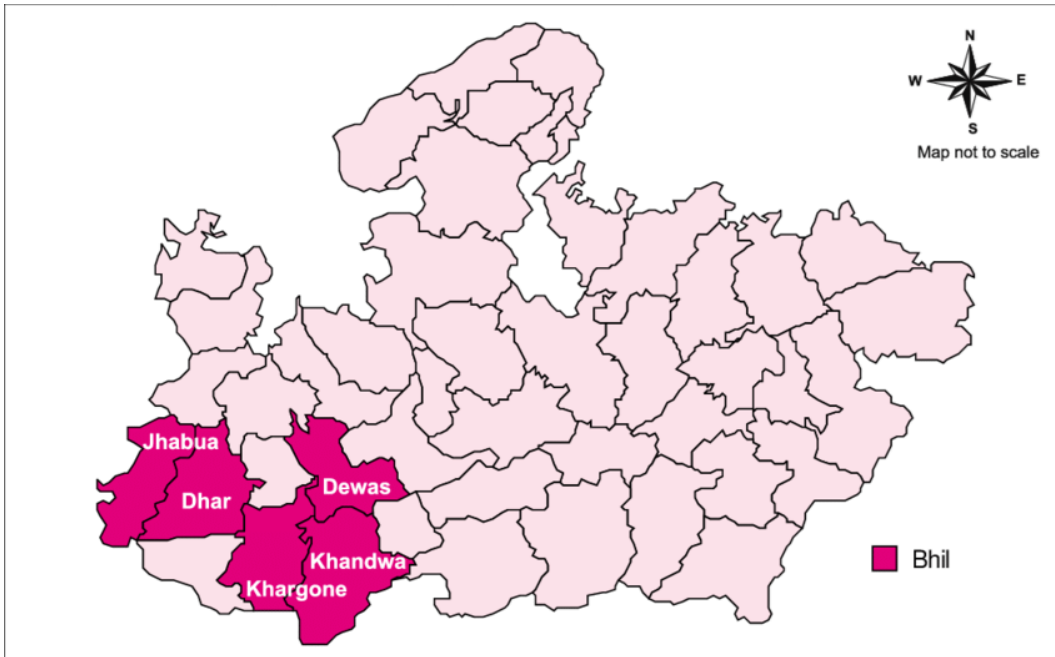
अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति आदेश (संशोधन) अधिनियम, 1976 के अनुसार, मध्य प्रदेश में विभिन्न जनजातीय समुदायों की सूची निम्नलिखित है:

- अगरिया
- आन्ध
- बैगा
- भैना
- भारिया (भुईहर भूमिआ, भुमिया, भारिआ, पालिहा, पांडो)
- भत्तरा
- भील (भिलाला, बरेला, पटेलिया)
- भील मीना
- भुंजिया
- बिआर, बियार
- बिंझवार
- बिरहुल, बिरबोर
- डामोर, डामरिया
- धनवार
- गदाबा, गदबा
- गोंड (अरख, अररख, अगरिया, असुर, बड़ी मारिया, बड़ा मारिया, भटोला, भिम्मा, भुता, कोइलाभुता, कोइलाभुती, भार, बाइसनहॉर्न मारिया, छोटा मारिया, दंडामी मारिया, धुरू, धुरवा, धोबा, धूलिया, दोरला, गायकी, गत्ता, मत्ती, गायता, गोंड गोवारी, हिल मारिया, कंडरा, कलंगा, खटोला, कोइतर, कोया, खिरवार, खिरवारा, कुचा मारिया, कुचकी मारिया, माडिया, मारिया, माना, मन्नेवार, मोघ्या, मोगिया, मोंघीया, मुडिया, मुरिया, नागरची, नागवंशी, ओझा, राज गोंड, सोनझारी झरेका, थटिया, थोट्या, वडे मारिया, वडेमाडिया, दरोई)
- हल्बा, हल्बी
- कमार
- कारकू
- कवर, कंवर, कौर, चेरवा, राठिया, तंवर, चत्री
- खैरवार, कोंदर
- खारिया
- कोंध, खोंड, कंध
- कोल
- कोलम
- कोरकू, बोपची, मोआसी, निहाल, नाहुल, बौंधी, बोंडेया

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

- कोरवा, कोडाकू
- माझी
- मझवार
- मवासी
- मुंडा
- नागसिया, नागासिया
- उराँव, धनका, धनगड़
- पनिका (छतरपुर, दतिया, पन्ना, रीवा, सतना, शहडोल, सीधी और टीकमगढ़ जिलों में)
- पाव
- परधान, पठारी सरोती
- पारधी (बहेलिया, चिता पारधी, लंगोटी पारधी, फांस पारधी, शिकारी, टाकनकर, टाकिया- छिंदवाड़ा, मंडला, रायगढ़, सिवनी, बालाघाट जिले की बैहर तहसील, बैतूल जिले की बैतूल और भैंसदेही तहसील, मुड़वाड़ा, पाटन और सिहोरा में) जबलपुर जिले की तहसीलें, नर्मदापुरम, और सोहागपुर, नर्मदापुरम जिले की तहसीलें, और नरसिंहपुर जिले और हरसूद खंडवा जिले की तहसील)
- परजा
- सहरिया, सहारिआ, सेहारिआ, सेहरिआ, सोसिया, सोर
- सौर
- संओता, सौता
- सवर, सवरा
- सौर

मध्य प्रदेश के पश्चिमी जनजातीय क्षेत्र में भील जनजाति:



मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

परिचय:

- भील जनजाति मध्य प्रदेश और भारत की जनजातियों में सबसे बड़ी जनजाति है।
- "भील" नाम कन्नड़ शब्द 'बील' से लिया गया है, जिसका अर्थ है धनुष। कुछ विद्वान इसका संबंध संस्कृत शब्द 'बिल' से बताते हैं, जिसका अर्थ है छेदना।
- भीलों को प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉयड प्रजाति के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।
- एक पौराणिक कथा के अनुसार, शिव का विवाह एक भील लड़की से हुआ, जिसके कारण भील लोग खुद को शिव के वंशज मानने लगे। एकलव्य को भीलों का पूर्वज माना जाता है।

भौगोलिक स्थिति:

- भीलों का मूल निवास स्थान ढोलका माना जाता है।
- भील मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र में विस्तृत हैं।
- मध्य प्रदेश में, भील मुख्य रूप से झाबुआ, अलीराजपुर, धार, बड़वानी जैसे पश्चिमी जिलों और गुना और अशोक नगर में भी निवास करते हैं।

उप-जनजाति:

- भील समुदाय में बरेला, भिलाला, गरासिया, गमेता, मीना, तड़वी और वासवे सहित विभिन्न उपजातियां शामिल हैं।
- कुछ अन्य उपजातियां - मीना, ढोली भील, डूंगरी भील, डूंगरी गरासिया, मेवासी भील, रावल भील, तड़वी भील और भागलिया हैं।
- भिलाला विशेष रूप से स्वयं को महाराणा प्रताप का वंशज बताते हैं।
- इन उप-जातियों के भीतर, धनुका और नायकदा जैसे और भी विभाजन हैं, जो सामाजिक संरचना में जटिलता जोड़ते हैं।
- उमडी उपजाति गुना, शाजापुर और आस-पास के जिलों जैसे क्षेत्रों में केंद्रित है, जो क्षेत्रीय बारीकियों को प्रदर्शित करती है।
- जिन भीलों ने इस्लाम अपनाया, उन्हें धार्मिक अनुकूलनशीलता का प्रदर्शन करते हुए 'तड़वी' भील के नाम से जाना जाता है।
- इसी तरह, ईसाई धर्म अपनाने वालों को 'निधि' के रूप में पहचाना जाता है, जो समुदाय की विविध धार्मिक संबद्धता को दर्शाता है।

मकान या निवास:

- भीलों के निवास को 'फल्या' कहा जाता है, और उनके घरों को 'कू' कहा जाता है।
- बड़े भील गांवों को पाल कहा जाता है, जबकि छोटे गांवों को फलक कहा जाता है।
- बांस के शेड का उपयोग आमतौर पर अनाज भंडारण के लिए किया जाता है। लकड़ी का एक बर्तन, जिसे 'मुहालदा' के नाम से जाना जाता है, पानी के बर्तन रखने के काम आता है।

अस्त्र-शस्त्र:

- धनुष और बाण भीलों के विशिष्ट हथियार हैं।
- बांस का उपयोग तंबू बनाने के लिए किया जाता है, जिसे 'पिंचा' के रूप में जाना जाता है, और तीर को 'बिलखी' कहा जाता है।
- इन्हें धनुष्कोधनेली या कामथी के नाम से भी जाना जाता है।

बोली (भाषा):

- भीली भाषा भील समुदाय द्वारा बोली जाती है।
- "भीली" शब्द 1835 में फादर थॉमसन द्वारा दिया गया था।

संस्कार:

- बच्चे के जन्म के बाद, माताएँ हल्दी स्नान करती हैं, जिसे 'सांता' कहा जाता है।
- इस दिन माताएं अपने पुत्रों के लिए पूजन अनुष्ठान करती हैं।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

- पूजा के बाद, नवजात शिशु को दहलीज पर मकई के ढेर पर रखा जाता है, जिसे 'पहाड़धरना' या 'डोंगर ढलवाई' के नाम से जाना जाता है।

भील जनजाति में पारंपरिक विवाह संस्कार:

मंगनी विवाह	• मंगनी विवाह प्रक्रिया में दूल्हा और दुल्हन के बीच बातचीत होती है, जिसे भंजगड़िया नामक मध्यस्थ द्वारा सुगम बनाया जाता है। • इन चर्चाओं के दौरान दापा या दुल्हन की कीमत तय की जाती है। • कुछ दिनों के बाद, दापा में तय अनाज पेश किया जाता है, जिसे सावा या सौंग भरना कहा जाता है। • अक्टूबर 2016 में शुरू किए गए साथीदार अभियान का उद्देश्य दापा की प्रथा को बंद करना है।
भगोरिया विवाह	• भगोरिया विवाह में लड़का और लड़की भगोरिया हाट (बाजार) में आपसी रूचि व्यक्त करते हैं। • वे भाग जाते हैं और अपने परिवार के सदस्यों की सहमति प्राप्त करने के बाद ही वापस लौटते हैं।
लुगड़ा लाडी विवाह	• लुगड़ा लाडी विवाह में लड़का और उसका परिवार लड़की और उसके परिवार के लिए कपड़े लाते हैं। • फिर लड़की को लड़के के घर लाया जाता है, जो विवाह का प्रतीक है।
ऐभरायण (घर घुस्सी विवाह)	• ऐभरायण में लड़की लड़के से शादी करने के लिए उसके घर में जबरदस्ती प्रवेश करती है, जो भील समुदाय के भीतर एक अनोखी प्रथा को दर्शाती है।
धरना विवाह	• धरना विवाह एक प्रथा है जिसमें भील पुरुष एक से अधिक पत्नियाँ रख सकते हैं। • इस प्रकार के विवाह में एक पुरुष कई स्त्रियों से विवाह करता है, जिसे धरना विवाह के नाम से जाना जाता है।
नातरा विवाह (विधवा विवाह)	• भील जनजाति में विधवा पुनर्विवाह को नातरा विवाह कहा जाता है। • इस प्रथा में विधवा का विवाह उसके देवर से कराया जाता है, जो समुदाय में पुनर्विवाह के एक विशिष्ट रूप को दर्शाता है।

भील संस्कृति में लोक देवता:

बाबादेव (इंद्रदेव)	• बाबादेव, जिन्हें इंद्रदेव के नाम से भी जाना जाता है, भीलों के बाबादेव, जिन्हें इंद्रदेव के नाम से भी जाना जाता है, भीलों के बीच मुख्य देवता के रूप में एक केंद्रीय स्थान रखते हैं। • माना जाता है कि बाबादेव की पूजा करने से अच्छी बारिश होती है, जो कृषि पद्धतियों में उनके महत्व को रेखांकित करता है। • भील समुदाय बाबादेव से आशीर्वाद की उम्मीद करता है ताकि एक समृद्ध और फलदायी फसल सुनिश्चित हो सके।
कुहाजदेव	• कुहाजदेव एक देवता हैं जिनकी दिवाली की पूर्व संध्या पर पूजा की जाती है। • इनका महत्व पशुओं को बीमारियों से बचाने में उनकी भूमिका में निहित है, जो भील संस्कृति में पशु कल्याण के महत्व पर जोर देता है। • कुहाजदेव की पूजा सभी जीवित प्राणियों की भलाई के लिए समुदाय के सम्मान का प्रतीक है।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

शीतला माता	- शीतला माता और राकाली माता शारीरिक बीमारियों से रक्षा करती हैं। - ये देवता समुदाय की भलाई पर जोर देते हुए बीमारियों के खिलाफ अपनी सुरक्षात्मक भूमिका के लिए पूजनीय हैं। - शीतला माता की पूजा स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों से दैवीय सुरक्षा में भीलों की आस्था को दर्शाती है, जो समुदाय के भीतर समग्र कल्याण की भावना को बढ़ावा देती है।
गलदेव (भीलगलदेव कोनारसिंह)	- गलदेव को एक दिव्य सत्ता के रूप में पूजा जाता है, और लोग विभिन्न प्रयासों के लिए उनका आशीर्वाद मांगते हैं। - घरों में उनकी मूर्ति स्थापित करना भीलों के बीच एक आम प्रथा है, जो उनके दैनिक जीवन में दिव्यता के साथ संबंध को दर्शाता है। - गलदेव की पूजा जीवन के विभिन्न पहलुओं के लिए मार्गदर्शन और सहायता की मांग का प्रतिनिधित्व करती है।
सावन माता और मालिया बाबादेव	- सावन माता और मालिया बाबादेव को कृषि और पशुओं के संरक्षक के रूप में पूजा जाता है। - खेतों में स्थापित इन देवताओं के बारे में माना जाता है कि वे फसलों और पशुओं की समृद्धि और सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं। - भील समुदाय फसल और अपने पशुओं की भलाई के लिए सावन माता और मालिया बाबादेव के आशीर्वाद पर निर्भर करता है।
भैरव देव	- भील समुदाय में भैरव देव शक्ति और सामर्थ्य के प्रतीक हैं। - युद्ध पर जाने से पहले पारंपरिक रूप से पूजे जाने वाले इस देवता का संबंध वीरता और साहस से है। - भैरव देव की पूजा चुनौतियों और प्रतिकूलताओं का सामना करने में सामर्थ्य की आवश्यकता के प्रति समुदाय की स्वीकृति को दर्शाती है।
जसमादेवी	- जसमादेवी धन की देवी लक्ष्मी का प्रतीक हैं। - दिवाली पर पूजे जाने वाले इस उत्सव में समुदाय के भीतर समृद्धि और प्रचुरता पर जोर दिया जाता है। - भील लोग जसमादेवी के प्रति आभार व्यक्त करते हैं और अपने जीवन में वित्तीय खुशहाली और समृद्धि के लिए उनसे आशीर्वाद मांगते हैं।
होवनमाता	- होवनमाता दैनिक और प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा प्रदान करती है। - गांव की सीमा पर होवनमाता की वार्षिक पूजा प्रतिकूल परिस्थितियों के खिलाफ सांप्रदायिक एकता का प्रतीक है। - भील समुदाय होवनमाता का आशीर्वाद लेने के लिए एक साथ आता है, जिससे सामूहिक शक्ति और लचीलेपन की भावना को बढ़ावा मिलता है।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

भील संस्कृति में लोक त्यौहार:

भगोरिया महोत्सव	भगोरिया: - भगोरिया होली के दौरान मनाया जाने वाला 7 दिवसीय त्योहार है, और इसमें तीन मुख्य भाग होते हैं: गुलालिया: - यह भाग पहले दो दिनों में आयोजित किया जाता है, जहां युवा लड़के चुनी हुई लड़की को गुलाल (रंगीन पाउडर) लगाकर शादी करने की इच्छा व्यक्त करते हैं। - यदि स्वीकार किया जाता है, तो लड़की गुलाल के साथ जवाब देती है, जो वैवाहिक प्रक्रिया की शुरुआत का प्रतीक है। गोल गधेड़ो - गुलालिया के बाद तीन दिन तक मनाए जाने वाले इस उत्सव में युवा पुरुषों द्वारा चुनी गई लड़की का चंचल तरीके से पीछा किया जाता है। - गोल गधेड़ो के दौरान होने वाले उत्सव में युवाओं के बीच हर्षोल्लासपूर्ण गतिविधियाँ और बातचीत शामिल होती है। उजड़िया: - उजड़िया त्योहार के समापन का प्रतीक है। इस चरण के दौरान, लोग एक मेले में भाग लेते हैं जहाँ आवश्यक वस्तुओं की खरीद-फरोख्त होती है।
गल महोत्सव	- होली के दूसरे दिन मनाया जाने वाला गल भील जनजाति का सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार है। - यह भगवान नरसिंह का प्रतीक है, जिन्हें भील पितृ देवता के रूप में भी जाना जाता है, और यह समुदाय के लिए आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व का समय है।
ढोडी महोत्सव	- ढोडी एक त्यौहार है जो बारिश से जुड़े देवता इंद्र को प्रसन्न करने और वर्षा का आह्वान करने के लिए समर्पित है। - यह उत्सव तब मनाया जाता है जब शुरुआती महीने में पहली बारिश होती है, जो कृषि समृद्धि के महत्व को दर्शाता है।
जातर महोत्सव	- वर्ष में दो बार मनाया जाने वाला जातर, बुवाई के मौसम के दौरान और जब मक्का दाना बनने की अवस्था में पहुँचता है, कोनंदर जाटा और नवाई जाटा में विभाजित किया जाता है। - यह फसल की खेती के महत्वपूर्ण चरणों पर जोर देते हुए कृषि महत्व रखता है।
दोहा महोत्सव	- दोहा मनौती से जुड़ा एक त्यौहार है, जो खेड़ादेवी की पूजा पर केंद्रित है। - दिवाली के दौरान मनाया जाने वाला यह त्यौहार ऐसा समय होता है जब विशेष रूप से मवेशियों की भलाई से जुड़ी इच्छाएँ पूरी होती हैं। - यह त्यौहार समुदाय की आस्था और उनकी कृषि पद्धतियों के बीच संबंध पर प्रकाश डालता है।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

आर्थिक प्रथाएं:

कृषि	कृषि के दौरान, भील परिवार हलमा प्रथा में संलग्न होते हैं, जहां वे एक-दूसरे से कृषि उपकरण उधार लेते हैं और मजदूरी करके बदले में काम करते हैं।
झूम कृषि	भील जनजाति मैदानी इलाकों में दजिया खेती करती है और पहाड़ी क्षेत्रों में कृषि पद्धति के लिए चिमाता, जिसे झूमिंग भी कहा जाता है, अपनाती है।
पशुपालन	भील जनजाति कड़कनाथ मुर्गे का पालन करती है।
हलमा प्रथा	- हलमा, मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले की एक प्राचीन कृषि परंपरा है, जिसमें एक गांव के परिवार एक निश्चित दिन पर एक व्यक्ति की जमीन पर मिलकर काम करने के लिए अपने कृषि उपकरण एकत्र करते हैं। - यह सहयोगात्मक प्रयास परिवारों के मध्य होता है, जिससे समय के साथ प्रत्येक घर के लिए साझा समर्थन सुनिश्चित होता है।

लोक नृत्य:

भगोरिया नृत्य	फाल्गुन के महीने में भगोरिया हाट में किया जाने वाला यह नृत्य भगोरिया त्यौहार से जटिल रूप से संबंधित है और संभवतः इस अवधि के दौरान समुदाय की सांस्कृतिक पहचान की जीवंत और उत्सवपूर्ण अभिव्यक्ति है।
दुधिया नृत्य	- भगोरिया हाटों के दौरान किया जाने वाला नृत्य। - दुधिया नृत्य की अपनी अनूठी शैली और महत्व है, जो भगोरिया हाटों के जीवंत माहौल में योगदान देता है।
गहर नृत्य	- होली के त्यौहार के दौरान होता है। - गहर नृत्य संभवतः होली के हर्षोल्लास और रंगीन उत्सवों से जुड़ा है, जो इस उत्सव के अवसर पर समुदाय के उत्साह को दर्शाता है।
वीरवाल्या नृत्य	- बड़वा द्वारा श्रावण और नवरात्रि के दौरान किया जाने वाला एक धार्मिक नृत्य। - वीरवाल्या नृत्य संभवतः धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व रखता है, जो श्रावण और नवरात्रि जैसे शुभ समय के दौरान किया जाता है, जो नृत्य और धार्मिक अनुष्ठानों के बीच संबंध को प्रदर्शित करता है।
लत मार साला नृत्य	- विवाह के दौरान प्रदर्शन किया जाता है, जहां दूल्हे की ओर से समूह बारातियों को लात मारते हैं। - लत मार साला नृत्य एक पारंपरिक विवाह नृत्य है, जो विवाह समारोहों में एक चंचल और मनोरंजक घटक जोड़ता है, विशेष रूप से दूल्हे पक्ष को शामिल करते हुए।
फेफरिया नृत्य	- भील शहनाई को फेफरिया कहा जाता है, जो विवाह समारोह के दौरान बजाई जाती है। - फेफरिया नृत्य में पारंपरिक भील शहनाई शामिल होती है, जो विवाह उत्सव की संगीतमय और सांस्कृतिक समृद्धि में योगदान देती है। - इन खुशी के अवसरों पर फेफरिया में बजाए जाने वाले संगीत के साथ नृत्य भी किया जा सकता है।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

प्रमुख भीली व्यक्तित्व:

पेमा फत्या	- झाबुआ के चंद्रशेखर आज़ाद नगर में जन्मे और भील जनजाति से संबंधित। - भील जनजाति की एक प्रसिद्ध चित्रकला शैली "पिथौरा कला" में अपनी विशेषज्ञता के लिए जाने जाने वाले एक प्रमुख कलाकार। - मध्य प्रदेश के सांस्कृतिक विभाग द्वारा 1986 में शिखर सम्मान और आदिवासी कला के लिए तुलसी सम्मान से सम्मानित। 5 अप्रैल, 2020 को निधन हो गया।
भूरी बाई	- झाबुआ के पिटोल गांव में जन्मी और भील जनजाति की सदस्य हैं। - अपने उत्कृष्ट कार्य, विशेष रूप से भील जनजाति की लोक कला पिथौरा पेंटिंग के लिए व्यापक मान्यता प्राप्त की। - प्राप्त सम्मानों में मध्य प्रदेश का शिखर सम्मान (1986), भारत सरकार से पद्म श्री (2021), 2009 में रानी दुर्गावती पुरस्कार और 1998 में अहिल्या पुरस्कार शामिल हैं। - कागज पर पेंटिंग करने वाली अपने समुदाय की पहली कलाकार बनीं।
टंट्या भील	- महत्वपूर्ण आदिवासी व्यक्ति जिसे "भारत का रॉबिन हुड" कहा जाता है। 1889 में न्यूयॉर्क टाइम्स द्वारा इसका उल्लेख किया गया था। 1857 की क्रांति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और पातालपानी रेलवे स्टेशन सहित कई स्थानों का नाम उनके सम्मान में रखा गया।
बालेश्वर दयाल (मामा)	भील समुदाय के उत्थान के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किये।
भीमा नायक	1840 में जन्मे "निमाड़ के रॉबिनहुड" के रूप में जाने जाते हैं। - बड़वानी में अंग्रेजों के विरुद्ध 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किया। - साहूकारों के खिलाफ विद्रोह किया, अम्बापानी की लड़ाई में भाग लिया और तात्या टोपे की सहायता की। - अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार किये गये और 29 दिसम्बर 1976 को पोर्ट ब्लेयर जेल में उनकी मृत्यु हो गयी।
खाज्या नायक	- भील जनजाति से संबंधित, शुरू में अंग्रेजों की सेवा की लेकिन बाद में विद्रोह में शामिल हो गए। 11 अप्रैल, 1858 को अंबापानी की लड़ाई में शहीद हुए। - मध्य प्रदेश में हर साल इस दिन खाज्या नायक दिवस मनाया जाता है।
एकलव्य	गुरुदक्षिणा के रूप में द्रोणाचार्य को अपना अंगूठा देने के लिए जाने जाते हैं।
राणापुंजा	हल्दी घाटी के युद्ध में अकबर के विरुद्ध महाराणा प्रताप की सहायता की।
सेवाराम	1825 और 1857 में अंग्रेजों के विरुद्ध भीलों का नेतृत्व किया।
दुबरिया	कलात्मक विरासत में योगदान देने वाला एक युवा पिथौरा चित्रकार।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

लोक कला:

गोतरेज	घरों की बाहरी दीवारों पर कलात्मक चित्रकारी की जाती है, जिसमें बैल, गाय, घोड़े आदि जानवरों के चित्र होते हैं।
पिथोरा चित्रकला	घरों में आंतरिक दीवारों को चित्रों से सजाया जाता है और इस शिल्प के कलाकार को 'लिखेन्द्र' कहा जाता है।
गतला	- असामयिक मृत्यु की स्थिति में भील मृतक की याद में 'गतला' नामक एक स्तंभ खड़ा करते हैं। - भील मृत्यु के तीसरे दिन अस्थियों को तालाब या नदी में विसर्जित करते हैं, इस प्रथा को 'सेतिया' या 'संस्कार' के नाम से जाना जाता है।

मध्य प्रदेश के दक्षिण-पूर्वी और पूर्वी जनजातीय क्षेत्र में गोंड जनजाति:

परिचय:

- 'गोंड' शब्द तेलुगु शब्द 'कोंड' से लिया गया है, जिसका अर्थ है पर्वत।
- गोंड मध्य प्रदेश की दूसरी प्रमुख जनजाति है।
- 2011 की जनगणना में, गोंड की कुल जनसंख्या 50.9 लाख थी, जो आदिवासी आबादी का 33.25 प्रतिशत थी।
- गोंड द्रविड़ परिवार से संबंधित हैं और पूर्व में सिंगरौली से पश्चिम में बैतूल तक और उत्तर में सागर से दक्षिण में बालाघाट तक फैले हुए हैं।

भौगोलिक स्थिति:

- गोंड बालाघाट, शहडोल, उमरिया, अनूपपुर, सीधी, डिंडोरी, मंडला, सिवनी, छिंदवाड़ा और बैतूल जैसे जिलों में पाए जाते हैं।

उप-जनजाति:

- मारिया, मुड़िया, राजगोंड, धुरगोंड, अगरिया, भर, धूलिया, मुड़िया, माड़िया, गायकी, गायता, कोया, खैरवार, मोध्या, नागरची, थोथ्या, परधान, ओझा, सोल्हल, कोइला भूति

उप-जनजाति (कार्य के आधार पर):

- परधान (पूजा), ओझा (तांत्रिक), अगरिया (आग का काम), कोयलाभूतिस (नृत्य और गीत), सोलहास (बढ़ई)।

मकान एवं निवास:

- पारंपरिक गोंड गांव के घर मिट्टी और छप्पर का उपयोग करके बनाए जाते हैं।
- विशिष्ट विशेषताओं में एक रसोई, बाहरी स्थान, मंदिर, महिलाओं के लिए निर्दिष्ट क्षेत्र और अतिथि कक्ष शामिल हैं।
- गोंड परिवार मेहमानों को तंबाकू के पत्ते और फल देकर उनका आतिथ्य करते हैं।

बोली:

- गोंडी, डेरिल, हल्बी और भतरी।

संस्कार:

- दशमनी या दशमात्र प्रथा मृत्यु के दसवें दिन मनाई जाती है।
- आमंत्रित अतिथि दाल, चावल और दूध के अवशेष युक्त सहाय लाते हैं।
- जबकि मृत्यु गीत छोड़ दिए जाते हैं, किकरमा और ददरिया गीत गाए जाते हैं।
- परधान रामायणी, पंडवानी और गोंडवानी गाते हैं, और मृत्यु दान इकट्ठा करते हैं जिसे मौरदान के रूप में जाना जाता है।



मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

- दाह-संस्कार प्रथाएं, हालांकि हिंदू रीति-रिवाजों से प्रभावित होती हैं, लेकिन इसमें हमेशा वास्तविक दाह-संस्कार शामिल नहीं हो सकता है; इसके बजाय, गौड लोग मृत स्तंभों का निर्माण करते हैं।

विवाह:

पठौनी विवाह	- पठौनी विवाह में लड़की की बारात लड़के के घर तक जाती है। - यह पारंपरिक विवाह प्रकार दूल्हे के परिवार और घर में दुल्हन की आवाजाही और स्वीकृति का प्रतीक है। - जब दुल्हन अपने नए वैवाहिक घर में स्थानांतरित होती है तो जुलूस में विभिन्न अनुष्ठान और उत्सव शामिल हो सकते हैं।
चढ़ विवाह	- चाड़ विवाह में लड़के की बारात लड़की के घर जाती है। - इस प्रकार का विवाह दुल्हन के परिवार के प्रति दूल्हे के परिवार की स्वीकार्यता को उजागर करता है, जो एकता और स्वीकृति का प्रतीक है। - दूल्हे की पार्टी उपहार ला सकती है और दुल्हन के निवास पर अनुष्ठान कर सकती है।
लमसेना विवाह	- लैम्सेना विवाह में, लड़का वास्तविक विवाह से पहले अपने ससुराल में रहकर अपने ससुर की सेवा करता है। - यह प्रथा दुल्हन के परिवार के प्रति दूल्हे की प्रतिबद्धता और सम्मान पर जोर देती है, योगदान देने और उनके घर का हिस्सा बनने की उसकी इच्छा को प्रदर्शित करती है।
भगेली विवाह	- भगेली विवाह एक प्रेम विवाह है जिसमें युगल भागकर विवाह करते हैं। - इस प्रकार का विवाह इसमें शामिल व्यक्तियों की पसंद और एजेंसी को दर्शाता है, क्योंकि वे प्रेम के कारण विवाह करने का निर्णय लेते हैं, कभी-कभी पारिवारिक या सामाजिक मानदंडों के विरुद्ध भी। - शब्द "भगेली" का तात्पर्य भागकर शादी करने या साथ में जीवन शुरू करने के कृत्य से होता है।
भालट (जबरन) विवाह	- जबरन विवाह तब होता है जब लड़का लड़की को जबरदस्ती लाता है या बाजार से हल्दी छिड़कता है। - विवाह का यह रूप नैतिक चिंताओं को जन्म देता है क्योंकि यह शामिल एक या दोनों पक्षों पर जबरदस्ती या दबाव का सुझाव देता है। - हल्दी छिड़कने का उपयोग एक प्रतीकात्मक इशारा हो सकता है, लेकिन "जबरन" शब्द का अर्थ सहमति की कमी है।
विधवा विवाह	- विधवा विवाह से तात्पर्य विधवाओं द्वारा अपने देवर से विवाह करने की प्रथा से है। - यह परंपरा सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंडों से उत्पन्न हो सकती है जिसका उद्देश्य पारिवारिक संरचना के भीतर विधवा व्यक्तियों को सहायता और सुरक्षा प्रदान करना है। - इस विवाह को अक्सर पारिवारिक संबंधों को बनाए रखने और विधवा को आर्थिक और भावनात्मक सहायता प्रदान करने के तरीके के रूप में देखा जाता है।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

लोक देवता:

बड़ादेव	- सबसे बड़े देवता माने जाने वाले बड़ादेव भगवान शंकर का एक रूप हैं। - यह देवता आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, तथा समुदाय की धार्मिक मान्यताओं के भीतर एक शक्तिशाली अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है।
घमसेनदेव	- घमसेनदेव बुद्धि और शक्ति का प्रतीक है और एक वार्षिक पूजा अनुष्ठान इस देवता को समर्पित है। - घमसेनदेव की पूजा में संभवतः समुदाय के भीतर बुद्धि, ज्ञान और शारीरिक शक्ति बढ़ाने के लिए आशीर्वाद मांगने वाली प्रार्थनाएँ और अनुष्ठान शामिल हैं।
नागेश्वर देव	- नागेश्वर देव की पूजा विशेष रूप से नाग पंचमी के दिन की जाती है, जो नागों को समर्पित त्यौहार है। - नाग पंचमी के दौरान नागेश्वर देव की पूजा संभवतः सांप से संबंधित आपदाओं से सुरक्षा और समुदाय की भलाई सुनिश्चित करने से संबंधित है।
ठाकुर देव	- ठाकुर देव गांव के देवता हैं जो गांव की रक्षा के लिए जिम्मेदार हैं। - ठाकुर देव की पूजा समुदाय के इस विश्वास को दर्शाती है कि देवता एक संरक्षक की भूमिका निभाते हैं, जो गांव और उसके निवासियों को विभिन्न बाहरी खतरों या प्रतिकूलताओं से बचाते हैं।
नारायण देव	- नारायण देव एक ऐसे देवता हैं जिनके बारे में माना जाता है कि वे घर को विपत्तियों से बचाते हैं। - घर की दहलीज पर नारायणदेव की पूजा करना संभवतः घर के लिए दैवीय सुरक्षा और आशीर्वाद प्राप्त करने की एक प्रथा है, जिससे घर की सुरक्षा और खुशहाली सुनिश्चित होती है।
लोक देवियाँ	गोंड खेरमाई, बंजारिन माई, रतमाई, शारदा माई, शीतला माई, बीमारियों से संबंध के कारण देवी के रूप में पहचानी जाती हैं (जैसे, चेचक को बूढ़ी माई कहा जाता है)।

लोक उत्सव:

बिदरी	- बिदरी ज्येष्ठ महीने में मनाया जाने वाला एक त्यौहार है, जिसमें धरती और बादलों की पूजा की जाती है। - इस त्यौहार में संभवतः धरती की उर्वरता के लिए आभार व्यक्त करने और भरपूर फसल के लिए आशीर्वाद मांगने के लिए समर्पित अनुष्ठान और प्रार्थनाएँ शामिल हैं।
बकबंदी	- बकबंदी गुरु पूर्णिमा पर मनाया जाता है और इसमें पलाश के पौधे के रेशों को घर और खेत में गाड़ दिया जाता है। - यह अनुष्ठानिक कार्य प्रकृति के साथ संबंध का प्रतीक होता है, क्योंकि पलाश के पौधे के रेशों को संभवतः शुभ या सुरक्षात्मक गुण वाला माना जाता है।
हरदिली	- हरदिली श्रावण मास की अमावस्या के दिन मनाया जाता है, जब खरीफ की फसल पक जाती है। - यह त्यौहार संभवतः एक महत्वपूर्ण कृषि चरण का प्रतीक है, और उत्सव में सफल फसल के मौसम के लिए प्रार्थना और प्रसाद शामिल हो सकते हैं।
नवाखानी	नवाखानी एक ऐसा त्यौहार है जो फसल की कटाई के उत्सव को पूर्वजों की पूजा के साथ जोड़ता है।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

	इस त्यौहार में फसल के लिए आभार व्यक्त करने और पूर्वजों की आत्माओं का सम्मान करने के अनुष्ठान शामिल होते हैं, जो कृषि और पारिवारिक संबंधों के परस्पर संबंध पर जोर देते हैं।
जवारा	- जवारा शक्ति का सम्मान करने वाला एक धार्मिक त्योहार है और चैत्र और आश्विन महीनों में मनाया जाता है। - इस त्यौहार में संभवतः शक्ति को समर्पित भक्ति प्रथाएँ, प्रार्थनाएँ और उत्सव शामिल होते हैं, जो शक्ति और ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करने वाली एक दिव्य स्त्री शक्ति है।
मड़ई	- मड़ई दिवाली से लेकर कार्तिक पूर्णिमा तक चलने वाला एक धार्मिक त्यौहार है। - इस त्यौहार में धार्मिक आयोजनों, जुलूसों और अनुष्ठानों की एक श्रृंखला शामिल हो सकती है, जो संभवतः विभिन्न क्षेत्रों से भक्तों और प्रतिभागियों को आकर्षित करती है।
छेरता	- छेरता बच्चों का त्यौहार है जो पौष माह की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। - इस त्यौहार में बच्चों के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन की गई गतिविधियाँ और कार्यक्रम शामिल होते हैं, जो पौष माह की पूर्णिमा के शुभ समय के दौरान उन्हें खुशी और उत्सव का दिन प्रदान करते हैं।

लोक नृत्य, लोक नाट्य, लोक गान:

कर्मा नृत्य	- कर्मा नृत्य एक महिला प्रधान नृत्य है जो विजयादशमी से नए साल तक होता है, जिसमें मांदर मुख्य वाद्य यंत्र के रूप में बजाया जाता है। - इस नृत्य का सांस्कृतिक और उत्सवी महत्व है, जो नए साल की शुरुआत और बदलते मौसम का जश्न मनाने का प्रतीक है।
सैला नृत्य	- सैला नृत्य केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है और इसमें लाठी का प्रयोग किया जाता है। - नृत्य में छड़ियों का उपयोग लयबद्ध अभिव्यक्ति और समन्वय के एक रूप का प्रतिनिधित्व करता है, जो संभवतः पुरुष कलाकारों के बीच शक्ति और एकता के पहलुओं का प्रतीक है।
भड़ौनी नृत्य	- भड़ौनी नृत्य एक विवाह नृत्य है जिसमें मंडप के नीचे महिलाएं बारातियों के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त करती हैं। - यह नृत्य संभवतः शादियों के दौरान उत्सव और अभिव्यक्ति के रूप में कार्य करता है, जहां महिलाएं पारंपरिक नृत्य आंदोलनों के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करती हैं।
सजनी नृत्य:	स्त्री प्रधान नृत्य, इसमें समधिन समधी को पकड़ कर नाचती है।
सुआ नृत्य	- पूर्वी मध्य प्रदेश में धान की फसल पकने के दौरान सुआ नृत्य मनाया जाता है, जिसमें अन्य गांवों में लड़कियां नृत्य करती हैं। - यह नृत्य संभवतः कृषि मौसम के दौरान सामुदायिक उत्सव के रूप में कार्य करता है, जो धान की फसल के सांस्कृतिक महत्व पर जोर देता है।
बिरहा गीत	बिरहा गीत तब गाया जाता है जब दूल्हे की बारात विदा होती है।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

	इस प्रकार के गीत में भावनात्मक और पुरानी यादें शामिल होती हैं, जो दूल्हे के जाने और परिवार और समुदाय के भीतर बदलती गतिशीलता से संबंधित भावनाओं को व्यक्त करती हैं।
खम्ब स्वांग नाटक, गीत	- एक पारंपरिक नृत्य शैली जिसमें प्रतिभागी जमीन में गड़े एक खंभे के चारों ओर नृत्य करते हैं, जिसे खंभ स्वांग नाम दिया गया है। - कोरकू जनजाति के बीच प्रचलित इस नृत्य में रावण के पुत्र मेघनाथ की पूजा की जाती है।
गम्मत	- निमाड़ी अंचल का प्रमुख लोकनृत्य गम्मत है, जिसमें मृदंग और झांझ जैसे वाद्यों का मुख्य उपयोग होता है। - अपने हास्य तत्वों के लिए पहचाना जाने वाला गम्मत एक जीवंत नृत्य शैली है जिसे अक्सर नवरात्रि समारोहों के दौरान आयोजित किया जाता है।

लोक कलाएँ:

नोहेडोरा	- नोहेडोरा गोंड महिलाओं द्वारा बनाई गई सजावटी दीवार डिजाइन को संदर्भित करता है। - इन दीवार चित्रों में संभवतः सांस्कृतिक और कलात्मक महत्व है, जो गोंड महिलाओं की रचनात्मकता और कलात्मक अभिव्यक्ति को दर्शाते हैं। डिजाइनों में पारंपरिक रूपांकनों, पैटर्न और प्रतीकों की विशेषता होती है।
टैटू	- गोदना उन महिलाओं द्वारा किया जाता है जिन्हें बदनिन के नाम से जाना जाता है और इसमें शरीर के विभिन्न अंगों के लिए अलग-अलग नाम शामिल होते हैं। - गोदना बनाने की प्रथा संभवतः एक सांस्कृतिक परंपरा है जिसमें विशिष्ट डिजाइन और अर्थ होते हैं। शरीर के विभिन्न अंगों के लिए अलग-अलग नामों का उपयोग गोदने की कला से जुड़ी एक समृद्ध सांस्कृतिक शब्दावली का सुझाव देता है।

अर्थव्यवस्था:

- गोंड झूम खेती करते हैं जिसे **बारी** के नाम से जाना जाता है।
- स्थानांतरित खेती को **झूम**, **खल्लू**, **पोड़** के नाम से भी जाना जाता है।
- वन आदिवासी जीवन का अभिन्न अंग हैं, जो महुआ फूल, तेंदू पत्ता, शहद और अन्य वन संसाधनों के संग्रह के माध्यम से विविध रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं। यह समुदाय के लिए आजीविका का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।
- हालाँकि सरकार द्वारा शिकार पर प्रतिबंध लगा दिया गया है, फिर भी कुछ आदिवासी क्षेत्रों में इसका अभ्यास किया जाता है।

प्रसिद्ध गोंड व्यक्तित्व:

जनगढ़ सिंह श्याम	1962 में पातालगढ़ गांव में जन्मे जंगढ़ सिंह श्याम गोंड आदिवासी समुदाय से थे और एक प्रसिद्ध चित्रकार थे। - भारतीय कला के 'जंगढ़ कलम' शैली की स्थापना का श्रेय उन्हें दिया जाता है, उनके महत्वपूर्ण कार्यों में मध्य प्रदेश विधान सभा और भारत भवन के आंतरिक चित्र शामिल हैं।
दुर्गा बाई व्याम	मंडला जिले के बरबसपुर गांव में जन्मी दुर्गा बाई व्याम धार्मिक आकृतियों पर काम करने वाली एक प्रसिद्ध गोंडी चित्रकार हैं।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

	डिगना कला के क्षेत्र में अपनी विशेषज्ञता के लिए जानी जाने वाली दुर्गा बाई को 2021 में पद्म श्री पुरस्कार और रानी दुर्गावती पुरस्कार जैसे पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।
रानी अवन्ती बाई	16 अगस्त 1831 को सिवनी के मनखेड़ी गांव में जन्मी रानी अवन्ती बाई का विवाह रामगढ़ के राजकुमार विक्रमादित्य से हुआ था। - उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ 4000 समर्थकों की एक सेना का नेतृत्व किया, देवहरगढ़ के जंगल में भीषण युद्ध लड़ा और 20 मार्च 1858 को डिंडोरी के जंगल में अपना जीवन समाप्त करने का फैसला किया।
झलकारी बाई	22 नवंबर 1839 को झांसी के पास भोजला गांव में जन्मी झलकारी बाई रानी लक्ष्मी बाई की महिला सेना की कमांडर थीं। 4 अप्रैल 1858 को उनकी मृत्यु हो गई, उन्होंने अंग्रेजों का ध्यान भटकाने के लिए लक्ष्मीबाई का वेश धारण किया था, लक्ष्मीबाई को भागने में मदद की थी, और ग्वालियर में उनकी समाधि बनी हुई है।
शंकर शाह और रघुनाथ शाह	- शंकर शाह गढ़ मंडला के गोंड शासक थे, जिनका जन्म 1783 ई. में हुआ था। - उनके बेटे रघुनाथ शाह ने ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ जबलपुर में 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किया था। - शंकर शाह को पकड़ लिया गया, उन पर मुकदमा चलाया गया और 18 सितंबर 1858 को अंग्रेजों ने उन्हें तोपखाने से उड़ा दिया।
विरसा गोंड और जिरा गोंड	- भारत छोड़ो आंदोलन से जुड़े विरसा गोंड और जिरा गोंड ने बैतूल जिले के घोड़ाडोंगरी में आंदोलन किया। - उन्होंने ब्रिटिश शासन के विरोध में घोड़ाडोंगरी स्टेशन के पास रेलवे ट्रैक को हटाने और लकड़ी के डिपो को आग लगाने के लिए एक आदिवासी सभा का नेतृत्व किया। - विरसा गोंड को अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर लिया और बाद में जेल में उनकी मृत्यु हो गई।
अन्य	- श्यामाचरण दुबे ने गोंडों के सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं का गहन अध्ययन किया है। - गोंडों के युवा पुरुषों और महिलाओं के लिए घोंटूल नामक एक सामुदायिक स्थान बनाया गया है। - घोटुल पाटा गोंडों के बीच गाया जाने वाला एक पारंपरिक गीत है। - रुडयार्ड किपलिंग की प्रसिद्ध कहानी "द जंगल बुक" में गोंड जनजाति को कथा के हिस्से के रूप में शामिल किया गया है।

मध्य प्रदेश के दक्षिणी जनजातीय क्षेत्र में कोरकू जनजाति:

उत्पत्ति और मान्यता:

- मुंडा या कोलेरियन जनजाति में निहित ऑस्ट्रिक राजवंश, राजपूतों के वंशज हैं।
- किंवदंती: रावण के अनुरोध पर महादेव द्वारा बनाए गए पुतले 'मूला' और 'मुलैरखा'; कोरकू इन्हें अपना पूर्वज मानते हैं। 'कोरकू' शब्द का अर्थ मनुष्यों का समूह है।
- मुख्य रूप से छिंदवाड़ा, बैतूल, हरदा, होशंगाबाद, खंडवा, बुरहानपुर और महाराष्ट्र में।

उप-जनजाति:

- चार समूह: रुमा, पोतड़या, धुलारिया, बोवई, बोंडई
- उपजातियाँ: राजकोरकू (जमींदार) और पोथरिया कोरकू

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

बोली:

- कोरकू बोली, ऑस्ट्रिक भाषा परिवार (मुंडा भाषा परिवार)।

संस्कार:

- तीसरे/पांचवें दिन नामकरण संस्कार, सप्ताह के दिन के आधार पर नामकरण।
- विवाह में मुथवादेव की पूजा शामिल होती है।
- मकबरे पर लकड़ी का खंभा (मांडा या मांडो) रखा जाता है।
- तीसरी वर्षगांठ पर मृत्यु गीत (फुलजगनी या सिदोली) गाया जाता है।

विवाह:

चटकोरा विवाह	- इस परंपरा में, 'चिथोड़ा' दूल्हे पक्ष की ओर से मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है। - पांच लोगों द्वारा चुने गए दो मध्यस्थ, पूरी विवाह प्रक्रिया को व्यवस्थित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
लमझना विवाह	लड़का बारह वर्षों तक लड़की के माता-पिता के घर में दामाद के रूप में सेवा करता है।
राजी-बाजी (प्रेम विवाह)	- इस परंपरा में राजी-बाजी और प्रेम विवाह शामिल हैं, जो कोरकू लोगों में विवाह के विभिन्न तरीकों को दर्शाता है। - राजी-बाजी में परिवारों के बीच बातचीत और चर्चा शामिल होती है, जबकि प्रेम विवाह आपसी सहमति और स्नेह पर आधारित मिलन का सुझाव देता है।
हठ विवाह	हठ विवाह परंपरा के बारे में विवरण उपलब्ध नहीं है, लेकिन यह कोरकू लोगों के बीच विवाह के लिए एक अन्य विशिष्ट दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है।
लमसेना विवाह	लमसेना का अर्थ है दूल्हे को "घर जमाई" (वह दामाद जो अपनी पत्नी के घर पर रहता है)।

मृत्यु संस्कार

- मांडो एक लकड़ी और पत्थर का स्तम्भ होता है और इसे मृत व्यक्ति को विशेष श्रद्धांजलि देने के लिए स्थापित किया जाता है। स्तम्भ के नीचे, एक नग्न आदमी की आकृति को जिसके हाथ खुले हुए और घोड़े पर सवार को दर्शाया जाता है जो दर्शाता है कि उनके पूर्वज स्वर्ग जाते हैं क्योंकि वे पुण्यवान हैं। इसके अलावा, सूर्य और चंद्रमा को चित्रित करके उनकी मान्यता को दर्शाया जाता है कि आत्मा चंद्रमा के माध्यम से सूर्य (स्वर्ग) तक जाती है।
- सिडोली प्रथा** - यह कोरकू जनजाति का मृतक संस्कार है, जिसमें मृतक की याद में लकड़ी का स्तंभ गाड़ते हैं।

जनजातीय देवता:

देवता:

- महादेव, रावण, मेघनाथ, खनेरादेव, किल्लर मुथवदेव, महावीर देव, खेड़ादेव, सूर्य, चंद्रमा, नर्मदा, ताप्ती और सिंदरदेव जैसे विभिन्न देवताओं की पूजा एक विविध आध्यात्मिक परिदृश्य को दर्शाती है।
- ये देवता कोरकू जनजाति के भीतर प्रकृति, पौराणिक कथाओं और पैतृक श्रद्धा के मिश्रण का प्रतीक हैं।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

मान्यताएँ:

- कोरकू जनजाति जादू-टोने और झाड़-फूंक में विश्वास रखती है।
- इन आध्यात्मिक प्रथाओं के अभ्यासियों को भगतो-डुकरी के नाम से जाना जाता है, जो आध्यात्मिक उपचार और दुष्ट शक्तियों को दूर भगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

त्यौहार और उत्सव:

गुड़ी पडवा	मराठी नववर्ष के रूप में मनाया जाने वाला गुड़ी पडवा पर्व वसंत ऋतु के आगमन का प्रतीक है, जिसे पारंपरिक अनुष्ठानों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ मनाया जाता है।
आखातीज	सांस्कृतिक उत्सवों और सामुदायिक समारोहों वाला एक त्यौहार।
देव-दशहरा	देवताओं के सम्मान में मनाए जाने वाले इस त्यौहार में अनुष्ठान और उत्सव शामिल होते हैं।
डोडबली	ज्येष्ठ अमावस्या को मनाया जाने वाला डोडबली त्यौहार विशिष्ट अनुष्ठानों और समारोहों से संबंधित है।
जिरोती	पारंपरिक संगीत और नृत्य के साथ मनाया जाने वाला एक सांस्कृतिक उत्सव, सामुदायिक एकता को प्रदर्शित करता है।
पोला	यह एक महत्वपूर्ण कृषि त्यौहार है जिसमें बैलों की पूजा और कृषि अनुष्ठान शामिल होते हैं।
दिवाली	पारंपरिक रीति-रिवाजों और उत्सवों के साथ मनाई जाने वाली दिवाली का सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व है।
मगधशेरा	कृषि अनुष्ठानों और उत्सवों द्वारा मनाया जाने वाला एक फसल उत्सव।
होली	रंगों का त्यौहार होली हर्षोल्लास से सामुदायिक कार्यक्रमों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ मनाया जाता है।
दंडनचक	पोला त्यौहार के दौरान बैलों की पूजा से जुड़ा एक अनुष्ठान, कृषि में मवेशियों के महत्व पर जोर देता है।

लोक नृत्य:

देव-दशहरा नृत्य	इस नृत्य में 'धाम गीत' और देवता की पूजा शामिल है, जो पारंपरिक संगीत और नृत्य के साथ देव-दशहरा के उत्सव में योगदान देता है।
ताली नृत्य	संगीत वाद्य यंत्र चितकोरा का उपयोग करते हुए, यह नृत्य शैली लयबद्ध आंदोलनों और पारंपरिक अभिव्यक्तियों को प्रदर्शित करती है, जो संभवतः एक सांस्कृतिक और सामुदायिक उत्सव के रूप में कार्य करती है।
चाचरी नृत्य	पुरुष-प्रधान समूह नृत्य जो सांप्रदायिक उत्सव और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक होता है।
डोडबली नृत्य	ज्येष्ठ अमावस्या को किया जाने वाला यह नृत्य विशिष्ट सांस्कृतिक महत्व और पारंपरिक अभिव्यक्तियों से संबंधित है।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

डंडा नृत्य	• श्रावण में जिरोती उत्सव के दौरान आयोजित किया जाने वाला यह नृत्य लयबद्ध गतिविधियों के माध्यम से पारंपरिक कहानी कहने का चित्रण करता है।
होरोरया	• कुमारमाह में पुरुष-प्रधान समूह नृत्य, जो सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है और संभवतः पारंपरिक भावों को प्रदर्शित करता है।
ठठिया नृत्य	• दिवाली की रात पशुपालकों द्वारा किया जाने वाला यह नृत्य संभवतः पशुपालन से संबंधित एक अनूठी सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करता है।
गादली नृत्य	• विवाह के दौरान कोरकू महिलाओं द्वारा किया जाने वाला यह पारंपरिक नृत्य वैवाहिक समारोहों से संबंधित सांस्कृतिक अनुष्ठानों और उत्सवों पर प्रकाश डालता है।

अर्थव्यवस्था:

- कोरकू भाग्य: बड़े किसानों के लिए काम करने वाले।
- बदलवा प्रथा: जंगलों को साफ करके खेती करना।

कोल जनजाति:

परिचय:

- कोल जनजाति मध्य प्रदेश की तीसरी सबसे बड़ी जनजाति है, जो कुल जनजातीय आबादी का 7.6% है।
- इसमें 22 उप-शाखाएं शामिल हैं और यह ऑस्ट्रिक परिवार से संबंधित है, जिसे मैक्स मूलर ने कोल कहा था।
- पुराणों के अनुसार, मुंडा समूह की एक प्राचीन जनजाति के रूप में कोलभिल और निषाद की उत्पत्ति असग के पुत्र वेन से हुई बताई जाती है।
- कोल को पुराणों के कोलचन्द्र वंश का वंशज माना जाता है तथा उनका संबंध रामायण की शबरी से है।

भौगोलिक स्थिति:

- मध्य प्रदेश के रीवा, सीधी, सतना, शहडोल और बघेल ब्लॉक क्षेत्र में पाए जाते हैं।
- मध्य प्रदेश के कोल सरिवा जिले के फरेंदा गांव को अपना मूल स्थान मानते हैं, जबकि मिर्जापुर के कोल बर्डिराजा क्षेत्र के कुराली गांव को अपना घर मानते हैं।

उप-जनजातियाँ:

- **सतना:** कथरिया, कुड़हा, ठकुरिया, रौतिया, खंगार, कठौतिहा, कविरहा।
- **शहडोल:** रौतेल, ठकुरिया, चेथहा, नरछिहा, कथरिया, मवासी।
- **रीवा:** रौतिया, ठकुरिया, कठौतिहा, कथरिया, बिंज, खंगार, खरवार।
- **सीधी:** रैतुआ (रावत), बिंज, ठकुरिया, खैरिया, मड़नहा, मवासी, लोनिया (भूमिया)।
- **जबलपुर:** ठकुरिया, रौतिया, रौतेल, गडवारिया, कगवारिया, कुंदहा, दशहरा।

घर या निवास:

- घरों को 'कोल्हिन टोला' कहा जाता है।
- गोत्रों में विभाजित लेकिन गोत्र प्रतीकों (टोटम) का अभाव।



मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

- जादू टोने में विश्वास।
- पंचायत को **गोहिया** के नाम से जाना जाता है।

सामाजिक संगठन:

- गोहिया के नाम से जानी जाने वाली पंचायत उनके सामाजिक संगठन के रूप में कार्य करती है।

विवाह:

- विवाह में मंडप में एक स्तंभ की स्थापना की जाती है जिसे **मगरोहन** कहा जाता है।
- विवाह के दौरान **कोलदहा नृत्य** किया जाता है।

लोक देवता:

ठाकुर देव	• ठाकुर देव बरुआ के अंदर रहने वाले ग्राम देवता हैं, जो एक महत्वपूर्ण स्थानीय आध्यात्मिक उपस्थिति का प्रतिनिधित्व करते हैं। • ठाकुर देव की पूजा संभवतः समुदाय की सुरक्षा और उसके कल्याण से संबंधित है।
बड़का देव	• बड़कादेव महादेव का एक रूप हैं और कोल जनजाति भगवान शिव के इस रूप की पूजा करती है। • बड़कादेव को समर्पित विशिष्ट अनुष्ठान और प्रार्थनाएँ परमात्मा के साथ आध्यात्मिक संबंध पर प्रकाश डालती हैं।
अहीरा बाबा	• अहीरा बाबा को अहीर समुदाय से जुड़े होने के कारण पूजनीय माना जाता है, जो चरवाहे या पशुपालन की परंपरा से जुड़ाव दर्शाता है। • अहीरा बाबा की पूजा में सफल पशुधन प्रबंधन और कृषि गतिविधियों के लिए आशीर्वाद मांगना शामिल होता है।
सन्यासी देव	• बाहरी बाधाओं और बीमारियों को रोकने के उद्देश्य से सन्यासी देव की पूजा की जाती है। • समुदाय संभवतः विशिष्ट अनुष्ठानों और समारोहों के दौरान सन्यासी देव का आह्वान करके सुरक्षा और कल्याण की कामना करता है।
वनसती देवी	• वनसतिदेवी को यवन की देवी के रूप में मान्यता प्राप्त है, जो प्रकृति या सांस्कृतिक महत्व के किसी विशेष पहलू से जुड़े देवता को दर्शाती है। • वनसति देवी की पूजा में प्रचुरता, उर्वरता या अन्य प्राकृतिक तत्वों के लिए आशीर्वाद मांगना शामिल होता है।
शारदामाई	• शारदा माई देवी विशेष रूप से बघेलखंड के कोल समुदाय द्वारा पूजी जाने वाली देवी हैं, जो स्थानीय या समुदाय-विशिष्ट आध्यात्मिकता का संकेत देती हैं। • शारदा माई को समर्पित अनुष्ठान और समारोह बघेलखंड क्षेत्र में सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व रखते हैं।

लोक नृत्य:

दहका: प्रश्न-उत्तर शैली वाला पारंपरिक नृत्य, जिसमें महिलाएँ और पुरुष गायक शामिल होते हैं।

फाग: कहार वताल की धुन पर किया जाने वाला लोकप्रिय नृत्य।

केहरा: खुशी के अवसर पर किया जाने वाला नृत्य।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

त्यौहार:

- **हरियाली अमावस्या:** सावन के महीने में मनाई जाती है।
- **नागपंचमी:** भूमि की जुताई नहीं की जाती और दूध से सांपों की पूजा की जाती है, जिसे खिचरहाई के नाम से जाना जाता है।
- नाग पंचमी पर गौघाट में सोन नदी के तट पर मेला लगता है।

अगरिया जनजाति:

परिचय:

- अगरिया जनजाति गोंड समुदाय की एक उप-जनजाति है, और उनका नाम हिंदी शब्द "आग" से लिया गया है, जिसका अर्थ अग्नि है।
- यह सहयोग उपकरण बनाने के लिए लौह अयस्क को गलाने में उनकी विशेषज्ञता को दर्शाता है।

भौगोलिक स्थिति:

- मध्य प्रदेश के बालाघाट, सीधी, शहडोल, मंडला और डिंडोरी जिलों में मुख्य रूप से पाई जाने वाली अगरिया जनजाति भौगोलिक दृष्टि से विशिष्ट क्षेत्रों में संकेन्द्रित है।

सामाजिक विशेषताएँ:

- अगरिया महिलाएँ पारिवारिक मामलों के प्रबंधन और विभिन्न सामाजिक और धार्मिक कार्यों में भाग लेने में सक्रिय भूमिका निभाती हैं।
- खेती, जलाऊ लकड़ी इकट्ठा करना, पानी लाना और घरेलू काम जैसे कार्यों में लगे हुए, अगरिया घरेलू और सामुदायिक दोनों गतिविधियों में योगदान देते हैं।
- अगरिया जनजाति में एकल विवाह की प्रथा प्रचलित है, हालाँकि बहुविवाह की अनुमति है।
- वधू मूल्य एक पारंपरिक प्रथा है और विधवाओं के पास पुनर्विवाह का विकल्प होता है।

आर्थिक विशेषताएँ:

- अगरिया जनजाति के प्राथमिक व्यवसाय में लोहा पिघलाना और औज़ार तैयार करना शामिल है। वे लौह अयस्क के स्रोत के लिए खनन गतिविधियों में सक्रिय रूप से लगे हुए हैं।

धर्म एवं संस्कृति:

- लोहासुर अगरिया जनजाति के प्रमुख देवता हैं, माना जाता है कि लोहासुर जलती हुई भट्टियों में निवास करते हैं। इस देवता को प्रसन्न करने के लिए काले मुर्गे सहित धार्मिक प्रसाद चढ़ाया जाता है।
- उड़द की दाल का सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक महत्व है, इसका उपयोग दुल्हन की कीमत के रूप में या मेहमानों के स्वागत के लिए किया जाता है।
- अगरिया लोगों के बीच सूअर का मांस एक पसंदीदा भोजन है, जो उनकी पाक प्राथमिकताओं को दर्शाता है।

भाषा:

- अगरिया जनजाति कई भाषाओं में संवाद करती है, जिनमें हिंदी, छत्तीसगढ़ी और उनकी विशिष्ट अगरिया भाषा शामिल है।

पनिका जनजाति

परिचय:

- पनिका, जिसे पनाका के नाम से भी जाना जाता है, एक द्रविड़ जनजाति है जो पारंपरिक रूप से बुनाई से संबंधित है।

भौगोलिक स्थिति:

- यह जनजाति मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ के विंध्य क्षेत्र और मध्य प्रदेश में, विशेषकर सीधी और शहडोल में पाई जाती है।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

सामाजिक विशेषताएँ:

- जनजाति के भीतर एक संप्रदाय है जिसे सकट पनिका कहा जाता है।

आर्थिक विशेषताएँ:

- कृषि, कपड़ा बुनाई और शिकार में संलग्न।

सांस्कृतिक विशेषताएँ:

- पनिका जनजाति अलग-अलग सांस्कृतिक प्रथाओं का पालन करती है, जिसमें एक ही गोत्र (कुल) में विवाह भी करना और बहन गोत्र में विवाह की अनुमति देना शामिल है।
- यह समुदाय के भीतर एक अनोखी विवाह प्रणाली को दर्शाता है।
- पनिका एक विशिष्ट मूल्य प्रणाली का पालन करते हैं जिसे बधू के नाम से जाना जाता है, जो नैतिक आचरण और सामाजिक मानदंडों के लिए दिशानिर्देश प्रदान करता है।
- पुरुषों के लिए पारंपरिक परिधान में सफेद कुर्ता-धोती और बूंदी शामिल हैं, जबकि महिलाएं धोती और पोल्का पहनती हैं, जो उनकी सांस्कृतिक पोशाक को प्रदर्शित करती हैं।

बंजारा जनजाति

परिचय:

- माना जाता है कि यह एक प्राचीन घुमंतू जनजाति है, जिसका उद्गम राजस्थान से हुआ है।

भौगोलिक वितरण:

- निमाड़, मालवा और मंडला क्षेत्र में स्थायी रूप से निवासरत हैं।

सामाजिक विशेषताएँ:

- गांव से बाहर **टांडा नामक** क्षेत्र में निवास करते हैं।
- टांडा के मुखिया को **नायक** कहा जाता है, जो अपने सदस्यों पर अधिकार रखता है।
- नायक को सरपंच का पद भी प्राप्त है।

आर्थिक विशेषताएँ:

- मुख्य रूप से पशुपालन और अन्य मजदूरी-संबंधी गतिविधियों में संलग्न।
- **कंधी के आविष्कारक** के रूप में जाने जाते हैं और व्यवसायियों को '**बलाद**' के नाम से जाना जाता है।

धर्म और संस्कृति:

- हिंदू धर्म के देवी-देवताओं जैसे राम, कृष्ण, दुर्गा, शिव की पूजा करते हैं।
- गुरु नानक और गुरु ग्रंथ साहिब का अनुसरण करते हुए सिख धर्म का महत्वपूर्ण प्रभाव।
- संगीत और नृत्य से जुड़ी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराएँ, जिनमें तलवार और डंडा-बेली जैसे नृत्य शामिल हैं।
- गणगौर, होली, दशहरा और दीपावली जैसे त्योहार मनाते हैं।

पारधी जनजाति

परिचय:

- "पारधी" शब्द मराठी शब्द "पारध" से लिया गया है, जिसका अर्थ है शिकार करना। इसमें पारधी और बहेलिया शामिल हैं।

भौगोलिक वितरण:

- मध्य प्रदेश के विभिन्न भागों में पाए जाते हैं, तथा भोपाल, रायसेन और सीहोर जैसे जिलों में इनकी संख्या काफी अधिक है।

उप-जनजातियाँ:

- भील-पारधी, चीता-पारधी, फेज़-पारधी, गौसाई-पारधी, लंगोटी-पारधी।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

शारीरिक विशेषताएँ:

- मध्यम कद, गहरा रंग, पतला, मध्यम लम्बा और लम्बे बाल।

सांस्कृतिक विशेषताएँ:

- सिदिया, चौहान, राठी, और सोलंकी जैसे राजपूतों के साथ समान गोत्र साझा करते हैं।
- मुख्य व्यवसाय शिकार करना है, और उनकी संस्कृति उनके राजपूत वंश के कारण राजपूत प्रभावों को दर्शाती है।
- विवाह संस्कार राजपूत और गुजराती शैलियों का पालन करते हैं, और दशहरा एक महत्वपूर्ण त्योहार है।

मध्य प्रदेश में अन्य जनजातियाँ:

खैरवार जनजाति:	• मुंडा जनजाति समूह की प्रमुख जनजाति। • बिलासपुर, मंडला, सरगुजा और विंध्य क्षेत्रों में पाई जाती है। • कथन निकालने वाले खैरवारों को खैरू कहा जाता है।
परिका (पंका) जनजाति:	• द्रविड़ समूह की जनजाति। • ऐसा माना जाता है कि इनका जन्म पानी में हुआ था और इनका पालन-पोषण पंकम महिला द्वारा किया गया था। • मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ और विंध्य क्षेत्र में पाए जाते हैं, सीधी और शहडोल जिलों में भी पाए जाते हैं। • बहुसंख्यक पंकबीर पंथी या कबीराहा हैं; दूसरी श्रेणी शक्तिपणक है। • कबीर पंथी पणिकों के धार्मिक नेताओं को मंटिस कहा जाता है।
कंवर याकंवर:	• कुल जनसंख्या: 18, 603. • जिले: शहडोल, अनुपपुर, सीधी, सिंगरौली। • माना जाता है कि इसकी उत्पत्ति महाभारत में कौरवों से हुई थी। • 8 उपजातियाँ, जिनमें एकतनवार आम तौर पर तोमर राजपूत हैं। • मुख्य देवता: झगराखंड या दुधारीतालवार; पशुओं की रक्षा के लिए बकरदेव के नाम से शेर की पूजा की जाती है। • सेना में सेवा करना एक पारंपरिक नौकरी मानी जाती है।
उराँव:	• मध्य प्रदेश के भोपाल, नरसिंहपुर, अनुपपुर, बड़वानी, जबलपुर, इंदौर जिलों में पाई जाती है। • इसे धनगढ़, धनका, किसान के नाम से भी जाना जाता है। • जाति और भाषा उन्हें द्रविड़ियन के रूप में वर्गीकृत करती है। • ग्राम प्रधान: महतो; • पुजारी: बैगा; • युवा गृह: धुमकुरिया। • मुख्य देवता: धर्मेश (सूर्य का रूप)।
प्रधान:	• संस्कृत शब्द का अर्थ मुखिया होता है। • ऐतिहासिक दृष्टि से गोंड राजाओं के मंत्री। • पूर्वी सतपुड़ा क्षेत्र, नर्मदा घाटी और बघेलखंड क्षेत्र में निवास करते हैं। • कहानीकार के रूप में जाने जाने वाले, संगीत थाई लोगों के लिए आजीविका का साधन है।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

मध्य प्रदेश के विशेष रूप से कमज़ोर जनजातीय समूह (PVTG)

भारत सरकार ने जनजातियों को विशेष रूप से कमज़ोर जनजातीय समूहों (PVTGs) के रूप में पहचानने और घोषित करने के लिए विशिष्ट मानदंड स्थापित किए हैं। इन मानदंडों में शामिल हैं:

- **कृषि-पूर्व तकनीक:** कृषि-पूर्व तकनीक वाले जनजातियों को पीवीटीजी दर्जा के रूप में पहचाना जाता है।
- **स्थिर या घटती जनसंख्या:** स्थिर या घटती जनसंख्या वाले समूहों को विशेष रूप से कमज़ोर के रूप में पहचाना जाता है।
- **कम साक्षरता प्रतिशत:** कम साक्षरता प्रतिशत वाली जनजातियाँ PVTG श्रेणी में आती हैं।
- **निर्वाह अर्थव्यवस्था:** अर्थव्यवस्था के निर्वाह स्तर पर काम करने वाली जनजातियाँ PVTG स्थिति के लिए पात्र होती हैं।

विशेष रूप से कमज़ोर जनजातीय समूह (PVTGs):

- जनजातीय समूहों में PVTG सबसे अधिक असुरक्षित हैं। उनकी संवेदनशीलता के कारण, अधिक विकसित जनजातीय समुदायों को अक्सर जनजातीय विकास निधि का एक महत्वपूर्ण हिस्सा प्राप्त होता है, जिससे PVTG विकास के लिए विशिष्ट संसाधन आवंटित करना महत्वपूर्ण हो जाता है।
- 1973 में, डेबर आयोग ने आदिम जनजातीय समूहों (PTG) को एक अलग श्रेणी के रूप में वर्गीकृत किया, जो जनजातीय समूहों में सबसे कम विकसित को दर्शाता है।
- 2006 में, भारत सरकार ने PTG का नाम बदलकर PVTG कर दिया।
- 1975 में शुरू की गई पहचान प्रक्रिया के परिणामस्वरूप 52 PVTG की घोषणा हुई।
- इसके बाद, 1993 में 23 अतिरिक्त समूह जोड़े गए, जिससे 705 अनुसूचित जनजातियों में से कुल 75 PVTG हो गए।
- PVTG में एकरूपता, छोटी आबादी, शारीरिक अलगाव, लिखित भाषा का अभाव, सरल तकनीक और सामाजिक परिवर्तन की धीमी दर जैसी सामान्य विशेषताएं हैं।

मध्य प्रदेश में विशेष पिछड़ी जनजाति समूह- PVTG:

- राज्य में तीन विशेष पिछड़ी जनजातियाँ **भारिया, बैगा एवं सहरिया** निवास करती हैं।
- राज्य सरकार द्वारा 11 विशेष पिछड़ी जनजाति विकास अभिकरण गठित किये गये हैं। जो मण्डला, बैहर (बालाघाट), डिण्डोरी, पुष्पराजगढ़ (अनूपपुर), शहडोल, उमरिया, ग्वालियर, (दतिया जिला सहित), श्योपुर (भिण्ड, मुरैना जिला सहित), शिवपुरी, गुना (अशोकनगर जिला सहित) तथा (तामिया जिला, छिंदवाड़ा) में स्थित है। इन अभिकरणों में चिन्हित 2314 ग्रामों में 5.51 लाख विशेष पिछड़ी जनजाति के लोग निवास करते हैं।
- चिन्हित क्षेत्रों में निवासरत विशेष पिछड़ी जनजातियों के लिए योजनाओं के निर्माण, क्रियान्वयन, निगरानी एवं मूल्यांकन हेतु एक शासी निकाय के गठन का प्रावधान है।
- जिसमें विशेष पिछड़ी जनजाति समुदाय के सदस्यों को ही दो वर्ष के लिए अध्यक्ष एवं संचालक मंडल के सदस्य के रूप में शासन स्तर से मनोनीत किया जाता है।
- संचालक मण्डल में अभिकरण क्षेत्र से संबंधित आदिवासी विधायक/जिला पंचायत अध्यक्ष एवं जिला पंचायत अध्यक्षों को सदस्य के रूप में रखा जाता है।
- संबंधित एजेंसी के परियोजना प्रशासक/सहायक आयुक्त/जिला संयोजक सदस्य सचिव के रूप में कार्य करते हैं।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

बैगा, भारिया एवं सहरिया प्राधिकरण

विकास प्राधिकरण	जिला
सहरिया आदिवासी विकास प्राधिकरण	ग्वालियर, शिवपुरी, दतिया, गुना, अशोकनगर, मुरैना, भिंड
बैगा आदिवासी विकास प्राधिकरण	डिंडोरी, उमरिया, शहडोल, अनूपपुर, मंडला, बालाघाट
भारिया जनजाति विकास प्राधिकरण	छिंदवाड़ा

- इन प्राधिकरणों से पूरे प्रदेश में सामाजिक विकास संभव होगा।
- इन नवगठित राज्य स्तरीय प्राधिकरणों में एक अध्यक्ष तथा इन जातियों से तीन गैर-सरकारी सदस्य (मनोनीत) होंगे।
- वित्त, पंचायत एवं ग्रामीण विकास, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, जल संसाधन, लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, स्कूल शिक्षा, किसान कल्याण, उद्यानिकी, वन एवं जनजातीय कार्य विभाग के अपर मुख्य सचिव/प्रमुख सचिव/सचिव इसके आधिकारिक सदस्य हैं।
- प्राधिकरणों के अध्यक्षों एवं गैर-सरकारी सदस्यों को राज्य सरकार द्वारा मानदेय एवं अन्य सुविधाएं प्रदान की जाती है।
- इन प्राधिकरणों के कार्यक्षेत्र में वर्तमान में कार्यरत क्षेत्रीय एजेंसियां तथा राज्य के विभिन्न जिलों में निवास करने वाली सभी विशेष पिछड़ी जनजातियाँ (बैगा, भारिया और सहरिया) शामिल हैं। इन प्राधिकरणों के गठन से इन समुदायों के लोगों को राज्य स्तर पर नीतिगत निर्णयों और राजनीतिक मुद्दों पर निर्णय लेने का अधिकार प्राप्त होता है।
- निर्णयों में प्रतिनिधित्व होगा जिससे विभिन्न विकास एवं कल्याण विभागों के बीच बेहतर समन्वय और एजेंसी सुनिश्चित होगी।
- प्राधिकरण एजेंसियों के कार्यक्षेत्र से बाहर विशेष पिछड़ी जनजातियों के लिए संचालित योजनाओं के संबंध में आवश्यक सिफारिशें कर सकेगा।

तालिका मध्य प्रदेश की तीन विशेष पिछड़ी जनजातियों के बारे में जानकारी प्रदान करती है:

क्रमांक	नाम	जनसंख्या	गांव	विकास खंड	ज़िला	आवसीय क्षेत्र
1	बैगा	1, 31, 425	1, 143	22	मण्डला, शहडोल, डिंडोरी, उमरिया, अनुपपुर, बालाघाट (बैहर)	6
2	सहरिया	4, 17, 171	1, 159	26	ग्वालियर, चंबल क्षेत्र के सभी जिले	8
3	भरिया	2, 012	12	1	पातालकोट, जिला छिंदवाड़ा	1
कुल	5, 50, 608	2, 314	49	15		

सहरिया जनजाति

- सहरिया, जिसे सहर, सेहरिया या सहरिया के नाम से भी जाना जाता है, मुख्य रूप से भारत के मध्य प्रदेश राज्य में रहने वाला एक जातीय समूह है।
- मुख्य रूप से मध्य प्रदेश के मुरैना, श्योपुर, भिंड, ग्वालियर, दतिया, शिवपुरी, विदिशा और गुना जैसे जिलों के साथ-साथ राजस्थान के बारां जिले में पाए जाने वाले सहरिया मध्य प्रदेश में एक पिछड़ी जनजाति के रूप में एक विशेष दर्जा रखते हैं।
- सहरिया को अक्सर सम्मानपूर्वक "खुटिया पटेल" के नाम से संबोधित किया जाता है।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

विवाह का प्रकार:

सागाई विवाह	एक साधारण विवाह जिसमें लड़का और लड़की एक दूसरे से मिलते हैं, एक प्रकार का व्यवस्थित विवाह।
झगड़ा विवाह	विवाहित महिला अपने प्रेमी के साथ भाग जाती है और फिर पंचायत उनके विवाह का फैसला करती है, जिसके लिए उसके पूर्व पति को मुआवजा देना पड़ता है।
झार-फीरा विवाह	एक विवाह जिसमें एक लड़का और लड़की भाग जाते हैं और फिर पंचायत उनकी विवाह को अंतिम रूप देती है।
खेका विवाह	एक विवाह जिसमें एक लड़की का अपहरण कर लिया जाता है और उसे विवाह के लिए मजबूर किया जाता है।
विधवा विवाह	बड़े भाई की पत्नी अपने मृत पति के छोटे भाई से विवाह करती है।

राजनीतिक व्यवस्था:

- सहरिया गांवों में पारंपरिक और आधुनिक दोनों तरह के राजनीतिक संगठन मौजूद हैं।
- पारंपरिक संगठन में 'सहराना' जैसे वंशानुगत पद और 'पटेल, बरहाई, प्रोधान और जानकार' जैसे अधीनस्थ शामिल हैं।
- पारंपरिक राजनीतिक संगठन धीरे-धीरे लुप्त हो रहे हैं, तथा निर्वाचित नेताओं वाले आधुनिक राजनीतिक संगठन की ओर बदलाव हो रहा है।
- आधुनिक नेताओं का चयन शिक्षा, संचार कौशल और अनुभव के आधार पर किया जाता है।
- खैर के पेड़ों से कला बनाने में विशेषज्ञता।

लोक देवता:

लोक देवता	विवरण
राजस्थानी संत तेजाजी	लोक देवता
ठाकुर देव	ग्राम देवता
भैरोदेव	पुत्र प्राप्ति की कामना पूर्ण होती है
नाहरदेव	जंगल में सिंह देवता के रूप में पूजा जाता है
परितदेव	मृत्यु संस्कार से सम्बंधित
दारेथ देव	बच्चे के सिर मुंडवाने के लिए देवता
कारसदेव	भगवान जो विष को सोख लेते हैं
नरसिंहदेव	मैया गोत्र के लिए कुल देवता
भूमियादेव	ग्राम संरक्षक देवता
हीरमानदेव	साँप के काटने पर पूजा की जाती है
बिजासन	बच्चों की रक्षा करते हैं
कैला माता	हनुमान का एक रूप माना जाता है, विपत्तियों से बचाते हैं

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

संस्कार:

- धारी संस्कार प्रचलित है, जिसमें मृत्यु के तीसरे दिन राख बिखेरी जाती है।

त्योहार:

- दशहरा, दिवाली, होली, रक्षा बंधन, गणेश चतुर्थी और तीजन नवमी जैसे हिंदू त्योहार मनाए जाते हैं।

बैगा जनजाति:

• अर्थ और उत्पत्ति:

- बैगा के पर्यायवाची शब्द: भुइयां (भुई, धरती) और भूमिज (भूमि, धरती)।
- पंडा के नाम से भी जाने जाते हैं, जो गांव के पुजारी और डॉक्टर के रूप में काम करते हैं।
- रसेल और हीरालाल बैगा को भूमिया की एक शाखा मानते हैं।

• भौगोलिक स्थिति:

- डिंडोरी, डिंडोरी, बालाघाट, अमरकंटक पहाड़ी क्षेत्र के बागाचक क्षेत्र में।
- प्रमुख उपजातियाँ: नरोतिया, भरोतिया, रामेना, कठमैना, रायमैना, बिंझवार।
- बस्तियों को वन ग्राम कहा जाता है; अधिवास को पूर्वा कहा जाता है।



Baiga Tribes of Madhya Pradesh

विवाह के प्रकार:

मंगनी विवाह	विवाह समारोह के समापन पर बिलमा नृत्य का आयोजन किया जाता है, जिसके साथ शराब का सेवन भी किया जाता है।
उठवा विवाह	इस रस्म में विवाह का पूरा खर्च लड़के वाले उठाते हैं। इसमें लड़की के पिता, रिश्तेदार, मित्र सभी लड़के वालों के यहां पहुंच जाते हैं। दोनों पक्षों की ओर से सगाई की तारीख तय की जाती है। इसके बाद विवाह की तारीख निश्चित होती है और सभी रस्मों के साथ विवाह सम्पन्न होता है।
पैठुल विवाह	लड़की साहसपूर्वक लड़के के घर में प्रवेश करती है, तथा उस लड़के पर हल्दी छिड़कती है जिससे वह विवाह करना चाहती है।
चोर विवाह	लड़का और लड़की भाग जाते, जिसके बाद पंचायत ने उनकी विवाह के संबंध में निर्णय लिया।

सामाजिक स्थिति:

खान-पान और जीवनशैली

- बैगा लोग "बेवार" नामक खेती करते हैं और उन्हें वन संसाधनों का सहज ज्ञान होता है। सिकिया बाजरा, मशरूम और पेज नामक मिश्रण उनके आहार का मुख्य हिस्सा हैं। महुआ, महुआ के पेड़ से निकाला जाता है, जिसका सांस्कृतिक महत्व है और इसे त्योहारों के दौरान खाया जाता है।

पंचायत व्यवस्था:

पद	जिम्मेदारियाँ
मुखिया (मुखिया)	समग्र शासन और निर्णय लेने की देखरेख करना
मुकदम (सहायक)	विभिन्न प्रशासनिक कार्यों में मुखिया की सहायता करना

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

दीवान (सहायक)	प्रशासनिक कार्यों में मुखिया को सहयोग प्रदान करना
समरथ	सामुदायिक कार्यों के लिए धन (चंदा) एकत्रित करना
कोटवार	सरकार और जनजाति के बीच संपर्क सूत्र के रूप में कार्य करना
दवार	पुरोहित के रूप में सेवा करना, चिकित्सा सहायता प्रदान करना

लोक नृत्य:

लोक नृत्य	विवरण
परधोनी नृत्य	लड़कों की बारात आने पर लड़कियों द्वारा किया जाता है।
बिलमा नृत्य	बारात के दौरान दूल्हे पक्ष द्वारा किया गया प्रदर्शन
सैला नृत्य	छड़ी नृत्य, केवल पुरुषों के लिए; महिलाएं इसमें भाग नहीं लेतीं
सुआ नृत्य	महिलाएं अपने सिर पर मिट्टी का तोता लेकर चलती हैं और उसके साथ प्रदर्शन करती हैं
थापटी	नृत्य जिसमें हाथ से ताली बजाना शामिल है।

लोक देवता:-

लोक देवता	विवरण
नारायण देव	कुलदेवता, सुअर बलि के माध्यम से सम्मानित
ठाकुर देव	सुरक्षा हेतु हैसराय/महुआ वृक्ष के नीचे ग्राम देवता की स्थापना
नागेश्वर देव	साँपों के देवता
साज	पलाश का पेड़, मुख्य देवता
बाघेश्वर देवता	कृषि देवता, जिनकी हर वर्ष पूजा की जाती है, उन्हें बाघ के रूप में दर्शाया जाता है।
बंजारिन देवी	वन की देवी

त्यौहार:

- बीज बोने से पहले मनाया जाने वाला **बिदरी**।
- सावन की अमावस्या के दिन **हरेली**।
- छेरता, पोला, नर्बदा और अन्य महत्वपूर्ण त्यौहार हैं।

बैगा जनजाति की आर्थिक विशेषताएँ:

- स्थानांतरित खेती: बैगा जनजातियाँ '**बेवार**' या '**दहिया**' खेती करती हैं, जो स्थानांतरित खेती का एक रूप है।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

भारिया जनजाति:

परिचय:

- भारिया, जिसका अर्थ है ज्ञान का अभाव, जिसे भूमिया के नाम से भी जाना जाता है, मुख्य रूप से भार ढोने के काम में लगे होते हैं।
- द्रविड़ प्रजाति से संबंधित
- 1981 की जनगणना में भारिया बहुल पातालकोट को जंगलों का जंगल कहा गया था।
- आदिम जनजाति के रूप में भी जाना जाता है।

भारिया जनजाति जनसंख्या (2011 जनगणना):

- उपसमूह: भूमिया, भुईहार भूमिया, भूमिया, भरिया, पलिहा, पांडो
- कुल जनसंख्या: 1, 93, 230

जिलों के अनुसार जनसंख्या वितरण:

- कटनी: 64, 363
- पन्ना: 38, 465
- छिंदवाड़ा: 31, 847
- जबलपुर: 23, 875

कुल अनुसूचित जनजाति जनसंख्या में हिस्सा:

- 1981 में 1.7% से घटकर 2011 में 1.3% हो गई।
- दशकीय वृद्धि (2001-2011):
 - भारिया जनसंख्या वृद्धि दर: 26.7%
- PVTGs वृद्धि दर: कुल जनसंख्या (20.3%) और कुल ST जनसंख्या (25.2%) के संगत आंकड़ों से अधिक या समान दर।

भौगोलिक स्थिति:

- छिंदवाड़ा जिले के तामिया विकासखंड के पातालकोट में निवास करते हैं।
- जबलपुर में सबसे बड़ी आबादी, छिंदवाड़ा में गोंड के साथ सह-अस्तित्व में।

पातालकोट के भारिया जनजाति का लिंगानुपात:

- प्रति 1000 पुरुषों पर 960 महिलाएँ
- कुल जनसंख्या के लिए राष्ट्रीय औसत से अधिक
- मध्य प्रदेश और भारत में आदिवासी आबादी के लिंग अनुपात से कम।

बोली:

- बोली भरियाती के नाम से जानी जाती है।

मकान या निवास:

- मकानों को 'धना' कहा जाता है।

लोक देवता:

देवता	विवरण
कुलदेवता	- बूढ़ादेव - दूल्हादेव - बरुआ - नागदेव
ग्राम देवता	- बड़ादेव या बूढ़ा गांव की रक्षा करते हैं।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

गृह रक्षक	- दूल्हादेव घर का रक्षक होता है।
मेघनाथ स्तम्भ	- गांव-गांव में पाया जाता है, होली दहन के बाद पूजा जाता है।
बाघेश्वर देवता	- इस विश्वास के साथ पूजा की जाती है कि बाघ भारिया लोगों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाते।
वार्षिक हरदौल पूजा	- हरदौल के नाम से मनाया जाता है।
विवाह का वरदान	- भीमसेन, वह देवता जिसने विवाह का वरदान दिया था।
अन्य देवता	- बजरंग बाबा - पटेल बाबा - नारायण देव आदि।
स्थानीय देवी-देवता	- जगतमई - भवानीमई - खेदपतिमई - बंजारिनमई - खेरमई।

संस्कार:

- पातालकोट की देवबिहारी घास की झाड़ू के लिए प्रसिद्ध है।
- पारंपरिक काम में पेड़ों की छाल से रस्सियाँ बनाना और उन्हें बेचना शामिल है।

त्यौहार:

- बिदरी: बुवाई से पहले धरती, बादलों और बीजों की पूजा।
- नवाखानी: मुख्य फसल और पूर्वजों की पूजा से जुड़ा त्योहार।

आर्थिक विशेषताएँ:

- **झूम खेती से स्थायी खेती की ओर परिवर्तन:** भारिया लोग, जो कभी स्थानान्तरित खेती (पोड़ू या झूम खेती) करते थे, अब स्थायी खेती की पद्धतियों को अपनाकर स्थायी जीवनशैली अपना चुके हैं।
- **प्रचुर औषधीय वनस्पति संपदा:** पातालकोट घाटी, जो उनका निवास स्थान है, में औषधीय वनस्पतियों की विविध प्रजातियाँ पाई जाती हैं।
- **हर्बल ज्ञान में प्रवीणता:** भारिया लोगों के पास जड़ी-बूटियों और औषधीय पौधों का व्यापक ज्ञान है, तथा वे पातालकोट घाटी के समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों का भरपूर उपयोग करते हैं।
- **हर्बल चिकित्सा परंपरा:** भारिया समुदाय में हर्बल चिकित्सा में कुशल चिकित्सकों को भगत के रूप में सम्मान दिया जाता है, जो पारंपरिक चिकित्सा पद्धति में योगदान देते हैं।

31 अगस्त को विमुक्त जाति (अधिसूचित जनजाति) दिवस मनाया जाता है।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

मध्य प्रदेश की जनजातीय संस्कृति

मध्य प्रदेश में जनजातियों की बोलियाँ:

- मध्यप्रदेश में 43 अनुसूचित जनजातिय समूह हैं, जिनमें से प्रत्येक की अपनी विशिष्ट भाषा है, लेकिन कई विशिष्ट समुदायों तक सीमित हो गई हैं, जैसे भीलिया, भलाली, बरेली, पट्टाल्या, गुलैया, अगरिया, बागानी, कोरकू, मवासी और नहाली।
- विभिन्न आदिवासी बोलियों के शब्द, जैसे "कोल का लहरी, " "प्रधान का प्रधानी, " "भारिया या भरिया और सहरिया या सहरानी, " और "खैरवार या कदर काहिरवारी, " आदिवासी समुदायों में भाषाई विविधता का उदाहरण देते हैं।
- जनजातीय भाषाओं में भाषा परिवर्तन की गतिशील प्रकृति एक आकर्षक घटना है जिसे रोका नहीं जाता।

बोली	विवरण
कोरकू बोली	- यह एक ऑस्ट्रोएशियाटिक भाषा है, जिसे कोरकू, कुर्कू या मुवासी के नाम से भी जाना जाता है। "कोरकू" नाम "कोरो-कू" से लिया गया है, जहाँ "-कू" बहुवचन को दर्शाता है,
बैगानी बोली	- बैगा जनजाति से जुड़ी बैगानी बोली बोलते हैं। - जिसकी कोई लिखित लिपि नहीं है। - बैगानी बोली का भौगोलिक वितरण मंडला, बालाघाट, शहडोला, अनूपपुर और छत्तीसगढ़ के सीमावर्ती क्षेत्रों तक विस्तृत है।
भारियाती बोली	- भारिया लोगों द्वारा बोली जाती है। - छिंदवाड़ा, सिवनी और नरसिंहपुर जैसे विशिष्ट क्षेत्रों में बोली जाती है। - मुख्य रूप से पातालकोट क्षेत्र में बोली जाती है। - भाषा को विभिन्न गाँवों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है, जैसे 'पारसी, ' 'भारिया, ' या 'भरियाती।'
भील बोली	- भीली भील भाषा परिवार से संबंधित है। - यह भाषा देवनागरी लिपि के एक रूप में लिखी जाती है। - भीली के वैकल्पिक नामों में भगोरिया, भील, भीलबारी, भीलबोली, भीला, विल, भिलोड़ी और लेंगोटिया शामिल हैं।
गोंडी बोली	- दक्षिण-मध्य द्रविड़ भाषा परिवार के अंतर्गत वर्गीकृत, - कुल गोंडी भाषी जनसंख्या 2, 713, 790, - गोंडी लिपि विशिष्ट है, दाएं से बाएं ओर लिखी जाती है, जिससे यह उर्दू के अलावा इस अभिविन्यास का पालन करने वाली कुछ लिपियों में से एक बन जाती है। - आंध्र प्रदेश में बोली जाने वाली गोंडी को बोलचाल की भाषा में "तेलुगु गोंडी" के रूप में जाना जाता है, जबकि महाराष्ट्र में इसे "मराठी गोंडी" कहा जाता है।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

हस्तशिल्प

हस्तशिल्प	विवरण
बाटिक प्रिंट (भेरोगढ़ उज्जैन):	- बाटिक प्रिंट मोम-प्रतिरोधी रंगाई और छपाई का एक प्राचीन शिल्प है। - इसकी उत्पत्ति 2000 साल पहले हुई थी, जो मुगल काल के दौरान लोकप्रिय हुई।
नंदना प्रिंट (तारापुर गांव, नीमच):	- भील जनजाति के मध्य प्रचलित, - नंदना ब्लॉक प्रिंट में गहरे रंगों में रूपांकनों की संरक्षित व्यवस्था होती है - लोकप्रिय रूपांकनों में मिर्च, चंपाकली (मैगनोलिया कली), अंबा (आम), और जालम बूटा (लता का जाला) शामिल हैं - मध्य प्रदेश के नीमच जिले के तारापुर गाँव में प्रचलित है।
पाटनगढ़ गोंड पेंटिंग	- मध्य प्रदेश के डिंडोरी में स्थित पाटनगढ़ अपनी अनूठी गोंड चित्रकला के लिए प्रसिद्ध है। - गोंड कला की एक विशिष्ट शैली है, जो ऐतिहासिक रूप से पाटनगढ़ में कलाकारों के घरों की दीवारों की शोभा बढ़ाती है।
बाघ पेंटिंग:	- खत्री समुदाय बाघ प्रिंटिंग को संरक्षित करने और बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। - राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता उमर फारूक खत्री 'बाघीगो' नामक एक परियोजना पर काम किया है। - इसमें बाघ प्रिंट, शिबोरी (रंगाई की जापानी कला) और इंडिगो का मिश्रण शामिल है। 'बाघीगो' एक रचनात्मक संयोजन है जिसे अमेरिका स्थित एक ग्राहक ने सुझाया है।
पिथोरा पेंटिंग	गोंडवाना क्षेत्र: - मंडला, बालाघाट, छिंदवाड़ा, सिवनी और शाडोल को शामिल करने वाला सांस्कृतिक केंद्र। - अद्वितीय और लोकप्रिय गोंड कला की उत्पत्ति। पिथोरा पेंटिंग: - गोंड कला के साथ सह-अस्तित्व में रहने वाली प्राचीन और लोकप्रिय कला। - चमकीले रंग और एनिमेटेड आकृतियाँ जनजाति की हर्षित भावनाओं को दर्शाती हैं। - घोड़े देवी-देवताओं का प्रतिनिधित्व करते थे, जो कटाई और उर्वरता को दर्शाते थे। चिटेरा कला: - बुन्देलखण्ड क्षेत्र, जिसमें ग्वालियर, दतिया, टीकमगढ़, छतरपुर, जबलपुर, सागर, दमोह और आसपास के क्षेत्र शामिल हैं।
उज्जैन की पेपर माचे कला:	- पेपर माचे एक कलात्मक तकनीक है जिसमें विभिन्न कलाकृतियाँ और सजावटी सामान बनाने के लिए चिपकने वाले पदार्थ के साथ मिश्रित कागज के गूदे का उपयोग किया जाता है। - इस शिल्प की वैश्विक उपस्थिति है और यह विशेष रूप से मध्य प्रदेश के उज्जैन में प्रचलित है।
बत्तो बाई गुड़िया कला	- ग्वालियर, मध्य प्रदेश से, शिल्पकार बत्तो बाई के नाम पर। - लत्ता, कागज, मिट्टी, कपास, तार और पारंपरिक कपड़े का उपयोग करके हस्तनिर्मित

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

ढोकरा कला	- बैतूल जिले में गोंडों की एक उप-जनजाति, भारेवास समुदाय द्वारा प्रचलित। - गैर-लौह धातु ढलाई शिल्प, खोई हुई मोम कास्टिंग तकनीक का उपयोग करते हुए।
मध्य प्रदेश में बांस कला	जनजातीय समुदाय, विशेषकर बैतूल जिले की तुरी जनजाति, बांस शिल्प में अपनी विशेषज्ञता के लिए प्रसिद्ध हैं।
मांडना कला:	- मध्य प्रदेश के सबसे पुराने आदिवासी समुदायों में से एक, मीना जनजाति से उत्पन्न। - मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा घरों की दीवारों और फर्श पर बनाई गई।
गोदना (टैटू): (बैगा जनजाति कला)	- मध्य प्रदेश में बैगा जनजाति के बीच प्रचलित गोदना उनकी जीवनशैली का अभिन्न अंग है। - टैटू का प्रचलन बहुत अधिक है और इसके मूल के बारे में मिथक और लोककथाएँ प्रचलित हैं।
लकड़ी के शिल्प:	- धार, झाबुआ और निमाड़ जैसे भील-बहुल क्षेत्रों में "गाथा" स्मारक स्तंभों को गढ़ने का काम किया जाता है। - लकड़ी के शिल्प में पीसने वाले पत्थर, अनाज मापने के स्टैंड, नक्काशीदार आकृतियों वाले दरवाजे और जटिल नक्काशीदार चाकू और कंघी शामिल हैं। - आदिवासी भील लकड़ी के शिल्प अलीराजपुर और झाबुआ में प्रमुख हैं, जो मुख्य केंद्र के रूप में कार्य करते हैं।
धातु शिल्प:	- मध्य प्रदेश में धातु कला का एक समृद्ध इतिहास है, यह परंपरा लगभग उतनी ही पुरानी है जितनी कि यह भूमि। - शिवपुरी जिले में करेरा अपनी कलात्मक और बेहतरीन लोहे की कारीगरी के लिए प्रसिद्ध है, जो स्थानीय लोहारों की महारत को दर्शाता है।
पेपर माच शिल्प:	मध्य प्रदेश के भोपाल, उज्जैन, ग्वालियर और रतलाम क्षेत्रों के कलाकार, विशेषकर नागवंशी समुदाय, पेपर माच बनाने में निपुण हैं।
पत्थर शिल्प:-	टीकमगढ़ के निकट 'कारी' बहुरंगी संगमरमर के बर्तन बनाने के लिए जाना जाता है।

मृगनयनी:-

- मृगनयनी सरकार द्वारा प्रायोजित एम्पोरियमों की एक श्रृंखला है और मध्य प्रदेश के 'हस्तशिल्प और हथकरघा विकास निगम लिमिटेड' की एक इकाई है।

No.	शिल्प	क्षेत्र	विवरण
1	मिट्टी की मूर्तिकला	झाबुआ, मंडला, बैतूल	मिट्टी से बर्तन, खिलौने और मूर्तियाँ बनाने की प्राचीन परंपरा, झाबुआ, मंडला और बैतूल क्षेत्रों में प्रमुखता से प्रचलित है।
2	लकड़ी की नक्काशी	सम्पूर्ण म.प्र	कुशल कारीगर, विशेषकर गोंड और बैगा, विभिन्न प्रकार की लकड़ियों का उपयोग करके मूर्तियाँ, दरवाजे और फर्नीचर जैसी शिल्पकलाएं बनाते हैं।



मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

3	बांस और बेंत की कला	बैतूल, उज्जैन	बांस और बेंत का उपयोग करके कारीगर कुर्सियाँ, मेजें, लैंप बनाते हैं। भील-बहुल क्षेत्र गाथा शिल्प के लिए जाने जाते हैं।
4	लौह शिल्प	सम्पूर्ण म.प्र.	लोहार लोहे को सजावटी लैंप, जानवर और उपयोगी वस्तुओं में ढालते हैं। शिवपुरी में करेरा कलात्मक लोहे के काम के लिए प्रसिद्ध है।
5	पेपर माचे शिल्प	भोपाल, उज्जैन, ग्वालियर	कुशल कलाकार, विशेष रूप से नागवंशी समुदाय के, कागज़ की लुगदी का उपयोग करके मूर्तियाँ, पक्षी, टोकरियाँ और सजावटी सामान बनाते हैं।
6	पत्थर की नक्काशी	सम्पूर्ण म.प्र.	जनजातीय कलाकार पत्थर की नक्काशी के माध्यम से आध्यात्मिकता को अभिव्यक्त करते हैं, ग्वालियर बलुआ पत्थर पर जाली के काम के लिए जाना जाता है।
7	मृगनयनी एम्पोरियम	सम्पूर्ण म.प्र.	सरकार द्वारा प्रायोजित एम्पोरियम, मध्य प्रदेश के कुशल कारीगरों द्वारा निर्मित विविध प्रकार की हस्तशिल्प वस्तुओं का प्रदर्शन और विक्रय करते हैं।
8	शिल्प बाजार	भोपाल, इंदौर, जबलपुर, पचमढ़ी, ग्वालियर	हस्तशिल्प एवं हथकरघा विकास निगम द्वारा आयोजित यह महोत्सव कारीगरों को अपने शिल्प प्रदर्शित करने और बेचने के लिए एक मंच प्रदान करता है।
9	माहेश्वरी साड़ी	महेश्वर	महेश्वर की पारंपरिक हस्तनिर्मित साड़ियाँ, जो अपने जीवंत रंगों और जटिल डिजाइनों के लिए जानी जाती हैं।
10	चंदेरी साड़ी	चंदेरी	चौड़े बॉर्डर, बड़े रेशमी और सूती धागे और जटिल डिजाइन वाली साड़ियां चंदेरी साड़ियों को अद्वितीय और आकर्षक बनाती हैं।

जनजातीय गीत:

स्वांग और गम्मत	यह गीत गोंड जनजाति द्वारा विवाह के अवसर पर गाया जाता है।
रामायणी, पांडवी	गोंड जनजाति द्वारा गाया जाता है (रामायण और महाभारत के प्रसंग गाए जाते हैं)।
फाग गायन	मध्य प्रदेश में होली के अवसर पर सभी जनजातियों द्वारा प्रमुखता से गाया जाता है।
बिरहा गायन	अहीर जाति, तेली जाति और गड़रिया जाति द्वारा गाया जाने वाला यह गीत प्रश्न-उत्तर शैली में गाया जाता है।
घोटुल पाटा	मुरिया जनजाति द्वारा गाया जाने वाला, यह एक प्रकार का मृत्यु गीत है, जो अंतिम संस्कार के दौरान गाया जाता है।
हुलकी पाटा	मुड़िया जनजाति द्वारा गाया जाता है।
गोंडवानी	- गोंडवानी में हिरदेशाह जैसे गोंड राजाओं की वीरतापूर्ण कहानियों का वर्णन शामिल है। - कहानी कहने का यह तरीका गोंड राजाओं से जुड़े वीरतापूर्ण कार्यों और ऐतिहासिक आख्यानो पर जोर देता है, तथा गोंड समुदाय की सांस्कृतिक विरासत और इतिहास को संरक्षित करने और आगे बढ़ाने का एक साधन है।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

आदिवासी नाट्य

माओपाटा	• मुरिया जनजाति द्वारा • शिकार की पारंपरिक कहानी • चेहरे पर कालिख, मिट्टी और राख लगाई जाती है।
खम्ब	• कोरकू जनजाति द्वारा • कोरकू लोग स्तंभ के चारों ओर नाटक करते हैं। • यह प्रदर्शन रावण के पुत्र मेघनाथ की याद में किया जाता है, जिसने कोरकू लोगों को बचाया था।
छाहुर	• बाघेलखण्ड क्षेत्र में • दिवाली के दौरान अहीर, तेली और कुम्हार जाति द्वारा।
रामायणी	• रामायणी में रामायण के प्रसंगों का वर्णन करने वाले गीत शामिल होते हैं। • ये नाटक संभवतः रामायण के प्राचीन महाकाव्य को संरक्षित करने और साझा करने के लिए एक सांस्कृतिक और कलात्मक माध्यम के रूप में काम करते हैं। • प्रदर्शनों में गायन, कहानी सुनाना या कलात्मक अभिव्यक्ति के अन्य रूप शामिल होते हैं।
पंडवानी	• पंडवानी में ऐसे गीत शामिल हैं जो पांडवों की कहानी का वर्णन करते हैं। • रामायणी के समान, पंडवानी गीतों के माध्यम से कहानी कहने का एक पारंपरिक रूप है। • यह कथा महाभारत में पांडवों द्वारा सामना किए गए साहसिक कार्यों और चुनौतियों का अनुसरण करती है।

मध्य प्रदेश में जनजातीय नृत्य:

कर्मा नृत्य	• जनजाति/क्षेत्र: गोंड, बैगा, कुम्हार, कंवर, विरहोर [मंडला, मध्य प्रदेश] • प्रदर्शन: बिहार, ओडिशा, उत्तर प्रदेश • नृत्य शैली: जीवन की हर गतिविधि, स्त्री-पुरुष के बीच प्रेम की अभिव्यक्ति • वाद्य यंत्र: मांदल • विशेषता: करमा लंगड़ा, करमा लहकी, करमा झूमर, करमा ठाढ़ा, करमा रागिनी
सैला नृत्य	• जनजाति/क्षेत्र: गोंड, बैगा, परधान • अवसर: शरद पूर्णिमा के बाद • नृत्य शैली: पुरुष और महिलाएं परक/छड़ी पकड़कर खुशी और आनंद व्यक्त करते हैं। • वाद्ययंत्र: मांदल • विशेषता: पुरुष और महिलाएं समान भाग लेते हैं।
परधौनी नृत्य	• जनजाति/क्षेत्र: बैगा • अवसर: बारात के आगमन के समय • वाद्ययंत्र: नकेर [नगाड़ा] और टिमकी

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

फाग नृत्य	- जनजाति/क्षेत्र: गोंड और बैगा - अवसर: होली के अवसर पर - नृत्य शैली: युवा और वृद्ध आदिवासी उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। लकड़ी के मुखौटे और गौरैया मनोरंजन को बढ़ाते हैं।
भगोरिया नृत्य	- जनजाति/क्षेत्र: भील [झाबुआ, अलीराजपुर, धार, बड़वानी, आदि] - अवसर: होली के अवसर पर - नृत्य शैली: भील समुदाय में वीरता और प्रेम को व्यक्त करते हुए धनुष-बाण लिए रंग-बिरंगे कपड़ों में सजी युवतियाँ। - वाद्ययंत्र: ढोल, मांदल, थाली, टिमकी - विशेषता: इस नृत्य के माध्यम से युवक-युवतियाँ हरण विवाह के लिए जीवनसाथी चुनते हैं।
थापटी नृत्य	- जनजाति/क्षेत्र: कोरकू - अवसर: वैशाख माह में - नृत्य शैली: पुरुष और महिला दोनों भाग लेते हैं। पुरुष सूती तौलिया [पंचा] पकड़ते हैं, महिलाएं नृत्य करते समय चटकोरा खेलती हैं - वाद्य यंत्र: ड्रम [ढोलक] और बांसुरी [बांसुरी] - विशेषता: थापटी नृत्य के अलावा, कोरकू ढांढल, चाचरी, फागती, नृत्य करते हैं।
दहका नृत्य	- जनजाति/क्षेत्र: कोल [बघेलखंड] - नृत्य शैली: पुरुष गायक और गायिकाएँ, साथ ही महिलाएँ भी गाती और नृत्य करती हैं। गीतों में प्रश्न और उत्तर होते हैं। - वाद्ययंत्र: 5-6 ढोल, झांझ - विशेषता: नृत्य करते समय महिलाएँ तेज़ गति से पैर और हाथ की उंगलियाँ चलाती हैं।
लहंगी नृत्य	- जनजाति/क्षेत्र: सहरिया [ग्वालियर संभाग] - अवसर: श्रावण के महीने में [रक्षाबंधन पूर्णिमा के अगले दिन, तेजाजी पूजा के अवसर पर, और एकादशी उत्सव पर] - नृत्य शैली: समूह नृत्य, महिलाएं गुजरियाओं के साथ चलती हैं - वाद्ययंत्र: ढोलक
दुल दुल घोड़ी नृत्य	- जनजाति/क्षेत्र: सहरिया ग्वालियर संभाग - अवसर: त्यौहार - वाद्ययंत्र: ढोल, नकार, जीका - विशेषता: यह नृत्य राजस्थान से आया है
भड़म सैलम नृत्य	जनजाति/क्षेत्र: भारिया [पातालकोट, छिंदवाड़ा]

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

	• अवसर: विवाह के दौरान • नृत्य शैली: महिलाओं द्वारा समूह नृत्य • वाद्ययंत्र: टिमकी, ढोलक, मृदंग, बांसुरी • अन्य नाम: गन्नु साही, भरोट, अंगम
अटारी नृत्य	• जनजाति: कोरकू • अवसर: ज्येष्ठ माह • विषय-वस्तु: प्रेम गीत • वाद्य यंत्र: ढोलक, टिमकी, बांसुरी, मृदंग
ददरिया नृत्य	• जनजाति: बैगा • अवसर: दशहरा • थीम: प्रेम कविताएँ • प्रथा: बैगा जनजाति की युवतियाँ नृत्य करते समय जीवनसाथी चुनती हैं • स्वतंत्रता: प्रतिभागी अपनी पसंद का जीवनसाथी चुनने के लिए स्वतंत्र हैं।
दादर नृत्य	• भाग लेने वाली जातियाँ: कोले, कोतवार, कहार, आदि - दादर से जुड़ी जातियाँ • क्षेत्र: बघेलखंड • कलाकार: मुख्य रूप से पुरुषों द्वारा खुशी के अवसर पर किया जाने वाला नृत्य • अभिमुखीकरण: पुरुष-उन्मुख नृत्य, जिसमें महिलाओं के वेश में पुरुषों द्वारा नृत्य किए जाने के उदाहरण हैं • वाद्य यंत्र: ढोल, शहनाई, ढोलक, ढपली • विवाह समारोह: कोल और कोटवार जातियों में दादर नृत्य को विवाह समारोहों में शामिल किया जाता है। इस नृत्य के दौरान बाराती और घराती दोनों ही पक्ष संगीत और वाद्य यंत्रों का उपयोग करते हैं।
बरेदी नृत्य	• अहीर जाति से सम्बंधित है। • बुंदेलखंड क्षेत्र की किसान-चरवाहा संस्कृति का अभिन्न अंग। • लचीला नृत्य रूप, एकल और समूह दोनों में किया जाता है। • बरेदी की गायों को चराने वाले लोग दिवाली के दौरान घर-घर जाते हैं, नृत्य करते हैं और बदले में दिवाली का इनाम पाते हैं। • नृत्य समारोह दिवाली के दूसरे दिन से शुरू होकर पूरे 15 दिनों तक चलते हैं।
सुआ नृत्य	• जनजातियाँ: मध्य प्रदेश में बैगा जनजाति का मुख्य नृत्य। • अवसर: गंगा नदी की पूजा का स्मरण और मृतकों को श्रद्धांजलि। • कलात्मक तत्व: इसमें 'द' और 'श' ध्वनियों का उपयोग शामिल है, जो नृत्य में लयबद्ध और सांस्कृतिक आयाम जोड़ता है।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

रीना, बिरछा, बधौनी, बिरहा करमा, सैला, गंचू	• गोंड जनजाति
बलमा, सैला, सुआ, परधौनी, ददरिया	• बैगा
भड़म, सैतम, अहिराई	• भरिया
भागोरिया	• भील
दहका	• कोल
दुल दुल घोड़ी, रागिनी	• सहरिया
अटारी, चितकोरा, थपकी, खंभ, स्वांग	• कोरकू
हुल्की, मंदारी, छेरता	• मुड़िया
भड़म, सैतम	• भरिया
गुदम्बाजा	• जनजाति: धूलिया, इसमें प्रयुक्त वाद्य यंत्र लोकबाघ है।
गरबा और डांडिया	• जनजाति: बंजारा, दशहरा के अवसर पर किया जाता है
रागिनी	• बुन्देलखण्ड क्षेत्र में प्रचलित
खंभ स्वांग	• जनजाति: कोरकू; दिवाली के बाद मेघनाद खंभ के पास नृत्य किया जाता है।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में मध्य प्रदेश की जनजातियों का योगदान

विद्रोह का नाम	विवरण
खोंड विद्रोह (1837-1856)	- खोंड विद्रोह (1837-1856) उड़ीसा, झारखंड, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में हुआ था। - चक्र बिसोई के नेतृत्व में, खोंडों ने अपनी धार्मिक प्रथाओं में ब्रिटिश हस्तक्षेप का विरोध किया, जिसमें 'मरिया' (मानव बलि की प्रथा) बलिदान को रोकना भी शामिल था। - आर्थिक शिकायतें, जैसे कि नए कर और जमींदारों की उपस्थिति ने विद्रोह को बढ़ावा दिया। - अन्य आदिवासी समूहों की भागीदारी के साथ आंदोलन का विस्तार हुआ, लेकिन 1855 में बिसोई की हत्या और 1857 में राधाकृष्ण दंडसेना की फांसी के बाद, विद्रोह ने गति खो दी और अंततः फीका पड़ गया।
भील विद्रोह	- भील विद्रोह (1817-19) मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात में खानदेश पहाड़ी श्रृंखलाओं में हुआ, जो 1818 में ब्रिटिश कब्जे के प्रतिक्रिया में हुआ था। - नेतृत्वकर्ता: सेवाराम - भील, स्वदेशी जनजातियाँ, भूमि और वन अधिकारों के नुकसान के कारण अंग्रेजों को बाहरी मानते थे और उनके शासन का विरोध करते थे। - यह विद्रोह 1825, 1836 और 1846 में जारी रहा, जिसने ब्रिटिश प्रभुत्व के खिलाफ भीलों के लगातार प्रतिरोध और उनकी स्वायत्तता की रक्षा को उजागर किया।
कोल विद्रोह	- कोल विद्रोह (1831-32) छोटानागपुर क्षेत्र में हुआ, जो मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में फैल गया। ब्रिटिश घुसपैठ और कोल प्रमुखों पर कानून लागू करने से जनजातीय तनाव पैदा हुआ। - व्यापारियों और ब्रिटिश कानून से पारंपरिक प्रमुखों की शक्ति को खतरे के साथ-साथ बसने वालों और आदिवासी भूमि के हस्तांतरण ने नाराजगी को बढ़ावा दिया। - यह विद्रोह बाहरी लोगों के खिलाफ सामूहिक असंतोष और जनजातीय स्वायत्तता की रक्षा के प्रयासों की प्रतिक्रिया थी।
नायकदा आंदोलन:	- वर्ष: 1868 - आंदोलन का नाम: नायकदा आंदोलन - प्रतिभागी: मध्य प्रदेश और गुजरात के आदिवासी उद्देश्य: - ब्रिटिश उत्पीड़न का विरोध करना - जातिगत भेदभाव को चुनौती देना - धर्म राज (धार्मिक शासन) की स्थापना करना - पारिणाम: आदिवासियों के बीच एकता को बढ़ावा दिया तथा भारत में मूल निवासियों के अधिकारों के लिए भविष्य के संघर्षों की नींव रखी।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

भूमि हड़प आंदोलन (1969-70)	- बिहार, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश की जनजातियाँ इस आंदोलन में शामिल हुईं। - इस ऐतिहासिक काल में आदिवासी आंदोलन शोषण, उत्पीड़न और औपनिवेशिक नीतियों के खिलाफ एक लचीली प्रतिक्रिया को दर्शाते हैं।
राजमोहिनी देवी और आदिवासी आंदोलन	- मांझी जनजाति (गोंड समूह), मध्य प्रदेश की। 1951 में राजमोहिनी देवी आंदोलन का नेतृत्व किया। - सरगुजा और आस-पास के इलाकों में आदिवासियों के बीच प्रभावशाली। - बापू धर्म सभा आदिवासी सेवा मंडल की स्थापना की। 1960 तक लगभग 80,000 अनुयायी थे। - गांधीवादी आदर्शों से प्रेरित। - शराब पीने, अंधविश्वासों के खिलाफ वकालत की और महिलाओं की मुक्ति के लिए काम किया।
भारत छोड़ो आंदोलन में घोड़ाडोंगरी - 1942	- भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बैतूल एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभरा, जिसमें सार्वजनिक संपत्ति और सरकारी रिकॉर्ड को जलाने सहित बढ़ते तनाव और दंगों की घटनाएं शामिल थीं। घोड़ाडोंगरी केंद्र में: - बैतूल के भीतर, घोड़ाडोंगरी ने सामने आने वाली घटनाओं में एक केंद्रीय भूमिका निभाई। 19 अगस्त, 1942 को, स्वतंत्रता सेनानियों ने एकत्र होकर घोड़ाडोंगरी में स्थानीय लकड़ी के डिपो को आग लगाने का रणनीतिक निर्णय लिया।
घोड़ा-डोंगरी जंगल सत्याग्रह (1930)	- आदिवासी बहुल बैतूल जिला स्वतंत्रता आंदोलन का मुख्य केंद्र था और यहां के वनवासियों ने पराधीनता के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। 1930 के जंगल सत्याग्रह के दौरान बैतूल के आदिवासी समुदाय ने विद्रोह की मशाल उठा ली। - शाहपुर के निकट बंजारी दल के गंजन सिंह कोरक विद्रोही आदिवासियों के नेता थे। - जब पुलिस गंजन सिंह को गिरफ्तार करने बंजारी ढाल पहुंची तो आदिवासियों ने कड़ा प्रतिरोध किया। - पुलिस ने वनवासी समुदाय पर गोलियां चलाई, जिसमें "कोमा गोंड" मौके पर ही शहीद हो गए। गंजन सिंह पुलिस की घेराबंदी तोड़कर भाग निकले। - दूसरी ओर, जम्बाड़ा में आदिवासियों को पुलिस के चंगुल से मुक्त कराने के लिए एकजुट हुई भीड़ पर पुलिस द्वारा किए गए क्रूर बल प्रयोग में रामू और मकडू गोड़ शहीद हो गए।
दुरिया जंगल सत्याग्रह (1930)	1930 में जब गांधीजी ने दांडी मार्च के माध्यम से नमक सत्याग्रह किया, तो सिवनी के कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने दुर्गाशंकर मेहता के नेतृत्व में जंगल सत्याग्रह किया। - इस सत्याग्रह में सिवनी से 9-10 मील दूर स्थित सरकारी वन चंदन के बगीचों में घास काटना शामिल था। - सत्याग्रह की तिथि 9 अक्टूबर 1930 को सिवनी जिले के दुरिया गाँव में तय की गई, जो सिवनी से 28 मील दूर स्थित है। - कुछ स्वयंसेवक घास काटकर सत्याग्रह करने गए। पुलिस इंस्पेक्टर और रेंजर ने सत्याग्रहियों का समर्थन करने आई भीड़ के साथ बहुत अभद्र व्यवहार किया, जिससे जनता भड़क गई।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

	• सिवनी के डिप्टी कमिश्नर के "उन्हें सबक सिखाने" के आदेश पर पुलिस ने गोलियां चला दीं। • तीन महिलाएँ - गुड्डो वाई, रैना वाई, बेमा बाई और एक व्यक्ति विरजू गोंडू - मौके पर ही शहीद हो गए और चारों शहीद आदिवासी थे। • यह घटना मध्य प्रदेश के गिरिजन समाज में स्वतंत्रता की ज्वाला प्रज्वलित करने का सशक्त प्रमाण प्रस्तुत करती है। • इन शहीदों के अवशेष भी अंतिम संस्कार के लिए उनके परिजनों को नहीं दिए गए।
भगत आंदोलन	• राजस्थान में 1883 में पहला भील आंदोलन गोविंद गिरी के नेतृत्व में हुआ था। • इसे भगत आंदोलन के नाम से भी जाना जाता है। भील जनजाति राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ राज्यों में निवास करती है। • राणा प्रताप की शक्तिशाली सेना में उन्हें विशेष जिम्मेदारियाँ सौंपी गई थीं। • मुगल सेना के खिलाफ राणा प्रताप की सेना में पुंजा भील के सैन्य कारनामों की दूर-दूर तक चर्चा थी। • इस आंदोलन का केंद्र डूंगरपुर और बांसवाड़ा था जहाँ भील घनी आबादी में थे।
भारत छोड़ो आंदोलन	• विष्णु गोंड (बैतूल), वर्षा गोंड (बैतूल), महादेव तेली (बैतूल) जैसे आदिवासी नेताओं को अंग्रेजों ने गोली मार दी।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

मध्य प्रदेश के जनजातिय व्यक्तित्व

शंकर शाह एवं रघुनाथ शाह

राजवंशीय पृष्ठभूमि:

- गढ़ा राजवंश का हिस्सा। गढ़ा राज्य के विघटन के बाद जब मराठों ने नियंत्रण कर लिया तो जबलपुर के पास एक जागीर प्राप्त हुई।

1857 के विद्रोह में भूमिका:

- 1857 के विद्रोह के दौरान लगभग 70 वर्ष की आयु में, शंकर शाह जबलपुर की विद्रोही गतिविधियों में एक प्रमुख व्यक्ति बन गए।

विद्रोह का नेतृत्व:

- जबलपुर में विद्रोही गतिविधियों की योजना बनाने और उन्हें क्रियान्वित करने में केंद्रीय भूमिका निभाई।
- गोंड गौरव और विदेशी शासन के खिलाफ प्रतिरोध का प्रतीक बन गए।

महत्व:

- 1857 के विद्रोह के दौरान उनके साहस और नेतृत्व के लिए ऐतिहासिक वृत्तांतों के माध्यम से याद किया जाता है।
- औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ स्वदेशी समुदायों के ऐतिहासिक संघर्ष का प्रतिनिधित्व करता है।

रघुनाथ शाह

शंकर शाह के वंशज:

- राजा शंकर शाह के पुत्र, गढ़ा राजवंश वंश की विरासत को जारी रखते हुए।

विद्रोह में सक्रिय भूमिका:

- सितम्बर 1857 में जबलपुर में सुनियोजित विद्रोह में सक्रिय भाग लिया।
- विद्रोह के संबंध में सैनिकों और सरदारों के साथ चर्चा में शामिल हुए।

संकट के बीच प्रार्थना:

- अपने पिता के साथ, अपने बच्चों की सुरक्षा के लिए प्रार्थना की क्योंकि विद्रोह के दौरान तोपों से उनके बच्चों पर निशाना साधा गया था।

गिरफ्तारी और कानूनी कार्यवाही:

- 14 सितंबर, 1857 को राजा शंकर शाह और अन्य लोगों के साथ गिरफ्तार किया गया।
- ब्रिटिश शासन के खिलाफ साजिश रचने के लिए कानूनी कार्यवाही का सामना करना पड़ा।

टिप्पणी:-

- 2019 में छिंदवाड़ा विश्वविद्यालय का नाम बदला गया और इसे शंकर शाह विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है।
- शंकर शाह की पत्नी के सम्मान में छिंदवाड़ा पॉलिटेक्निक का नाम बदलकर फूल कुमारी पॉलिटेक्निक कर दिया गया।

भीमा नायक (1840-1876)

- जन्म** - 1840 में पश्चिमी निमाड़ (खंडवा), मध्य प्रदेश में।
- खाज्या नायक के बहनोई।

प्रारंभिक जीवन:

- भीमाजी 19वीं शताब्दी के दौरान बॉम्बे प्रेसीडेंसी के अंतर्गत खानदेश के यावल में रहते थे।



मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

- खानदेश, जो अपनी प्राकृतिक संपदा के लिए जाना जाता है, ने 1818 से ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा आर्थिक शोषण से प्रभावित था।
- इस शोषण ने विशेष रूप से भील जैसे आदिवासी समुदायों को प्रभावित किया, जिनसे भीमजी संबंधित थे।

विद्रोह की शुरुआत:

- भीमाजी ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ **1857 के विद्रोह** में सक्रिय रूप से भाग लिया, बॉम्बे प्रेसीडेंसी के भीतर विभिन्न स्थानों पर प्रतिरोध का नेतृत्व किया।
- उन्होंने **लगभग 10, 000 स्वतंत्रता सेनानियों** की एक सेना को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो दमनकारी कंपनी-राज को उखाड़ फेंकने के दृढ़ संकल्प का प्रतीक था।
- महाराष्ट्र के धुले जिले में भीमाजी जैसे नेताओं के नेतृत्व में भील समुदाय द्वारा किया गया जनजातीय विद्रोह ईस्ट इंडिया कंपनी के शोषण की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ।
- 1818-19 में गुरिल्ला युद्ध से विकसित संघर्ष, राज्य के खजाने को लूटने में बदल गया, जिसने 1860 तक ब्रिटिश सरकार को चुनौती दी।
- खानदेश के प्राकृतिक संसाधनों को नियंत्रित करने के ब्रिटिश प्रयासों का विरोध करने में भीमाजी की बहादुरी और नेतृत्व महत्वपूर्ण था।
- **"तीर कमान बटालियन"** का नेतृत्व किया और अंबापानी की लड़ाई में अंग्रेजों के खिलाफ जीत हासिल की।
- पंचसावल, धाबा बावड़ी, अंबापानी, रामगढ़ और अन्य जगहों पर संघर्ष में शामिल रहे।
- जब भी अंग्रेजों ने उन्हें पकड़ने का प्रयास किया, उन्होंने गुरिल्ला युद्ध की रणनीति अपनाई।

गिरफ्तारी और कानूनी कार्यवाही:

- 1868 में पकड़े गए, जिसके कारण उन्हें **अंडमान की सेलुलर जेल** में कैद कर दिया गया।
- **दिसम्बर 1876 में फाँसी** दे दी गयी।
- टंट्या भील, खाज्या नायक और अन्य जैसे साथियों के साथ लड़ाई लड़ी।
- 1857 के विद्रोह के दौरान तात्या टोपे का समर्थन किया।
- अंग्रेजों को देश से बाहर निकालने की कसम खाई।

नेतृत्व और सेना गठन:

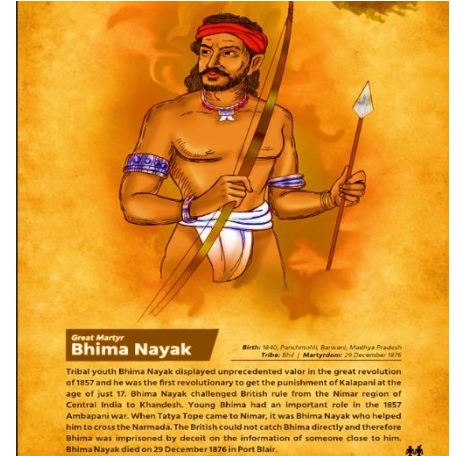
- लगभग 10, 000 समर्पित स्वतंत्रता सेनानियों की सेना का नेतृत्व किया।
- ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक मजबूत प्रतिरोध को संगठित करने और संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

निमाड़ का रॉबिन हुड:

- ब्रिटिश खजाने को साहसपूर्वक लूटने के कारण उन्हें "निमाड़ के रॉबिन हुड" की उपाधि मिली। लूटी गई संपत्ति को गरीबों में बांटकर स्थानीय स्तर पर प्रशंसा अर्जित की।

विरासत और स्मारक:

- स्वतंत्रता संग्राम में उनके बलिदान को याद करते हुए प्रतिवर्ष शहादत दिवस पर उन्हें सम्मानित किया जाता है।
- ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ प्रतिरोध और वीरता के प्रतीक के रूप में याद किया जाता है।



धीर सिंह (1820)

- 1820 में रीवा जिले के कछिया टोला गांव में जन्मे।
- रीवा क्षेत्र से 1857 के विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।



Best Study PDF के लिए हमारी App को Download करें **"GK Trick By Nitin Gupta"**

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

- गढ़ा मंडला के शासक शंकर शाह गोंड से प्रभावित।
- नर्मदा घाटी क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्वतंत्रता सेनानी, एक क्रांतिकारी आदिवासी नेता के रूप में जाने जाते हैं।

विरसा गोंड और जिरा गोंड

- ये ब्रिटिश शासकों के खिलाफ लड़ते हुए भारत छोड़ो आंदोलन का हिस्सा थे।
- उन्होंने बैतूल जिले के गोंडा डोंगरी में मोर्चा संभाला और बदलाव लाया।
- उन्होंने स्थानीय लोगों (आदिवासियों) को अपने उद्देश्य के लिए एकजुट किया।
- उन्होंने घोड़ाडोंगरी स्टेशन के पास एक रेलवे ट्रैक को हटा दिया और अंग्रेजों से अपनी असहमति दिखाने के लिए एक लकड़ी के डिपो में आग लगा दी।
- अंग्रेजों ने विरसा गोंड को पकड़ लिया और दुर्भाग्य से, जेल में उनकी जान चली गई।

खाज्या नायक

प्रारंभिक जीवन:

- जन्मस्थान: तंजावुर क्षेत्र में सांगी गांव।
- पारिवारिक पृष्ठभूमि: खाज्या नायक के पूर्वज अंग्रेजों के लिए गार्ड के रूप में काम करते थे।
- सुदूर सतपुड़ा पर्वत में निमाड़ आदिवासी समुदाय से थे।
- भीमा नायक और टंट्या मामा भील जैसे साथी योद्धाओं के साथ कई विद्रोहों में भाग लिया।
- गरीबों के बीच लूटे गए माल को फिर से वितरित करने में सक्रिय रूप से लगे रहे।
- अंग्रेजों के खिलाफ कई लड़ाइयाँ लड़ीं, जिससे उन्हें काफी चिंता हुई।
- नियत कर्तव्य: 1831 से 1851 तक, सेवा-जम्मी चेक पोस्ट से भास्करपुर चेक पोस्ट की रखवाली करना, जो 24 मील की दूरी पर है।
- घटना: अपनी निगरानी के दौरान एक अतिचारी की हत्या के लिए 10 साल की सजा का सामना करना पड़ा, अच्छे आचरण के कारण इसे घटाकर 5 साल कर दिया गया।



क्रांतीवीर खाज्या नाईक

रानी लक्ष्मी बाई की सेना के साथ गठबंधन:

- भीमा नायक जैसे स्वतंत्रता सेनानियों के साथ हाथ मिलाकर रानी लक्ष्मी बाई की सेना के साथ गठबंधन बनाया।
- मध्य प्रदेश क्षेत्र में ब्रिटिश उत्पीड़न के खिलाफ एक विद्रोही सेना का नेतृत्व करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अम्बापानी का युद्ध (11 अप्रैल 1858):

- मुख्य भागीदारी: ब्रिटिश और विद्रोही सेनाओं के बीच अम्बापानी की लड़ाई में बहादुरी से लड़े।
- टकराव: खाज्या नायक ने ब्रिटिश अधिकारी जेम्स आउट्रम का सामना किया और असाधारण साहस का परिचय दिया।

मृत्यु:

- खाज्या नायक का अंत 11 अप्रैल, 1858 को अम्बापानी की लड़ाई के दौरान हुआ।

टंट्या भील (1842-1889)

प्रारंभिक जीवन परिचय:

- टांटिया भील, जिन्हें टांटिया मामा के नाम से भी जाना जाता है, टांटिया भील को भारतीय रॉबिन हुड के नाम से जाना जाता है, टांटिया भील का जन्म वर्ष 1842 में बड़दा में हुआ था।
- मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र में प्रचलित भील आदिवासी समुदाय से संबंधित थे।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

• पारिवारिक पृष्ठभूमि:

- आदिवासी शोषण के दौरान आदिवासी किसान भाऊ सिंह के घर जन्म हुआ।
- आदिवासी समुदायों को गंभीर भूमि हानि और शोषण का सामना करना पड़ा।
- टंटिया भील ने आदिवासियों और आम जनता की भावनाओं का प्रतीक बनकर अपने कार्यों के लिए प्रशंसा अर्जित की।
- गुरिल्ला युद्ध में अपने कौशल के लिए जाने जाने वाले, उन्होंने सरकारी खजाने और ब्रिटिश समर्थकों की संपत्ति को निशाना बनाया, और अर्जित संसाधनों को गरीबों और जरूरतमंदों में वितरित किया।
- अंततः, टंटिया भील को गिरफ्तार कर लिया गया और जबलपुर जेल ले जाया गया, जहाँ उन्होंने ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा अमानवीय यातनाएँ सहन कीं।
- उनकी गिरफ्तारी की खबर 10 नवंबर, 1889 को न्यूयॉर्क टाइम्स में प्रमुखता से प्रकाशित हुई थी, जिसमें उन्हें "भारत का रॉबिन हुड" बताया गया था।

नोट:-

- 2021-22 में, इंदौर के भवरकुआ चौराहे पर टंटिया भील की प्रतिमा स्थापित की गई है।
- इंदौर में MR 10 बस स्टॉप का नाम टंटिया भील के नाम पर रखा गया है।
- इंदौर पातालपानी रेलवे स्टेशन टंटिया भील को समर्पित है, जिसका नाम उनके नाम पर रखा गया है।

ब्रिटिश विरोधी प्रतिरोध में योगदान:

1857 के विद्रोह में भूमिका:

- 1857 के विद्रोह में शामिल हुए, नागपुर से मंदसौर और झाबुआ तक जंगल अभियान का नेतृत्व किया।
- खजानों और उत्पीड़कों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, अंग्रेजों के खिलाफ संगठित प्रतिरोध किया।

"भील टुकड़ी" का गठन:

- दो सौ से अधिक प्रशिक्षित युवाओं के समूह "भील टुकड़ी" का नेतृत्व किया।
- खड़गवां से खानदेश तक प्रभाव बढ़ाया।

खड़गवां किले पर विजय (1858):

- खड़गवां किले की विजय में महत्वपूर्ण भूमिका, जिसका श्रेय ऐतिहासिक विवरणों में दिया जाता है।
- 1857 के विद्रोह में स्वतंत्रता सेना के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि।

होल्कर राज्य में स्थानांतरण:

- खड़गवां और खानदेश के बाद अपना ध्यान होल्कर राज्य की ओर केन्द्रित किया।
- 1857 के बाद होल्कर शासकों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित हुए।

होल्कर राज्य के साथ संघर्ष:

- लगातार हमलों के कारण होल्कर शासकों के साथ संबंध खराब हो गए।
- होल्कर राज्य ने खतरों को समाप्त करने के लिए एक संधि की मांग की, जिसे टंटिया ने स्वीकार कर लिया।
- संधि के बाद होल्कर राज्य में लूटपाट की गतिविधियां बंद हो गईं।
- अभियानों के आयोजन के लिए होल्कर से धन और समर्थन प्राप्त हुआ।

अंग्रेजों के खिलाफ एक शक्तिशाली विद्रोह का नेतृत्व करने के बाद, टंटिया भील को पकड़ लिया गया और 4 दिसंबर, 1889 को ब्रिटिश अधिकारियों ने उन्हें फांसी की सजा सुनाई। फांसी के बाद, अंग्रेजों ने उनके शव को कालाकुंड पातालकोट रेलवे स्टेशन के पास फेंक दिया। आज, उनकी विरासत को याद करने के लिए इसी स्थान पर एक स्मारक बनाया गया है।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

गंजन सिंह कोरकू

वर्तमान मध्य प्रदेश के बैतूल जिले के निवासी गंजन सिंह कोरकू ने स्वतंत्रता संग्राम में अपने शानदार योगदान के माध्यम से भारतीय इतिहास पर अपनी छाप छोड़ी।

स्वतंत्रता संग्राम में योगदान:

- **सरदार गंजन सिंह कोरकू जंगल सत्याग्रह (1930)**

- शुरुआत: महात्मा गांधी के आह्वान पर मध्य भारत के बैतूल जिले में 1930 में।
- नेतृत्व: सरदार गंजन सिंह कोरकू ने घोड़ा-डोंगरी सत्याग्रह का नेतृत्व किया, जिससे ब्रिटिश शासन के खिलाफ वनवासियों से देशव्यापी समर्थन प्राप्त हुआ।
- ब्रिटिश प्रतिक्रिया: 1930 में, ब्रिटिश सरकार ने सरदार गंजन सिंह को पकड़ने के लिए 500 रुपये का इनाम रखा।

- **महत्व:** 1963 में सरदार गंजन सिंह का निधन हो गया, जिससे स्वतंत्रता संग्राम में इस गुमनाम नायक के बलिदान और समर्पण पर प्रकाश पड़ा।

पेमा फाल्या

जन्म और आदिवासी संबद्धता:

- मध्य प्रदेश के झाबुआ के चंद्रशेखर आज़ाद शहर में जन्मे।
- भील जनजाति से संबंधित, एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन करते हैं।

कलात्मक निपुणता:

- भील जनजाति की विशिष्ट चित्रकला शैली "पिथोरा कला" में अपनी विशेषज्ञता के लिए प्रसिद्ध।

मान्यता और पुरस्कार:

- असाधारण कलात्मक कौशल के लिए मध्य प्रदेश सरकार द्वारा 1986 में शिखर सम्मान से सम्मानित किया गया।
- आदिवासी कला में उत्कृष्ट योगदान के लिए मध्य प्रदेश के सांस्कृतिक विभाग द्वारा 2017 में तुलसी सम्मान से सम्मानित किया गया।

निधन:

- पेमा फाल्या का 31 मार्च, 2020 को निधन हो गया, वे अपने पीछे एक स्थायी विरासत छोड़ गए। उनकी पिथोरा कृतियाँ वैश्विक स्तर पर भील आदिवासी कला की कहानी बयां करती रहती हैं।



रानी दुर्गावती

- 5 अक्टूबर, 1524 को प्रसिद्ध चंदेल राजवंश, उत्तर प्रदेश के कालिंजर में जन्म।
- 18 वर्ष की आयु में गढ़-कटंगा के गोंड राजा संग्राम शाह के बेटे दलपत शाह से विवाह किया।

शासनकाल और उपलब्धियाँ:

- 1548 में अपने पति की मृत्यु के बाद नेतृत्व संभाला, और सुनिश्चित किया कि उनके बेटे बीर नारायण सिंहासन पर बैठे।
- योग्य मंत्रियों, आधार कायस्थ और मन ब्राह्मण की सहायता से शासन किया।
- सार्वजनिक लाभ के लिए रानीताल, चेरीताल और आधारताल सहित जलाशयों का निर्माण किया।
- शिक्षा के संरक्षक, आचार्य बिठलनाथ द्वारा गढ़ा में पुष्टिमार्ग पंथ की स्थापना की अनुमति दी।
- राज्य की सीमाओं का विस्तार और समेकन किया; विद्रोहों को दबाने के लिए व्यक्तिगत रूप से सेना का नेतृत्व किया।



मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

- ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार, अपने राज्य पर बाज बहादुर के हमले (1555-1560) को सफलतापूर्वक विफल किया।

मुगलों के साथ मुठभेड़ और शहादत:

- 1564 में मुगल गवर्नर आसफ खान के हमले का सामना किया।
- अत्यंत साहस का परिचय देते हुए मुगलों को कई बार हराया, लेकिन उनकी बड़ी सेना के सामने हार गई।
- दो तीरों से गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद उन्होंने तब तक लड़ाई जारी रखी जब तक उन्हें एहसास नहीं हो गया कि वे हार चुकी हैं।
- सहायता से इनकार करते हुए, आत्म-बलिदान का विकल्प चुना और 24 जून, 1564 को अपने पेट में छुरा घोंप लिया।
- जबलपुर के पास एक पहाड़ी दर्रे में उनका अंतिम संस्कार किया गया।

विरासत और स्मृति चिह्न:

- अबुल फज़ल ने उन्हें सौंदर्य, अनुग्रह और मर्दाना साहस का संयोजन बताया।
- ब्रिटिश कर्नल स्लीमन द्वारा लिखित और बाद में विभिन्न तरीकों से स्मरण किए जाने वाले एक महान व्यक्तित्व के रूप में सम्मानित।
- जबलपुर में निर्मित एक स्मारक उनकी शहादत के स्थान को चिह्नित करता है; उनकी याद में वार्षिक समारोह 24 जून को आयोजित किए जाते हैं।
- जबलपुर में रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, संग्रहालय, डाक टिकट (1988), और उनके सम्मान में एक तट रक्षक पोत का नाम रखा गया।

2023 में सम्मान:

- भारतीय तट रक्षक ने विशाखापत्तनम में 'आईसीजीएस रानी दुर्गावती' नामक तीसरे इनशोर पेट्रोल वेसल (आईपीवी) को चालू किया।
- 24 जून, 2023 को शहडोल, मध्य प्रदेश में माननीय प्रधान मंत्री द्वारा पुष्पांजलि अर्पित की गई।

जंगगढ़ सिंह श्याम (1962-1986)

- 1962 में डिंडोरी जिले के पाटनगढ़ में एक परधान गोंड परिवार में जन्म हुआ।
- भारतीय कला के "जनगढ़ कलाम" शैली के जनक के रूप में मान्यता प्राप्त।
- ठाकुर देव, बड़ा देव और कलसहिन देवी जैसे गोंड देवताओं को चित्रित करने में विशेषज्ञता।
- 1986 में शिखर सम्मान से सम्मानित; विधान भवन, भोपाल में बाहरी भित्ति चित्रों के लिए कमीशन किया गया।

भूरी बाई

- पिटोल (झाबुआ जिला) की भूरी बाई, पेंटिंग के लिए कागज और कैनवास का उपयोग करने वाली पहली भील कलाकार हैं, जिन्होंने भारत भवन के निदेशक जे. स्वामीनाथन के सुझाव पर अपनी समकालीन कला शुरू की।
- स्वामीनाथन ने भूरी बाई को कागज पर पेंटिंग करने से परिचित कराया, उन्हें विभिन्न प्रकार के रंग और तैयार ब्रश उपलब्ध कराए, जो गांव में पौधों और मिट्टी से रंग निकालने की श्रमसाध्य प्रक्रिया के विपरीत था।
- कागज पर उनकी पहली पेंटिंग में उनके परिवार के पुश्तैनी घोड़े को दर्शाया गया था, और वह सफेद सतह पर पोस्टर के रंगों के प्रभाव से मोहित हो गई थीं।
- वर्तमान में भोपाल में आदिवासी लोक कला अकादमी में कलाकार के तौर पर कार्यरत हैं।
- अपने योगदान के लिए पहचानी जाने वाली भूरी बाई को 1986-1987 में मध्य प्रदेश सरकार से सर्वोच्च पुरस्कार शिखर सम्मान मिला।
- 1998 में उन्हें मध्य प्रदेश सरकार द्वारा अहिल्या सम्मान से सम्मानित किया गया।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

- भूरी बाई भील जीवन और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं से प्रेरणा लेती हैं, जैसे कि जंगल में जानवर, पेड़ों की शांति, स्मृति स्तंभ (गतला), भील देवता, पोशाक, आभूषण, टैटू (गुदना), झोपड़ियाँ, अन्न भंडार, हाट, त्यौहार, नृत्य और मौखिक कथाएँ।
- हाल ही में, उन्होंने अपने विषय-वस्तु का विस्तार करते हुए हवाई जहाज, टेलीविजन, कार और बस जैसे आधुनिक तत्वों को शामिल किया है, और उन्हें पेड़ों और जानवरों के पारंपरिक विषयों के साथ सहजता से मिश्रित किया है।

नोटः

- 2021 में, भूरी बाई को कला और संस्कृति में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए भारत के चौथे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म श्री से सम्मानित किया गया।

नरेश चन्द्र सिंह (1929)

- सारंगढ रियासत के शासक, जो वर्तमान में छत्तीसगढ़ में है।
- पंडित रविशंकर शुक्ल के मंत्रालय में कैबिनेट मंत्री (1952) के रूप में कार्य किया।
- 1955 में मध्य प्रदेश में आदिवासी कल्याण के पहले मंत्री और 1969 में 13 दिनों के लिए पहले आदिवासी मुख्यमंत्री बने।



दिलीप सिंह भूरिया (1944-2015)

- जून 1944 में झाबुआ जिले में जन्म हुआ।
- छह बार संसद सदस्य चुने गए।
- अटल बिहारी वाजपेयी सरकार के दौरान राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष रहे।
- कांग्रेस, भाजपा और गोंडवाना गणतंत्र पार्टी से जुड़े रहे।

कांतिलाल भूरिया

- 1950 में झाबुआ जिले में जन्मे। रतलाम-झाबुआ निर्वाचन क्षेत्र से कई बार सांसद चुने गए। मनमोहन सिंह सरकार में कैबिनेट मंत्री के रूप में कार्य किया।

जमुना देवी (1929-2010)

- 19 नवंबर 1929 को सरदारपुर, धार (म.प्र.) में जन्म हुआ ; 24 सितंबर 2010 को इंदौर में निधन हो गया।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की महिला नेता।
- झाबुआ से लोकसभा सदस्य (1962-67) और 1978-81 तक राज्यसभा सदस्य के रूप में चुनी गईं।
- पहली महिला उप मुख्यमंत्री (1998), विपक्ष के नेता का पद संभाला (2003 में), ऐसा पद संभालने वाली पहली महिला नेता।

दीपचंद गोठी

- जन्म: 12 नवंबर, 1897, बैतूल, मध्य प्रदेश, भारत
- पिता: प्रतापमल गोठी
- माता: सोनी बाई
- 1857 में ब्रिटिश शासन के खिलाफ बैतूल में स्थानीय आदिवासी विद्रोह
- महात्मा गांधी की बैतूल यात्रा ने राष्ट्रवादी भावनाओं को प्रभावित किया।



मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

रघुनाथ सिंह मंडलोई

- अक्टूबर 1858 में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह की शुरुआत की।
- इंदौर दरबार ने उनका नाम बदलकर वतन बलवंत सिंह मंडलोई रख दिया।
- बलवंत सिंह ने रघुनाथ सिंह और उनके साथियों को पकड़ने का निर्देश दिया। पकड़ने के तीव्र प्रयासों के कारण विद्रोह बढ़ गया।

पृष्ठभूमि और समुदाय:

- मंडलोई भिलाला समुदाय से थे।
- लूटपाट की गतिविधियों में शामिल होकर बीजागढ़ में शरण ली।



बिरजू नायक

- मध्य प्रदेश में राजपुर पलसूद के पास मातली सावरदा में जन्म हुआ।
- बिरजू नायक की कर्म स्थली सिन्धी घाटी थी, जो राजपुर पलसूद मार्ग पर स्थित है।

बूचा कोरकू

- वे बैतूल जिले के शाहपुर तहसील के अंतर्गत बंजारीढाल नामक आदिवासी गांव के निवासी थे। 1930 के जंगल सत्याग्रह में बैतूल जिले के इन आदिवासी गांवों की जनता ने इस सत्याग्रह में राष्ट्रीयता की भावना के साथ सक्रियता से भाग लिया। बूचा कोरकू भी इस आन्दोलन के दौरान सक्रियता से भाग लिया।

गंजनसिंह गोंड:

- मध्य प्रदेश के सागर जिले की देवरी तहसील के ग्राम सिंहपुर गंजन का नाम गंजन सिंह गोंड के नाम पर रखा गया है।
- गंजन सिंह गोंड का जन्म 14 अप्रैल, 1822 ई. को ग्राम सिंहपुर में हुआ था।

रानी अवंतीबाई - रामगढ़ की बहादुर रानी

- 16 अगस्त, 1831 को मध्य प्रदेश के सिवनी जिले के मनकेहनी गाँव में जन्म हुआ।
- माता-पिता: कृष्णा बाई (माता) और राव जुझार सिंह (पिता), एक जमींदार थे।

विवाह और जिम्मेदारियाँ:

- इनका विवाह रामगढ़ राज्य के राजा लक्ष्मण सिंह के पुत्र विक्रमादित्य सिंह से हुआ।
- विक्रमादित्य सिंह की मृत्यु के बाद, रानी अवंती बाई लोधी ने अपने पति के खराब स्वास्थ्य के कारण प्रशासन संभाला।
- उनके दो बेटे थे: अमन सिंह और शेर सिंह।

ब्रिटिश अतिक्रमण और प्रतिरोध:

- गवर्नर जनरल डलहौजी की नीति के तहत विक्रमादित्य सिंह को अयोग्य घोषित कर दिया गया और रामगढ़ रियासत में ब्रिटिश अधिकारियों को नियुक्त किया गया।
- रानी अवंती बाई लोधी ने ब्रिटिश अधिकारियों का विरोध किया, उन्हें रामगढ़ से बाहर निकाल दिया और खुद नियंत्रण संभाल लिया।
- किसानों को ब्रिटिश कर निर्देशों का पालन न करने का आदेश दिया, जिससे क्षेत्र में उनकी लोकप्रियता बढ़ गई।

1857 के स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका:

- मई 1857 में प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संगठित हुए।



मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

- राजाओं, जमींदारों और भूस्वामियों को पत्र लिखकर उनसे क्रांति में शामिल होने और मातृभूमि को स्वतंत्र करने का आग्रह किया।
- ब्रिटिश नियंत्रण को समाप्त करने के उद्देश्य से रामगढ़ में एक क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन किया।

खैरी का युद्ध:

- गुजरी, रामनगर और बिछिया क्षेत्रों में ब्रिटिश सेना के खिलाफ अपनी सेना का नेतृत्व किया।
- 23 नवंबर, 1857 को खैरी के प्रसिद्ध युद्ध में असाधारण नेतृत्व और बहादुरी का परिचय दिया।
- ब्रिटिशों के पास बेहतर सैन्य शक्ति होने के बावजूद मंडला के डिप्टी कमिश्नर वार्डिंगटन की सेना को हराया।

मृत्यु और महत्व:

- 20 मार्च 1858 को देवहरिगढ़ की रणभूमि में अपने प्राणों की आहुति दे दी।
- स्वाभिमान, साहस, वीरता, स्वतंत्रता और मातृभूमि के प्रति प्रेम का संदेश दिया।
- अपनी मृत्यु से पहले अंग्रेजों को एक पत्र लिखा, जिसमें कहा गया कि ग्रामीण लोग निर्दोष थे और उन्होंने विद्रोह को उकसाया था।
- हजारों लोगों को अंग्रेजों की फांसी और अमानवीय व्यवहार से बचाया।
- साहस, नेतृत्व क्षमता और मातृभूमि के प्रति प्रेम अनुकरणीय है।

सम्मान:

- नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण ने जबलपुर में बरगी बांध परियोजना के एक हिस्से को उनके सम्मान में समर्पित किया।
- भारतीय डाक ने स्वतंत्रता संग्राम में उनके महत्वपूर्ण योगदान को मान्यता देते हुए, 1988 और 2001 में उनके सम्मान में दो स्मारक टिकट जारी किए।

नोट:

स्मारक घोषणा (मार्च 2023):

- पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मनकेड़ी में एक भव्य स्मारक और पार्क बनाने की योजना की घोषणा की।
- वीरांगना रानी को समर्पित यह स्मारक मनकेड़ी में बनाया जाएगा, जहां उनकी प्रतिमा स्थापित है।
- रानी अवंतीबाई की वीरता की स्मृति में स्मारक में उनकी वीरगाथाएँ उत्कीर्ण हैं।

अमर शहीद बादल भोई

- स्वतंत्रता सेनानी अमर शहीद बादल भोई का जन्म सन् 1845 (लगभग) में छिन्दवाड़ा जिले की परासिया तहसील के ग्राम डुगरिया तितरा में हुआ।
- बादल भोई ने स्वतंत्रता सेनानी श्री विश्वनाथ साल्पेकर के नेतृत्व में 21 अगस्त 1930 को रामाकोना में जंगल का कानून तोड़ा।
- इस पर अंग्रेज सरकार ने बादल भोई को महाराष्ट्र जेल में रखा, जहां पर सन् 1940 में जहर के कारण उनकी मृत्यु हुई।
- स्वतंत्रता- संग्राम में उनके योगदान को रेखांकित करने के उद्देश्य से राज्य शासन द्वारा छिन्दवाड़ा स्थित संग्रहालय का नामकरण 'श्री बादल भोई राज्य आदिवासी संग्रहालय' किया गया।

भोंदेसिंह गोंड

- इनका जन्म 1924 में धोडाडोंगरी में हुआ था।
- इनके पिता का नाम स्वरूपसिंह था जो एक साधारण किसान थे, कांग्रेस से प्रभावित होकर 1940 ई. में कांग्रेस की सदस्यता ले ली तथा राष्ट्रीय आंदोलन में कांग्रेस सदस्य के रूप में सक्रिय हो गए और कांग्रेस द्वारा पारित प्रस्तावों को जन जन तक पहुंचाने का कार्य किया।
- आंदोलन में सक्रिय रहे और बरबतपुर के पास काली मिट्टी टेकड़ी के पास रेल की पटरियां उखाड़े जाने में ये शामिल रहे जिस कारण इन्हें 30 अगस्त 1942 ई. के दौरान गिरफ्तार कर लगभग 4 साल के लिए जेल भेज दिया गया।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

सीताराम कंवर

- बड़वानी जिले में जन्मे। 1857 के विद्रोह के दौरान गोंड राजा शाहकार शाह के अधीन जासूस सैनिकों के प्रमुख के रूप में कार्य किया।
- ब्रिटिश सेना के खिलाफ बहादुरी से लड़े। दुर्भाग्य से, सीताराम कंवर को ब्रिटिश सेना द्वारा गोली मार दी गई, जबकि वे अपने उद्देश्य की रक्षा कर रहे थे।
- बड़वानी के रहने वाले सीताराम कंवर ने 1857 के विद्रोह में एक नेता के रूप में बहादुरी का परिचय दिया और अंततः स्वतंत्रता की खोज में अपने जीवन का बलिदान कर दिया।

डेलन शाह

- डेलन शाह का जन्म 1802 में मध्यप्रदेश के नरसिंहपुर जिले के मदनपुर गांव में हुआ था।
- मात्र 16 साल की उम्र से ही उन्होंने अंग्रेजों से मुकाबला शुरू कर दिया था, 1818 में उनका अंग्रेजों के साथ पहला संघर्ष हुआ।
- 1842 के बुंदेला विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- 1857 में अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी और हार का सामना करना पड़ा।
- ब्रिटिश शासन के विरुद्ध प्रतिरोध में शहीद हो गये।

रानी कमलापति

- भोपाल में 18वीं सदी की गोंड रानी का विवाह निज़ाम शाह से हुआ।
- स्नेह का प्रतीक भोपाल में सात मंजिला कमलापति महल निज़ाम शाह द्वारा बनवाया गया।
- ईर्ष्या और रानी कमलापति की अस्वीकृति के कारण आलम शाह ने निज़ाम शाह की हत्या कर दी थी।
- रानी ने बदला लेने के लिए दोस्त मोहम्मद खान की मदद ली।
- दोस्त मोहम्मद खान ने वित्तीय सहायता मांगते हुए आलम शाह को हराने में सहायता की।
- रानी सिंहासन पर बैठीं लेकिन दोस्त मोहम्मद खान द्वारा विश्वासघात का सामना करना पड़ा।
- 1723 में रानी ने आत्मदाह कर लिया, दोस्त मोहम्मद खान ने उसके राज्य पर नियंत्रण कर लिया।
- रानी कमलापति को साहस और बलिदान के लिए याद किया जाता है।
- गरिमा और विरासत की रक्षा के लिए जल समाधि लेने वाली पहली महिला थी।
- कमलापति पैलेस को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा मान्यता प्राप्त स्मारक के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।

नोट

रानी कमलापति रेलवे स्टेशन

- भोपाल के हबीबगंज रेलवे स्टेशन का नाम बदल कर मध्य प्रदेश सरकार ने गोंड रानी रानी कमलापति की याद में नवंबर 2021 में रानी कमलापति स्टेशन कर दिया है।
- यह रेलवे स्टेशन भारत का पहला प्राइवेट रेलवे स्टेशन है।
- इस रेलवे स्टेशन को सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) योजना के तहत बनाया गया है।
- इसका संचालन बंसल ग्रुप करता है। इस स्टेशन को जर्मनी के हाइडेलबर्ग रेलवे स्टेशन की तर्ज़ पर बनाया गया है।



मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

कांतिलाल भूरिया

- कांतिलाल भूरिया का जन्म 1 जून 1950 को मध्य प्रदेश के झाबुआ में हुआ था।
- वे भील जनजाति से संबंधित हैं। कांग्रेस पार्टी से झाबुआ और रतलाम लोकसभा क्षेत्रों से निर्वाचित हुए।
- वे 1973-74 तक चंद्रशेखर आज़ाद कॉलेज, झाबुआ के अध्यक्ष रहे।
- वे 1980-81 तक उज्जैन विश्वविद्यालय के सीनेट सदस्य बने।
- उन्होंने जापान में आयोजित "जनसंख्या और विकास" पर सांसदों के एशिया फोरम की कार्यकारी बैठक में भाग लिया।

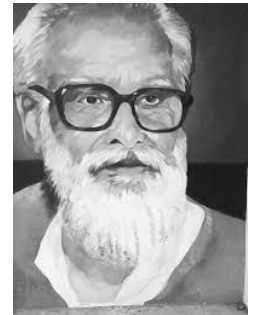
जोधिया बाई

- उमरिया जिले में बैगा जनजाति से संबंधित हैं।
- प्रसिद्ध आदिवासी चित्रकार।
- 2021 में नारी शक्ति पुरस्कार से सम्मानित।
- भारत सरकार द्वारा 2023 में उन्हें कला में पद्मश्री से सम्मानित किया गया।
- उनकी कलात्मक शैली की तुलना जंगढ़ सिंह श्याम से की जाती है, जो गोंड चित्रकार थे।
- कैनवास और कागज पर पेंटिंग करने के बाद, वह अब मिट्टी, धातु और लकड़ी जैसे अन्य माध्यमों का भी उपयोग करती हैं।
- भोपाल, दिल्ली, मिलान और पेरिस में उनकी पेंटिंग प्रदर्शित की जा चुकी हैं।



बालेश्वर दयाल शर्मा (पूर्व राज्यसभा सांसद)

- स्वतंत्रता सेनानी और सामाजिक कार्यकर्ता: बालेश्वर दयाल "मामा", एक स्वतंत्रता सेनानी और समाजवादी विचारक थे, जिन्हें गरीबों के मसीहा के रूप में जाना जाता है। (झाबुआ के गांधी या भीलाचल के गांधी) अपना जीवन झाबुआ जिले को समर्पित किया, जहाँ उन्होंने अपना पूरा जीवन बिताया। 26 दिसम्बर 1998 को बालेश्वर दयाल का बामनिया में निधन हो गया।



योगदान और पहल:

- 1937 में होलकर राज्य के महिदपुर जिले के अंतर्गत बामनिया में डूंगर विद्यापीठ भील आश्रम की स्थापना की।
- जबरन मजदूरी के खिलाफ लड़ाई लड़ी और आदिवासियों को आजाद कराने के लिए राजा को प्रभावित किया।
- बामनिया रेलवे स्टेशन के सामने टेकरी पर राम मंदिर बनवाने में मदद की।

मंशु ओझा

- स्वतंत्रता सेनानी, मंशु ओझा का जन्म रातामाटी में उमराव ओझा के यहां हुआ था, बाद में मंशु ओझा का परिवार घोड़ाडोंगरी, जिला-बैतुल में आकर रहने लगा।
- स्वतंत्रता आन्दोलन में इनकी भूमिका 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के समय तब सक्रिय होती है। जब ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत छोड़ो आन्दोलन को असफल करने के लिये अनेक गिरफ्तारियाँ, लाठी चार्ज आदि किया जा रहा था।
- 15 अगस्त, 1972 को इनको स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ताम्र पत्र लेख भेंट किया गया।
- घोड़ाडोंगरी स्थित स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्मारक में मंशु ओझा का नाम अंकित है। मंशु ओझा की मृत्यु 28 अगस्त, 1981 को घोड़ाडोंगरी में हो गयी।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

अर्जुन सिंह धुर्वे

- पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित अर्जुन सिंह धुर्वे मध्य प्रदेश के डिंडोरी के बैगाचक क्षेत्र के धुरकुटा से हैं।
- मध्य प्रदेश में बैगा आदिवासी समुदाय से हैं।
- 12 अगस्त 1953 को जन्मे, वह चार भाइयों में चौथे हैं।
- बैगा आदिवासियों में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त करने वाले अर्जुन सिंह धुर्वे पहले व्यक्ति हैं। बैगा आदिवासियों के पारंपरिक नृत्य रूपों के संरक्षण और संवर्धन में सक्रिय रूप से शामिल हैं।
- बैगा नृत्य प्रदर्शन में बैल, मोर, हाथी आदि जैसे विभिन्न जानवरों की गतिविधियों को दिखाया जाता है।



उपलब्धियाँ:

- पद्मश्री के अलावा, आदिवासी कला और सांस्कृतिक विकास में उनके योगदान के लिए अर्जुन सिंह धुर्वे को 1993-94 में राज्य सरकार से तुलसी पुरस्कार मिला।
- उन्होंने 2005 में नई दिल्ली में इंडिया गेट परेड में बैगा नृत्य का प्रदर्शन किया।
- बैगा आदिवासी नृत्य और संगीत को आगे बढ़ाने में उनके प्रयासों के लिए उन्हें सम्मानित किया गया।

बैगा नृत्य और संगीत:

- डिंडोरी जिले के छड़ा के जंगलों में रहने वाले बैगा आदिवासी कर्मा, परधौनी, घोड़ी पेथाई और फाग जैसे विशिष्ट नृत्य करते हैं।
- कर्मा नृत्य उनके 'कर्म' या क्रियाओं को नृत्य और गीत के माध्यम से दर्शाता है, जिससे इसे कर्मा नृत्य नाम दिया गया है।
- दशहरा से शुरू होकर दिसंबर तक चलने वाला घोड़ी पेथाई नृत्य एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है।
- बैगा आदिवासियों की एक अनूठी संगीत परंपरा है, जिसे वे त्यौहारों, शादियों और विभिन्न समारोहों के दौरान हमेशा नृत्य के साथ बजाते हैं।
- बैगा आदिवासी नृत्य के लिए विशेष पोशाक पहनते हैं, जो उनके प्रदर्शन में अलंकरण के महत्व पर जोर देता है।

दुर्गा बाई व्याम

- दुर्गा बाई व्याम गोंड पेंटिंग के लिए प्रसिद्ध हैं, जो कला के माध्यम से कहानी कहने में विशेषज्ञता रखती हैं।
- देवकुल, पुरोहित कबीले के गोंड समुदाय के देवताओं पर केंद्रित है।
- दादी की लोक कथाओं से प्रेरित होकर, छह साल की उम्र में डिगना सीखना शुरू किया।
- विशेष रूप से समारोहों के दौरान विभिन्न कला रूपों के लिए गाय के गोबर और नम मिट्टी का उपयोग करती हैं।
- 2004 में हस्तशिल्प विकास परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त।
- 2008 में इटली में बोलोग्ना रागाज़ी पुरस्कार से सम्मानित।
- 2006-2007 के लिए IGNCA छात्रवृत्ति प्राप्त की।
- गोंड कला परंपरा को संरक्षित करते हुए, बच्चों को कला प्रदर्शनियों में अपने साथ जाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।
- उनका अधिकांश काम उनके जन्मस्थान, मध्य प्रदेश के मंडला जिले के एक गांव बरबसपुर में निहित है। दुर्गाबाई व्याम को उनके कला कौशल के लिए भारत सरकार द्वारा पद्म श्री, 2022 से सम्मानित किया गया।



मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

लहरी बाई

- मध्य प्रदेश के डिंडौरी ज़िले की बैगा जनजाति की रहने वाली हैं।
- लहरी बाई मोटे अनाज यानी मिलेट्स के संरक्षण के लिए जानी जाती हैं।
- लहरी बाई को 'मिलेट वूमन ऑफ़ इंडिया' के नाम से भी जाना जाता है।
- राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने उन्हें प्लांट जीनोम सेवियर फ़ार्मर पुरस्कार से सम्मानित किया है।
- लहरी बाई को मिलेट्स एंबेसडर घोषित किया गया है।

अन्य जनजातीय व्यक्तित्व:

नाम	विवरण
भीमा नायक	• 1840 में जन्म • पंचमोहाली गांव, (बड़वानी) • 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किया • 11 अप्रैल 1858 को अम्बापानी का युद्ध • 1876 में पोर्ट ब्लेयर जेल में मृत्यु हो गई
टंट्या भील	• टंट्या भील का जन्म 1842 में पूर्वी निमाड़ की पंधाना तहसील के बड़ौदा गांव में हुआ था। • इन्हें इंडियन रॉबिनहुड कहा जाता है। • इनकी समाधि स्थल पातालपानी इंदौर जिले में स्थित है।
खाज्या नायक	• निमाड़ क्षेत्र के सांगली गांव में जन्म हुआ। • 1876 में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह का नेतृत्व किया। • अम्बा पानी के युद्ध में भाग लिया।
रानी अवंती बाई	• 16 अगस्त 1831 को ग्राम मनकेहणी (सिवनी) में जन्म हुआ। • 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किया। • 20 मार्च 1858 में निधन हो गया।
सीताराम कंवर	• बड़वानी में जन्मे, 1857 के विद्रोह में सक्रिय भूमिका
शंकर शाह और रघुनाथ शाह	• शंकर शाह गढ़ा मंडला के गोंड शासक थे। • रघुनाथ शाह उनके पुत्र थे। • दोनों ने जबलपुर में 1857 के विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। • 18 सितंबर 1858 को अंग्रेजों ने तोप से उड़ा दिया।
झलकारी बाई	• 22 नवम्बर 1839 को भोजला ग्राम झासी में जन्म हुआ। • रानी लक्ष्मीबाई की दुर्गा दल सेना की सेनापति।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

धीर सिंह	1820 में रीवा में जन्म हुआ। 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किया।
बादल भोई	- जन्म 1845 डूंगरिया तीतर (छिंदवाड़ा) में हुआ। 1940 में महाराष्ट्र जेल में निधन हो गया।
शहीद मुड्डे बाई	टुरिया (सिवनी) से, जंगल सत्याग्रह के दौरान शहीद हुए।
लाल पद्मधर सिंह	कृपालपुर (सतना) में जन्मे, भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान आदिवासी आंदोलन का नेतृत्व किया।
मंशु ओझा	- भारत छोड़ो आंदोलन में बैतूल से नेतृत्व किया। 1944 तक नरसिंहपुर जेल में रहे। 1981 में बैतूल में निधन हो गया।
भोंदेसिंह गोंड	भारत छोड़ो आंदोलन का बैतूल से नेतृत्व किया।
भागोजी नाइक	सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला में 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किया।
राम गोंड	1930 जंगल सत्याग्रह बैतूल
गंजन सिंह कोरकू	जंगल सत्याग्रह, घोड़ाडोंगरी बैतूल से नेतृत्व किया।

अनिता बारिया, गंगू बाई, जोर सिंह, लाडो बाई, रमेश कटारिया, सुभाष भील।	भील चित्रकला कलाकार
आनंद सिंह श्याम, भज्जू श्याम, बीरबल सिंह उइके, छोटी टेकाम, धनैया बाई, धवत सिंह उइके, दिलीप श्याम, दुर्गा बाई, गरीबा सिंह टेकाम, हरगोविंद सिंह उर्वेती, हरिलाल धुर्वे, इंदु बाई मरावी, ज्योति बाई उइके, कला बाई, कमलेश कुमार उइके, लखनलाल भार्वे, मन्ना सिंह व्याम, मानसिंह व्याम, मयंक कुमार श्याम, मोहन सिंह श्याम, ननकुसिया श्याम, नर्मदा प्रसाद टेकाम, निक्की सिंह उर्वेती, प्रदीप मरावी, प्रसाद कुसराम, प्रेमी बाई, प्यारेलाल व्याम, राधा टेकाम, राज कुमार श्याम, राजन सिंह उइके, राजन प्रसाद कुसराम, रजनी व्याम, राजेंद्र सिंह श्याम, रामबाई टेकाम, राम नारायण मरावी, राम सिंह उर्वेती, रमेश टेकाम, रवि टेकाम, रोशनी व्याम, संतोष कुमार व्याम, संतोषी टेकाम, सरोज वेंकट श्याम, शांति बाई, सुभाष व्याम, सुखनंदी व्याम, सुरेश धुबे, वेंकट श्याम, विनोद कुमार टेकाम	गोंड चित्रकला कलाकार

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

महत्वपूर्ण संस्थान

जनजातीय अनुसंधान एवं विकास संस्थान

- 20 अप्रैल, 1954 को छिंदवाड़ा जिले में स्थापित।
- 10 अप्रैल, 1965 को मुख्यालय भोपाल श्यामला हिल्स में स्थानांतरित हुआ।

संग्रहालय नाम परिवर्तन:

- यह संग्रहालय प्रारंभ में छिंदवाड़ा में स्थित था, जिसे अब श्री बादल भोई राज्य जनजातीय संग्रहालय के नाम से जाना जाता है।

मध्य प्रदेश रोजगार एवं प्रशिक्षण परिषद

- मध्य प्रदेश रोजगार एवं प्रशिक्षण परिषद, जिसे मूल रूप से आदिवासी तकनीकी शिक्षा मंडल के नाम से जाना जाता है, की स्थापना 1981 में हुई थी।
- इसका प्राथमिक उद्देश्य आदिवासी समुदाय के शिक्षित बेरोजगार युवाओं के लिए विभिन्न तकनीकी और व्यावसायिक क्षेत्रों में कौशल का विकास करना है।
- संगठन का उद्देश्य शिक्षित बेरोजगार युवाओं के बीच रोजगार और स्वरोजगार के अवसरों को बढ़ाना है। 1989 में, परिषद का दायरा अनुसूचित जाति समुदाय के लिए तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन को शामिल करने के लिए विस्तारित हुआ।
- 2008 के बाद से, परिषद के विकसित उद्देश्यों के अनुरूप, यह पिछड़े वर्गों के शिक्षित बेरोजगार उम्मीदवारों के लिए विभिन्न रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण कार्यक्रमों का सक्रिय रूप से आयोजन कर रहा है।

ट्राइबल को-ऑपरेटिव मार्केटिंग डेवलपमेंट फेडरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (TRIFED)

- इसका प्रधान कार्यालय दिल्ली में है और एक क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल में है।
- अगस्त 1987 में स्थापित ट्राइफेड बहु-राज्य सहकारी समिति अधिनियम, 1984 के तहत काम करता है। इसे भारत सरकार द्वारा बनाया गया था और यह कल्याण मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में आता है।

मुख्य उद्देश्य:

- ट्राइफेड का प्राथमिक लक्ष्य लघु वनोपज और अधिशेष कृषि उपज के व्यापार को संस्थागत बनाकर जनजातीय समुदायों के बीच सामाजिक-आर्थिक विकास करना है।

वन कानून के साथ संरेखण:

- ट्राइफेड की पहल "अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वन निवासी (वन अधिकार अधिनियम, 2006)" के अनुरूप है, जो जनजातीय समुदायों के संरक्षण और आजीविका तथा भूमि और प्राकृतिक संसाधनों पर उनके अधिकारों पर जोर देती है।

आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी, भोपाल:

मिशन एवं गतिविधियाँ:

- अकादमी देश में आदिवासी और लोक संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और विकास के लिए समर्पित है।
- यह आदिवासी और लोक कलाओं और बोलियों से संबंधित सर्वेक्षण, दस्तावेजीकरण, प्रकाशन और समारोह आयोजित करती है।

प्रमुख परियोजनाएं और संस्थान:

- भोपाल में राष्ट्रीय जनजातीय संग्रहालय, आदिवर्त, खजुराहो में राष्ट्रीय जनजातीय एवं लोक कला संग्रहालय, चीकूट में तुलसी शोध संस्थान, दीघा में वैदिक कला एवं पुरातत्व संग्रहालय, तथा उज्जैन एवं स्वगा कृष्ण में कला केन्द्र हैं।

संगठित कार्यक्रम:

- तुलसी महोत्सव, तालुसी जयंती समारोह, रघुनाथ गाथा, आदिवासी चित्रकला प्रदर्शनी, खजुराहो में नदी महोत्सव, हरदा में मनोरंजन महोत्सव सहित कई अन्य कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।



मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

सांस्कृतिक त्यौहार:

- सांची में महाबोधि, भोपाल में लोक महोत्सव, भोपाल में राष्ट्रीय शिल्प मेला और विविधता दशानी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करते हैं।

प्रकाशन और पुनर्मुद्रण:

- चौमासा चौमासा के तीन अंक, वृक्ष कथा, देवी गीत, राम भील अनुष्ठान, नाग केसर, कोहरा-फुहार, वेणी के लोक देवता, दिल्ली के होली गीत आदि पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं।
- हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत कृतियों के पुनर्मुद्रण आदिवासी संस्कृति के प्रसार में योगदान करते हैं।

सर्वेक्षण और प्रलेखन:

- बैगा, भारिया, सहरिया, भील, कोरकू, कोल सहित प्रमुख जनजातियों का व्यापक सर्वेक्षण और दस्तावेजीकरण।
- इस कार्य में शैलियों को चिह्नित करना, गीतों को लिपिबद्ध करना और मौखिक साहित्य एकत्र करना शामिल है।

सांस्कृतिक केंद्र:

- पिछड़ी जनजातियों, विशेष रूप से बैगा, सहरिया और भारिया जनजातियों के लिए बड़े सांस्कृतिक केंद्र स्थापित करने के प्रयास चल रहे हैं।
- धार में भील आदिवासी संस्कृति केन्द्र की स्थापना का कार्य प्रगति पर है।

मध्य प्रदेश वन मित्र पोर्टल:

शुभारंभ और कार्यान्वयन:

- एम.पी.वन मित्र पोर्टल 2 अक्टूबर, 2019 को देशभर में प्रारंभ किया गया।
- इसका मुख्य उद्देश्य वन अधिकारों के अस्वीकृत दावों की पुनः जांच और लंबित दावों के निपटान की सुविधा प्रदान करना है।

दावा निस्तारण प्रक्रिया:

- यह पोर्टल, जिसे "एमपी वन अधिकार" पोर्टल के नाम से भी जाना जाता है, वन अधिकार दावों के निपटान की प्रक्रिया को सरल बनाता है।
- पूरी प्रक्रिया में तीन स्तर की समितियाँ शामिल हैं: ग्राम वन अधिकार समिति, उप-मंडल वन अधिकार समिति और जिला स्तरीय वन अधिकार समिति।

वन अधिकार अधिनियम 2006:

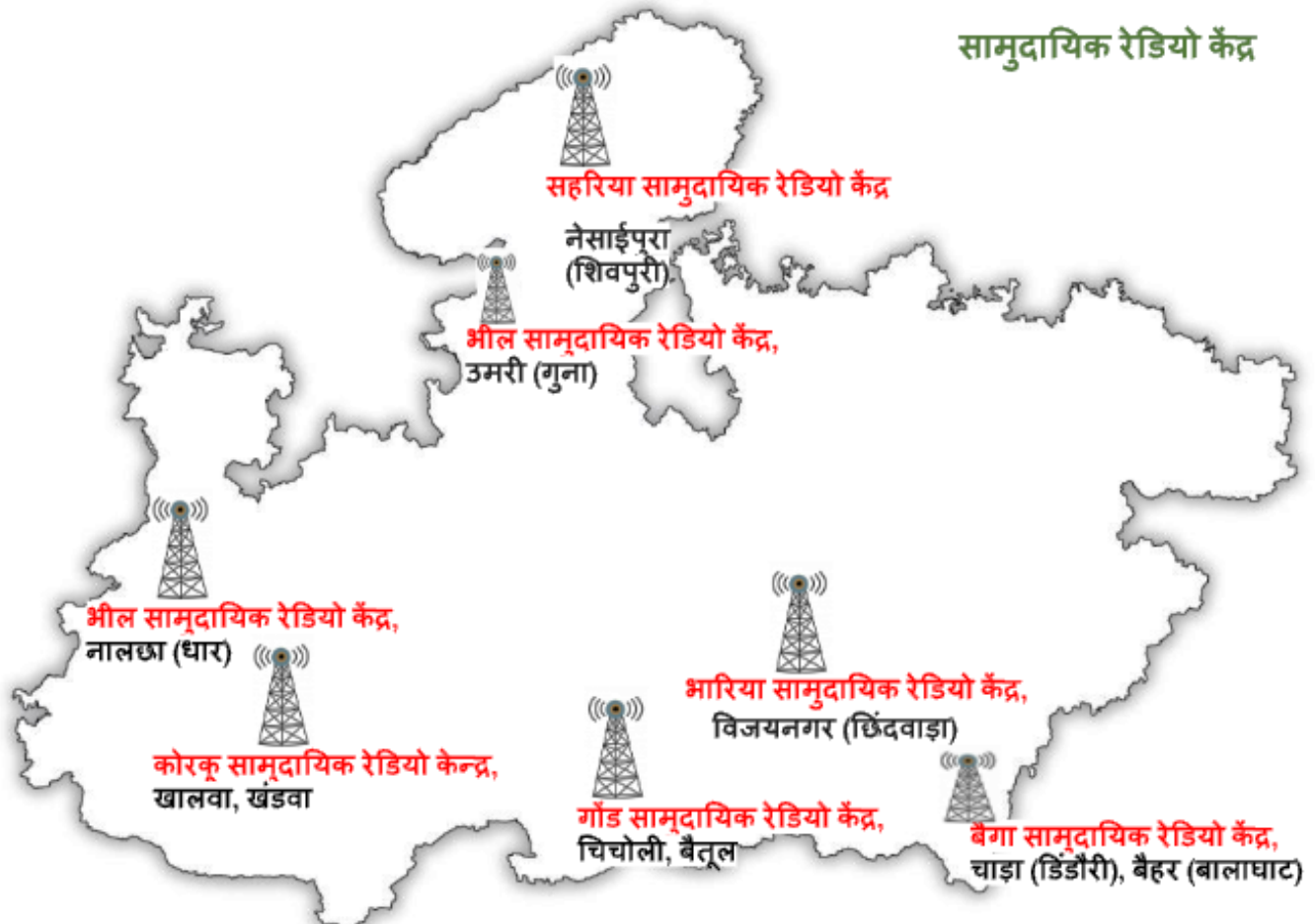
- यह पहल 2006 के वन अधिकार अधिनियम के अनुरूप है, जो वन में रहने वाले समुदायों के भूमि और प्राकृतिक संसाधनों पर अधिकारों पर जोर देती है।
- पोर्टल वन अधिकार दावों को संबोधित करने और हल करने के लिए एक व्यवस्थित और कुशल प्रक्रिया सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

संस्था	स्थान	स्थापना दिनांक	कार्य/उद्देश्य
जनजातीय अनुसंधान एवं विकास संस्थान	प्रारंभ में छिंदवाड़ा में, बाद में भोपाल में स्थानांतरित हुआ	20 अप्रैल 1954	जनजातीय संस्कृति को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रण। कल्याणकारी योजनाओं के कार्यान्वयन को सुगम बनाना। जनजातीय संग्रहालय का रखरखाव बनाए रखना।
मध्य प्रदेश आदिवासी वित्त एवं विकास निगम	-	1994	जनजातीय समुदायों के आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक कल्याण को बढ़ावा देना।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

			जनजातीय आबादी के बीच शोषण और गरीबी का उन्मूलन करना। जनजातीय व्यक्तियों के लिए ऋण तक पहुँच को सुगम बनाना, आर्थिक सशक्तीकरण को बढ़ावा देना।
आदिम जाति कल्याण विभाग	-	1965	जनजातीय समुदायों के लिए विभिन्न कल्याणकारी पहलों का प्रबंधन करता है।
उद्यमी विकास संस्थान	-	20 मार्च 1980	प्रशिक्षण, आर्थिक सहायता और तकनीकी सहायता प्रदान करके व्यवसाय स्थापित करने में एससी/एसटी समुदायों के उद्यमियों की सहायता करता है।
मप्र रोजगार एवं प्रशिक्षण परिषद	-	1981	राज्य के भीतर रोजगार और प्रशिक्षण पहल में योगदान देता है।
जनजातीय विश्वविद्यालय	अमरकंटक	-	आदिवासी समुदायों की जरूरतों और आकांक्षाओं को पूरा करने पर विशेष ध्यान देने वाला शैक्षणिक संस्थान।

जनजातीय भाषाओं और संस्कृति को बढ़ावा देने वाले सामुदायिक रेडियो केंद्र



मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

अन्य रेडियो स्टेशन:-

वान्या रेडियो	प्रसारण भाषा: मुख्य रूप से हिंदी, भीली, कोरकू, बैगनी, गोंडी और अन्य आदिवासी भाषा में।
रेडियो टंट्या भील @ 90.8 FM	- रेडियो टंट्या भील की स्थापना 2022 में आदिवासी चेतना शिक्षण सेवा समिति द्वारा की गई थी। - सीआरएस की स्थापना आदिवासी संस्कृति की पहचान को बनाए रखने और समुदाय के लिए स्वास्थ्य और शिक्षा जागरूकता प्रदान करने के उद्देश्य से की गई थी।

इंदिरा गांधी जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक

- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2007 के तहत स्थापित और जुलाई 2008 से संचालित, अमरकंटक में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय भारत की संसद द्वारा पारित एक अधिनियम का परिणाम है।
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के माध्यम से पूरी तरह से केंद्र सरकार द्वारा वित्त पोषित यह विश्वविद्यालय पूरे देश में अधिकार क्षेत्र रखता है।
- यह उच्च शिक्षा के लिए आदिवासी समुदायों की लंबे समय से चली आ रही आकांक्षा को पूरा करने वाले एक प्रकाश स्तंभ के रूप में खड़ा है।



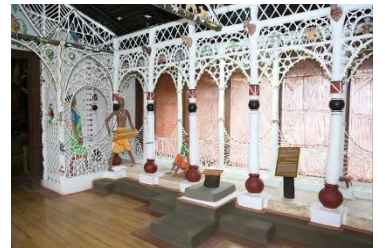
मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

मध्य प्रदेश की जनजातियों से संबंधित संग्रहालय और प्रकाशन



इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय संग्रहालय, भोपाल

- संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के एक स्वायत्तशासी संस्थान इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, (नेशनल म्यूजियम ऑफ़ मेनकाइंड) ने मार्च 1977 में नई दिल्ली में संस्कृति विभाग के एक अधीनस्थ कार्यालय के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया।
- 1979 के प्रारंभ में मध्यप्रदेश राज्य शासन से 200 एकड़ का परिसर आबंटित होने पर यह संस्थान भोपाल स्थानांतरित किया गया।
- मार्च 1985 में संग्रहालय का दर्जा एक 'अधीनस्थ कार्यालय' से स्वायत्तशासी संस्थान का किया गया तथा संग्रहालय के कार्यक्रमों और गतिविधियों के पर्यवेक्षण और नियंत्रण का दायित्व 'राष्ट्रीय मानव संग्रहालय समिति' को सौंपा गया।
- कालांतर में संग्रहालय के विस्तार केंद्र के रूप में दक्षिण क्षेत्रीय केंद्र ने कर्नाटक राज्य सरकार द्वारा आबंटित धरोहर भवन 'वेलिंगटन हाउस' से मैसूर में अक्टूबर 2001 से कार्य करना प्रारंभ किया।



जनजातीय कला संग्रहालय, खजुराहो

- 22 फरवरी, 2023 को तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मध्य प्रदेश के आदिवासी एवं लोक कला राज्य संग्रहालय का उद्घाटन किया, जिसे **आदिवर्त** के नाम से जाना जाता है।
- उद्घाटन राज्य के छतरपुर जिले के खजुराहो में G-20 संस्कृति कार्य समूह की बैठक के आयोजन के अवसर पर हुआ।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

- आदिवासी मध्य प्रदेश में स्थित आदिवासी एवं लोक कलाओं का राज्य संग्रहालय है, जो आदिवासी समुदायों की समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं को प्रदर्शित करने के लिए समर्पित है।

रानी दुर्गावती संग्रहालय, जबलपुर (1975-1976)

- 1975-76 में स्थापित जबलपुर में रानी दुर्गावती संग्रहालय आदिवासी नायिका रानी दुर्गावती की वीरता और साहस की कहानियों को याद करने पर केंद्रित है।
- यह एक सांस्कृतिक केंद्र के रूप में कार्य करता है, जो स्वदेशी समुदायों के इतिहास और विरासत को संरक्षित और बढ़ावा देता है।

सहारिया संग्रहालय

- श्यापुर किले के भीतर सहारिया संग्रहालय की स्थापना अत्यंत पिछड़ी सहारिया जनजाति की संस्कृति को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से की गई है।
- यह पहल पुरातत्व एवं संस्कृति संरक्षण समिति के तत्वावधान में की गई है, जो सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने की अपनी प्रतिबद्धता पर प्रकाश डालती है।
- सहारिया विकास प्राधिकरण संग्रहालय की स्थापना में सक्रिय रूप से भाग लेता है, जो सहारिया जनजाति की सांस्कृतिक पहचान को ऊपर उठाने और उसकी रक्षा करने के लिए एक सहयोगात्मक प्रयास को दर्शाता है।
- संग्रहालय होने के अलावा, यह सहारिया जनजाति के अद्वितीय सांस्कृतिक पहलुओं का अध्ययन और संरक्षण करने के लिए समर्पित एक शोध केंद्र के रूप में कार्य करता है।

- प्रधानमंत्री श्री मोदी ने 15 नवंबर 2024 को मध्य प्रदेश के 2 जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों के संग्रहालयों का वर्चुअल उद्घाटन किया।

मुख्य बिंदु

- प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा राष्ट्र को समर्पित किये जाने वाले संग्रहालयों में छिंदवाड़ा का श्री बादल भोई जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी संग्रहालय तथा जबलपुर का राजा शंकर शाह एवं रघुनाथ शाह स्वतंत्रता सेनानी संग्रहालय शामिल हैं।
- श्री बादल भोई जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी संग्रहालय, छिंदवाड़ा**
 - छिंदवाड़ा शहर में स्थित श्री बादल भोई आदिवासी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संग्रहालय भवन का निर्माण लोक निर्माण विभाग द्वारा 40 करोड़ 69 लाख रुपये की लागत से किया गया है।
 - नए आदिवासी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संग्रहालय में प्रदेश के 9 प्रमुख आदिवासी स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों और 16 आदिवासी स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का वर्णन और चित्रण किया गया है। पहली दीर्घा रानी दुर्गावती को समर्पित है।
- राजा शंकर शाह और रघुनाथ शाह स्वतंत्रता सेनानी संग्रहालय, जबलपुर**
 - अद्वितीय शौर्य और अदम्य साहस के प्रतीक राजा शंकर शाह और कुंवर रघुनाथ शाह के सम्मान में राज्य सरकार और केंद्रीय जनजातीय कार्य मंत्रालय के सहयोग से वर्ष 2021 में जबलपुर में संग्रहालय का निर्माण किया गया।
 - संग्रहालय की प्रथम गैलरी में गोंड जनजातीय संस्कृति प्रदर्शित की गई है।
 - दूसरी गैलरी मध्य प्रदेश के उन आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को समर्पित है जिन्होंने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था।
 - तीसरी गैलरी में राजा शंकरशाह के दरबार हॉल को प्रदर्शित किया गया है, जिसमें राजा शंकरशाह और कुंवर रघुनाथ शाह के बलिदान की कहानी को फिल्म के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।



मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

साहित्य एवं प्रकाशन:-

क्रमांक	शीर्षक	लेखक
1	आदिवासी अस्मिता और विकास	डॉ॰ हीरालाल शुक्ला
2	मध्य प्रदेश में आज़ादी की लड़ाई और आदिवासी	सुधीर सेना
3	भील जनजीवन और संस्कृति	डॉ॰ अशोक डी. पाटिल
4	कोरकू जनजाति	डॉ॰ हरि प्रसाद जोशी
5	मध्य प्रदेश की जनजातियाँ, समाज एवं व्यवस्था	डॉ॰ शिवकुमार तिवारी एवं डॉ॰ कमल शर्मा
6	मध्य प्रदेश की जनजातीय संस्कृति	डॉ॰ शिवकुमार तिवारी
7	चौमासा - (मासिक पत्रिका)	आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी, मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद (1983 से)
8	वान्या प्रकाशन (आदिवासी रेडियो स्टेशन) 1980 भोपाल	आदिवासी साहित्य

स्मरणीय बिन्दु

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 366 में अनुसूचित जनजातियों की परिभाषा।
- मध्य प्रदेश को भारत में सर्वाधिक जनजातीय जनसंख्या वाले राज्य का दर्जा प्राप्त है।
- मध्य प्रदेश में भील और गोंड जनजातियाँ सबसे अधिक जनसंख्या वाली हैं।
- 2011 की जनगणना के अनुसार जनजातीय आबादी में लिंगानुपात प्रति 1000 पुरुषों पर 990 महिलाएं हैं।
- सर्वाधिक जनजातीय जनसंख्या प्रतिशत वाले राज्य: लक्षद्वीप (94.8%) और मिजोरम (94.4%)।
- मध्य प्रदेश में अनुसूचित जनजातियों (STs) की कुल संख्या: 43
- मध्य प्रदेश में बैगा, भारिया और सहरिया जनजातियों को विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (PVTGs) के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
- कोल जनजाति मध्य प्रदेश तीसरी सबसे बड़ी जनजाति है, जो कुल आदिवासी आबादी का 7.6% है।
- हलमा परंपरा: समुदाय संचालित कृषि सहयोग।
- बैगा और गोंड जनजातियों (बेवर और गोंडबाड़ी) द्वारा उपयोग की जाने वाली स्थानांतरित खेती तकनीक।
- मंडला जिले में बैगा महिलाओं के लिए आजीविका कार्यक्रम, जिसमें कंप्यूटर प्रशिक्षण भी शामिल है।
- पशुपालन प्रथाएँ, जिनमें भीलों द्वारा कड़कनाथ मुर्गे का पालन भी शामिल है।
- पंचायत (अनुसूचित क्षेत्रों तक विस्तार) अधिनियम, 2022 में मध्य प्रदेश में लागू किया गया।
- 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस: भगवान बिरसा मुंडा की जयंती पर मनाया जाता है।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

- भगवान बिरसा मुंडा स्वरोजगार योजना: आदिवासी उद्यमियों के लिए वित्तीय सहायता।
- अनुसूचित जनजातियों को कम लागत वाले उपकरण उपलब्ध कराने के लिए टंट्या मामा आर्थिक कल्याण योजना कार्यरत है।
- आहार अनुदान योजना: PVTG समुदायों में कुपोषण को कम करने हेत।
- इंदिरा गांधी जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक में स्थित है।
- जनजातीय अधिकारों से संबंधित अनुच्छेद, जैसे अनुच्छेद 244 (अनुसूचित क्षेत्र), अनुच्छेद 275 (अनुदान सहायता) और अनुच्छेद 338ए (राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग)।
- लोक सभा और राज्य विधानसभाओं में अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षण क्रमशः (अनुच्छेद 330, अनुच्छेद 332) में है।
- संविधान की पांचवीं और छठी अनुसूचियां जनजातीय क्षेत्रों को नियंत्रित करती हैं।
- टंट्या भील: को "भारत के रॉबिन हुड" के रूप में जाना जाता है।
- रानी अवन्ती बाई: आदिवासी रानी जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी।
- शंकर शाह और रघुनाथ शाह: जबलपुर में 1857 के विद्रोह का महकौशल से नेतृत्व किया।
- जंगढ़ सिंह श्याम: जंगढ़ कलम कला शैली की स्थापना का श्रेय गोंड कलाकार को जाता है।
- भूरी बाई, प्रसिद्ध भील कलाकार हैं जिन्हें 2021 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया।
- भील लोग वर्षा और कृषि समृद्धि के लिए बाबादेव (इंद्रदेव) की पूजा करते हैं।
- खेड़ादेव: पशु कल्याण के लिए कोरकू जनजाति द्वारा पूजनीय।
- ठाकुर देव: जनजातियों में पूजे जाने वाले ग्राम देवता।
- भील कलाकारों द्वारा पिथोरा कला, जिसमें पेमा फत्या जैसी प्रमुख हस्तियां शामिल हैं।
- गोंड महिलाओं की नोहेडोरा भित्ति चित्रकला है।
- जवारा, बिदरी और नवाखानी जैसे आदिवासी त्योहार कृषि और आध्यात्मिकता पर जोर देते हैं।
- निमाड़ी क्षेत्र का गम्मत नृत्य, जो नवरात्रि के दौरान मनाया जाता है।
- 1964 में मध्य प्रदेश आदिम जाति कल्याण विभाग की स्थापना।
- बैगा, भारिया और सहरिया जैसे आदिवासी विकास प्राधिकरणों का गठन।
- झाबुआ में जनजातीय अनुसंधान एवं संचार केन्द्र स्थित है।
- रेडियो टंट्या भील की स्थापना 2022 में आदिवासी चेतना शिक्षण द्वारा की गई थी।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

पिछले वर्ष के प्रश्न पत्र

2024

- मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आदिवासी, लोक एवं पारंपरिक कलाओं के लिए महिलाओं को कौन सा पुरस्कार दिया जाता है? राष्ट्रीय देवी अहिल्या पुरस्कार
- मांडवारा त्योहार किसके द्वारा मनाया जाता है? गोंड
- महानायक टंट्या 'मामा' का संबंध किस आदिवासी समूह से है? भील
- स्वतंत्रता सेनानी रघुनाथ सिंह मंडलोई का संबंध है: भिलाला जनजाति
- स्वर्गीय श्री बादल भोई कौन थे? प्रसिद्ध आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी
- बिरहा किस आदिवासी जनजाति की महिलाओं का लोकप्रिय लोक गीत है? गोंड
- मध्य प्रदेश में आदिवासियों के लिए स्व-रोजगार योजना किनके नाम से चल रही है? टंट्या भील, बिरसा मुंडा
- जनजातीय कार्य विभाग प्रकाशन प्रतिष्ठान 'वन्या' का स्थापना वर्ष है: 1980

2023

- टंट्या मामा आर्थिक कल्याण योजना का उद्देश्य क्या है?
- अनुसूचित जनजाति के बीपीएल श्रेणी के लाभार्थियों को नए उद्योगों/व्यवसायों के लिए कम लागत वाले उपकरण और कार्यशील पूंजी की आपूर्ति करना
- भीमा नायक का संबंध किस रियासत से था? बड़वानी
- आदिवासी नेता, सीताराम कंवर और रघुनाथ सिंह मंडलोई भिलाला ब्रिटिश विरोधी क्रांति में कब शामिल हुए? 1857 ई.
- सागर के आंचलिक क्षेत्रों में दीपावली के अवसर पर कौन सा लोक नृत्य प्रचलित है? मोनी नृत्य
- दीवार पर मिट्टी से बनाई जाने वाली 'नोहडोरा' अलंकरण किस जनजाति की विशेषता है? गोंड

2022

- प्रसिद्ध ढोकरा कला के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है? यह कला बैतूल के भरेवा आदिवासी समुदाय से जुड़ी हुई है, यह एक अलौह धातु ढलाई कला है।
- आनंद सिंह श्याम और धनैया बाई कलाकारों का संबद्ध किस कला से हैं? गोंड चित्रकला
- निम्नलिखित में से किस जनजाति को आदर के साथ "खुटिया पटेल" के रूप में संबोधित किया जाता है? सहरिया

2021

- मध्य प्रदेश में विमुक्त जाति दिवस किस दिनांक को मनाया जाता है? 31 अगस्त
- श्री राम सहाय पांडे किस लोक नृत्य कला से संबंधित हैं? राई
- श्रीमती दुर्गा बाई व्याम किस जनजातिय कला से संबंधित हैं? गोंड शैली
- मध्य प्रदेश के किस शहर में इंदिरा गांधी जनजातीय विश्वविद्यालय स्थित है? अमरकंटक
- निम्नलिखित में से किस जिले में बैगा विकास अभिकरण नहीं है? रायसेन

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

2020

- मध्य प्रदेश में सर्वाधिक पाई जाने वाली जनजाति कौन सी है? भील
- पद्मश्री भूरी बाई के किसके लिए प्रसिद्ध? चित्रकारी
- टंट्या भील का वास्तविक नाम क्या था? टण्ड्रा, टांटिया
- मध्य प्रदेश जनजातीय संग्रहालय किस शहर में स्थित है? भोपाल
- आकांक्षा योजना किससे संबंधित है? अनुसूचित जनजाति के छात्रों के लिए प्रतियोगी परीक्षा हेतु कोचिंग

2019

- मानव सभ्यता के विकास की कहानी को दर्शाने वाला देश का सबसे बड़ा संग्रहालय, जिसे इंदिरा गांधी मानव संग्रहालय के नाम से भी जाना जाता है, कहाँ स्थित है? भोपाल
- काठी क्या है? लोक नृत्य

2018

- मध्य प्रदेश के किस जिले में जनजातीय जनसंख्या का प्रतिशत सर्वाधिक है? अलीराजपुर

2016

- रानी दुर्गावती ने मध्य प्रदेश के किस क्षेत्र पर शासन किया? गोंडवाना
- सेंधवा में आदिवासी आंदोलन किसके नेतृत्व में हुआ? भीमा नायक
- भील जनजाति की जनसंख्या सबसे अधिक कहाँ है? मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

अभ्यास हेतु प्रश्न

- निम्नलिखित में से कौन सा/से गोंडों का उपसमूह है/हैं?
A. अगरिया B. प्रधानों C. ओझा D. उपर्युक्त सभी
- पिथोरा चित्रकला निम्नलिखित में से किस जनजाति की विश्व प्रसिद्ध लोक चित्रकला है?
A. गोंड B. भील C. बैगा D. इनमें से कोई नहीं
- निम्नलिखित में से कौन सी जनजाति पांडा के नाम से भी जानी जाती है?
A. गोंड B. भील C. बैगा D. पारधी
- राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग का गठन कब किया गया था?
A. 2004 B. 2005 C. 2006 D. 2007
- निम्नलिखित में से कौन सी जनजाति कबीर-पंथ का पालन करती है और स्वयं को कबीरा कहती है।
A. गोंड B. भील C. बैगा D. पनिका
- निम्नलिखित में से कौन सी जनजाति 'लोहासुर' को अपने देवता के रूप में पूजती है?
A. भील B. कोरकू C. अगरिया D. गोंड
- मध्य प्रदेश के किस जिले में रानी दुर्गावती संग्रहालय स्थित है?
A. दमोह B. जबलपुर C. नरसिंहपुर D. मंडला
- मध्य प्रदेश के किस जिले में अधिकतम अनुसूचित जनजाति प्रतिशत जनसंख्या है?
A. आलीराजपुर B. झाबुआ C. बड़वानी D. भिंड
- भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार निम्नलिखित में से कौन सी जनजाति सबसे अधिक जनसंख्या वाली है?
A. भील B. कोरकू C. अगरिया D. गोंड
- रसनवा त्यौहार निम्नलिखित में से किस जनजाति से संबंधित है?
A. गोंड B. भील C. कोल D. बैगा
- वर्तमान में कितने राज्यों में अनुसूचित क्षेत्र हैं?
A. 8 B. 9 C. 10 D. 11

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

12. यदि किसी विशेष क्षेत्र को भारत के संविधान की पांचवीं अनुसूची के अंतर्गत लाया जाता है, तो निम्नलिखित में से कौन सा कथन इसके परिणाम को दर्शाता है?
- A. इससे आदिवासी लोगों की ज़मीन गैर-आदिवासी लोगों को हस्तांतरित होने से रोका जा सकेगा।
B. इससे उस क्षेत्र में एक स्थानीय स्वशासी निकाय बनेगा।
C. इससे वह क्षेत्र केंद्र शासित प्रदेश बन जाएगा।
D. ऐसे क्षेत्र वाले राज्य को विशेष श्रेणी का राज्य घोषित किया जाएगा।
13. निम्नलिखित में से कौन सी जनजाति मध्य प्रदेश से संबंधित नहीं है?
- A. भील B. बैगा C. गोंड D. जारवा
14. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
- पेमा फाल्गा का जन्म झाबुआ जिले में हुआ था।
 - उन्हें 2017 में मध्य प्रदेश सरकार द्वारा शिखर सम्मान से सम्मानित किया गया था।
- उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही नहीं है/हैं?
- A. केवल 1 B. केवल 2 C. 1 और 2 दोनों D. न तो 1 और न ही 2
15. रामायण में निम्नलिखित में से किस जनजाति का उल्लेख है?
- A. गोंड B. कोल C. भील D. उपर्युक्त सभी
16. हाल ही में किस राज्य के आदिवासी समुदाय ने 'भील प्रदेश' नाम से एक नए राज्य के निर्माण का आह्वान किया है?
- A. मध्य प्रदेश B. राजस्थान C. महाराष्ट्र D. गुजरात
17. निम्नलिखित में से कौन सी जनजाति "आदिविचंकर" के नाम से भी जानी जाती है?
- A. भील B. बैगा C. गोंड D. पारधी
18. गोंड जनजाति के पुरोहित को कहा जाता है ?
- A. वेवत B. ओझा C. देवारी D. उपरोक्त में से कोई नहीं
19. पथरिया, रूमा, बोंबई और दुलारिया ये सभी मध्य प्रदेश की निम्नलिखित जनजातियों में से किसकी उप-जनजाति हैं?
- A. भील B. गोंड C. पथरिया D. कोरकू
20. राज्य विधानसभाओं में अनुसूचित जनजातियों के लिए सीटों का आरक्षण निम्नलिखित में से किस अनुच्छेद के तहत प्रदान किया गया है?
- A. अनुच्छेद-330 B. अनुच्छेद-332 C. अनुच्छेद-334 D. अनुच्छेद-371
21. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें
- गदली नृत्य कोरकू महिलाओं द्वारा विवाह समारोह के दौरान किया जाने वाला एक प्रसिद्ध नृत्य है।
 - डंडा नृत्य एक पुरुष प्रधान नृत्य है जो त्योहारों के दौरान किया जाता है।

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है

- A. 1 और 2 B. केवल 1 C. केवल 2 D. उपरोक्त से कोई नहीं

22. इस्लाम अपनाने वाले भीलों को क्या कहा जाता है?

- A. भिलाला B. फाल्या C. तड़वी D. भील

23. वान्या प्रकाशन की स्थापना किस वर्ष की गई थी?

- A. 1980 B. 1982 C. 1985 D. 1986

24. बैगा जनजाति के ग्राम प्रधान को कहा जाता है?

- A. मुकद्दम B. कोटवार C. दीवान D. समरथ

25. निम्नलिखित में से किसे विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (PVTGs) की पहचान करने के लिए मानदंड नहीं माना जाता है?

1. गरीबी
2. साक्षरता का निम्न स्तर
3. आर्थिक पिछड़ापन
4. रोज़गार दर

- A. 1 और 2 B. 2, 3 और 4 C. 1 और 4 D. उपरोक्त से कोई नहीं

26. भीमा नायक मध्य प्रदेश की निम्नलिखित में से किस जनजाति से संबंधित हैं?

- A. गोंड B. कोल C. भील D. उपरोक्त में से कोई नहीं

27. निम्नलिखित में से कौन सा राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग का कार्य नहीं है?

- A. अनुसूचित जनजातियों के अधिकारों से संबंधित शिकायतों की जांच करना
B. जनजातियों के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए केंद्र सरकार को सलाह देना
C. वन क्षेत्रों में रहने वाली अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लघु वन उपज अधिकार सुनिश्चित करना
D. पेसा अधिनियम, 1996 का पूर्ण कार्यान्वयन सुनिश्चित करना

28. मध्य प्रदेश राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग के पास निम्नलिखित में से कौन सी शक्ति नहीं है?

- A. किसी व्यक्ति के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई करना।
B. सिविल कोर्ट की शक्ति
C. किसी भी व्यक्ति को समन जारी करना।
D. दस्तावेज़ प्रस्तुत करना

29. किस संवैधानिक संशोधन द्वारा अनुसूचित जनजातियों के लिए एक अलग राष्ट्रीय आयोग के गठन का प्रावधान किया गया?

- A. 89th B. 90th C. 65th D. 81st

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

30. निम्नलिखित में से कौन सा मध्य प्रदेश राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग का कार्य है।
A. राज्य सरकार को जनजातीय मामलों की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करना।
B. जनजातियों के अधिकारों के उल्लंघन की स्थिति की जांच करना।
C. जनजातियों को प्राप्त संवैधानिक संरक्षण की समीक्षा करना।
D. उपर्युक्त सभी।
31. अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम निम्नलिखित में से किस वर्ष आया?
A. 2001 B. 1999 C. 2019 D. 2006
32. पिथौरा कलाकारों को क्या कहा जाता है?
A. अक्षन्द्रा B. लिखंदरा C. पिथंद्रा D. उपर्युक्त में से कोई नहीं
33. मध्य प्रदेश का कौन सा जिला गोंड कला चित्रकला का सबसे लोकप्रिय केंद्र है?
A. डिंडोरी B. सतना C. इंदौर D. आलीराजपुर
34. निम्नलिखित में से कौन सी जनजाति मध्य प्रदेश के बैतूल, छिंदवाड़ा, खंडवा और खरगोन जिलों में पाई जाती है?
A. अगरिया B. कोल C. कोरकू D. भारिया
35. भदम, सैतम, सैला और अहिराई मध्य प्रदेश की निम्नलिखित में से किस जनजाति के पारंपरिक नृत्य रूप हैं?
A. बैगा B. कोल C. भील D. भारिया
36. भगोरिया महोत्सव मध्य प्रदेश के निम्नलिखित में से किस जिले में मनाया जाता है?
A. आलीराजपुर B. अगर मालवा C. झाबुआ D. उपर्युक्त सभी
37. शंकर शाह ने ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व निम्नलिखित में से किस स्थान पर किया था?
A. इंदौर B. जबलपुर C. ग्वालियर D. रतलाम
38. राजा शंकर शाह विश्वविद्यालय कहाँ स्थापित किया गया है?
A. जबलपुर B. मंडला C. छिंदवाड़ा D. दमोह
39. भीमा नायक निम्नलिखित में से किस स्थान के निवासी थे?
A. बड़वानी B. झाबुआ C. आलीराजपुर D. उपरोक्त में से कोई नहीं
40. टांटिया भील (या टांटिया मामा) को कब फांसी की सजा सुनाई गई थी?
A. 19 अक्टूबर 1886 B. 19 अक्टूबर 1899 C. 19 अक्टूबर 1879 D. 19 अक्टूबर 1889

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

41. मध्य प्रदेश सरकार ने पेमा फात्या शिखर सम्मान से सम्मानित किया?
A. 1999 B. 1986 C. 1997 D. 1968
42. निम्नलिखित में से किस फ़ारसी स्रोत में रानी दुर्गावती का उल्लेख है?
A. तबकात-ए नासिर B. तारिक-ए-हिन्द C. तारीख-ए-फ़रिश्ता D. A और B दोनों
43. निम्नलिखित में से कौन से पहले गोंड कलाकार थे जिन्होंने अपने चित्रों के लिए कागज और कैनवास का उपयोग किया?
A. जनगढ़ सिंह श्याम B. ननकुसिया बाई C. दुर्गाबाई व्याम D. भज्जू श्याम
44. भूरी बाई मध्य प्रदेश के किस जिले से सम्बंधित है?
A. रतलाम B. सीहोर C. मंडला D. झाबुआ
45. श्री बादल भोई राज्य जनजातीय संग्रहालय कहाँ स्थित है?
A. भोपाल B. छिंदवाड़ा C. उज्जैन D. देवास
46. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय कहाँ स्थित है?
A. अमरकंटक B. इंदौर C. पचमढ़ी D. उपरोक्त में से कोई नहीं
47. जोधिया बाई बैगा को निम्नलिखित में से कौन सा पुरस्कार मिला?
A. नारी शक्ति B. पद्म श्री पुरस्कार C. पद्म विभूषण D. A और B दोनों
48. निम्नलिखित में से किस ब्रिटिश अधिकारी ने खाज्या नाइक की हत्या की थी?
A. जनरल स्लेमन B. मेजर इवांस C. कॉलिन कैम्पबेल D. इनमें से कोई नहीं
49. राजकुमार कुंवर चैन सिंह ब्रिटिश अधिकारियों के खिलाफ लड़ते हुए शहीद हो गए?
A. मैडॉक B. चार्ल्स राल्फ़ C. चार्ल्स कूट D. विलिंगटन
50. सहरिया संग्रहालय कहाँ स्थित है?
A. शाहडोल B. श्योपुर C. सिवनी D. सिंगरौली

मध्य प्रदेश की जनजातियाँ

उत्तर कुंजी

1	D	19	D	37	B
2	B	20	B	38	C
3	C	21	A	39	A
4	A	22	C	40	D
5	D	23	A	41	B
6	C	24	A	42	C
7	B	25	C	43	A
8	A	26	C	44	D
9	A	27	C	45	B
10	D	28	A	46	A
11	C	29	A	47	D
12	A	30	D	48	B
13	D	31	D	49	A
14	B	32	B	50	B
15	D	33	A		
16	B	34	C		
17	D	35	D		
18	C	36	D		